एक जिद्दी लडकी

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
नयी दिल्ली
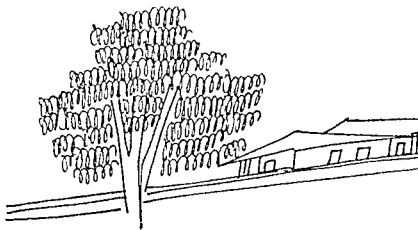
एक जिद्दी लड़की

मूल विजय तेंदुलकर

अनुवाद डॉ० विजय बापट

एक जिद्दी लड़की

पात्र

स्त्री पात्र	पुरुष पात्र
जमुना	दद्दा (दादा)
कमला (कम्मो)	जगन्नाथ
मीनाक्षी	वीरू
	कक्का (काका)
	लक्ष्मीकान्त
	आदमी १
	आदमी २

अंक एक

१

[मध्यवर्गीय परिवार का मकान । बाहर जान-आने के दरवाजे पर वदन वार। अलावा रसोई का खुला दरवाजा तथा एक और कमरे का दरवाजा जो अदर से बद है। कमरे में गुरु महाराज की दो तस्वीरें हैं। एक ओर राम पचायत की तस्वीर। गुरु महाराज की दोनो तस्वीरो पर ताजे हार पहनाए गए है। अगरबत्ती जल रही है।

एक कोने मे धर्मादाय पेटी। एक स्टूल पर ध्यानस्थ भगवान बुद्ध की मूर्ति। शेप सब मध्यवर्गीय परिवार जैसा ही। कमर मे टवल के करीब वीरू उम्र करीवन सोलह, आखो पर चश्मा—पढाई कर रहा है। पास ही कमला—उम्र उसम एक साल ज्यादा। उसका छोटा भाई—मुन्नू—उम्र कुछ महीने ही गोद मे लिए खिला रही है, प्यार कर रही है अजीब अजीब आवाज करती हुई पुचकार रही है।]

कमला वीरू—ऐ वीरू—अभी तक उठे भी नही। ओ वीरू

वीरू कौन ?

कमला और कौन ? वे—दोनो भैया और भाभी। सुबह के आठ बज रहे है, आठ।

वीरू तो उसमे इतना 'वो'-करने की क्या जरूरत है ? यहा मेरी पढाई ठप्प हुई जा रही है। शादी और

आने-जाने मे तीन दिन बर्बाद हो गए और अब यहा फिर वही रोना

कमला (मुन्नू से तुतलाते हुए, खिलाते खिलाते) त्या जाने हम त्या पढाई होगी। है न रे मुन्नू ?

बीरू तुम क्या जानो पढाई वढाई ? मैट्रिक के इम्तहान मे कापी के अदर लव-लेटर लिख आई थी तुम सुना है मैंने सब कुछ दद्दा अम्मा से कह रहे थे। स्कूल से छुट्टी कर दी तुम्हारी। यहा कौन लव-लेटर लिखना है पेपर मे।

कमला उसे भी अक्ल लगती है जनाब। (मुन्नू को खिलाते हुए) है न रे मुन्नू ?

बीरू हा—किसी के साथ भाग जाने मे भी अक्ल तो लगती ही होगी। (चिढाते हुए) है न रे मुन्नू ?

कमला तुम चुप बैठो जी।

बीरू मैं तो चुप ही था। तुम खुद बतियाने लगी। रोजाना सुबह से बस यही तो होता रहता है। पढाई के वक्त अम्मा या दद्दा काम खोल दगे या फिर तुम लोग हगामा शुरू कर दोगे। कुछ नही तो दद्दा की तलाश बरकरार। अब तो सच उबकाई आने लगी रटे-रटे जवाबो से गनीमत है कि छोटू और लता का स्कूल सुबह का है—नहीं तो तुम लोगों के साथ उनका हगामा—जुतम-पाव।

कमला दद्दा के लिए इस तरह बोलते हो ? दद्दा से कह दूगी।

बीरू वही भाई उनकी असिस्टेंट। उनके साथ हा जी-हां जी करती रहती हो न

(इसी वक्त दद्दा और उनके साथ एक आदमी। दोनो बाते करते हुए आते है। कमला और बीरू हडबडाकर चुप लगा जाते है और एक ओर हट जाते हैं। उस आदमी के ललाट पर दोनो भौंहो के बीच सिंदूर का टीका है। सिर पर कश्मीरी टोपी, बदन पर तग गले का लम्बा कोट, नीचे धोती और पावो मे स्लीपस। चेहरे पर उत्कट भाव।

दादा दुबले पतले। छोटी छोटी मूछे। दाढी के काले सफेद ठूट। नाक पर काडी वाला चश्मा। चेहरा सख्त। बदन पर टूटे बटन वाला कोट।)

दद्दा (आकर) हा—तो मतलब यही कि मन वचन कम तीनो तरह से जो ब्रह्म समझता है—वही भक्त है। क्या समझे? आओ आओ—ऐसे बैठो। सुघनी करो इधर जैसी कथनी वैसी करनी देह तक को भूल बैठना—देह—देह—देह—नही। ब्रह्म है—परमेश्वर अनत है। बस इसी तरह ब्रह्ममय, एक रूप होकर तदरूप हो जाना बस यही समझो कि सभी सिद्धियो की एकमात्र सिद्धि यही है। क्या समझे? हरीओम ततसत बैठिए। यह है हमारा आश्रम। हा—अब गृहस्थाश्रम कहिए या वानप्रस्थाश्रम कह लीजिए। गृहस्थाश्रम से वान प्रस्थआश्रम कबीर ने कहा ही है

यही है ब्रह्म का ओफिस। आजकल तो घाट मे ही

पत्रिका चल रही है—पर उसका काय है वही पूरा करेगा आगे और भी कई योजनाए हैं परमात्मा की कृपा से जो होगा वही सत्य है। जय गुरु ब्रह्म। आप जसे परमभक्त की उदारता और पुरखो के पुण्य कम पर सब काम ठीक ठाक चल रहा है। हा—अब अक देर सबेर निकलते रहते है पर हम निकालने वाले कौन है? हम निकालते ह इस तरह कहना भी मिथ्या अहकार है।

आदमी (सम पकडने के अदाज मे) वह निकालने वाला। (हाथ ऊपर की ओर)

दद्दा वाह क्या मन की बात बोले हो तुम्हारे मुह मे घी शक्कर। (कमला से) कमला—देखो ये है अपने शर्मा जी

आदमी रामकृष्ण शर्मा—

दद्दा हा हा वही वही—अब राम क्या कृष्ण क्या—सभी एक ही ब्रह्म के रूप ह। ब्रह्माचाय गुरु महाराज के मठ मे ईश्वर इच्छा से मुलाकात हुई। परिचय हुआ। ये है कमला। हमारी ईश्वरी इच्छा नबर दो। वे सुपुत्र—कृपा नबर तीन। और भी तीन कृपा हैं—सबसे छोटी वह रही गोद मे—

आदमी (यू ही भक्तिपूण मुद्रा से) वाह वाह! बडी कृपा है आप पर।

दद्दा फूल न हो तो फूलो की पखुडी ही सही वह वहा पेटी रखी है ब्रह्म के हितचितक देते ह—जो कुछ श्रद्धा हो कम से कम चार आने तो सही। अब चार आने क्या और चार सौ रुपये क्या

यहा भद भाव है हो नही। वही सब कुछ है देने वाने वही सब कुछ देते है लेने वाले वही से ले लेते है जो मिले वही सही। इसी मे सतोष कर कृपावान नया अक निकाल दते हैं। और हम करने वाले कौन होते है ? क्या समझे ?

आदमी वह कर्ता धर्ता। (एक ओर जेब टटालकर पाच का एक नोट हाथ लग जाता है वही पेटी मे डाल देता है। दद्दा देखकर भी अनदेखा सा करते हैं।) हा एक दो अक देखने को मिल जाते तो ब्रह्मा के

दद्दा अरे कमला सुनो—प्रेस तक दौडकर जाओ और ब्रह्मा के चार अक ले आओ समझी

आदमी प्रेस पर ? मतलब काफी दूर जाना पडेगा । रहने भी दीजिए—वैसे ही कहा फिर देख लेंगे वैसे पढने का शौक हम लोगो मे है ही नही।

दद्दा अच्छा कमला रहने दो—

आदमी आपसे मिलकर परम आनद हुआ। आपकी बातो से आत्मिक शाति मिली। आपकी साधना बडी है हम लोग तो कूडा-करकट हैं। पर हा जैसे बना को है सेवा। जरा उस झझट से छूट जाऊ फिर और भी करेंगे क्या ? बस आप तो बताते चलिए (गुरु महाराज की तस्वीर की ओर सकेत) आपकी कृपा है इसलिए बडा परेशान हू—रास्ता नजर नही आता।

दद्दा अवश्य अवश्य कृपा क्या है अपना ऐसा ही। बताते रहेगे जैसी आज्ञा होगी आते रहेगे हा पर एक बात है सेवा अखड हानी चाहिए

आदमी हा हा सो तो है ही—अच्छा जय गुरु महाराज।

दद्दा जय गुरु महाराज।

(आदमी भक्तिपूर्ण मुद्रा से ही वार बार नमस्कार करते हुए जाता है।)

दद्दा उल्लू के पट्ठो क्या हगामा मचा रखा था यहा वह आया तब ? ऐं ? क्यू वे बीरू ? क्यू री कम्मो ? अरे यह आश्रम है या असेंबली ? अरे आने वाले क्या कहेगे तुम लोगो की ऐसी हरकतें देखकर ? ऐ ? हजार बार कहा अरे भाई कुछ तो तमीज रखो पर सुनता कौन है ? देश मे वही और घर मे भी वही—साला मछली बाजार मचा रखा है। (शट निकालकर कील पर टागते हुए।) कमला! अदर जाकर एक एक्स्ट्रा स्ट्राग चाय के लिए कहो—और सुनो—नहाने के लिए पानी निकालो। आज वक्त मिला है तो नहा लूगा। (बीरू से) क्यो—क्या कहनी है तुम्हारी पढाई-लिखाई ? पढाई हो रही है या ढोगबाजी ? पहला नबर आना चाहिए। कमबख्त ज्ञान का बडा महत्व है। (कमला से) और हमारे मुन्नू क्या कहते हैं।

कमला (मुन्नू को उनके करीब लाते हुए) हम तो दूध पीते है औल लोते लअते हैं—है न रे मुन्नू ?

दद्दा वह क्यो मना करने चला ? इस घर मे और लोग करते ही क्या हैं। जितना मिले ठूसकर फिर मुह बाए रहते हैं। फीस दो—कपडे बनाओ, किराया दो—साडिया लो—हजामत के लिए चाहिए, दूध वाले को दो पिछले सत्ताईस साल से यही तो

चल रहा है कभी रुका ही नही। पैसा पैसा जोड-कर कमवरत सिर के वाल झड गए पर तुम लागो की रट खत्म नही होती हनुमान की पूछ की तरह बढतो ही जाती है। अभी यह लोग अदर ही है ? और तुम पगली कही की यहा क्या कर रही हो ? चली जाओ अदर। सात पैंतीस। वस शादी होते ही कान लवे हो जाते है यही इन लोगो का ख्याल रहता है। तमीज को एकदम छुट्टी। (तस्वीर की ओर देखते हुए) अब यह एक नया खर्चा सिर पर आ पडा—वे दोनो उधर वाले गुरु महाराज कडम हो गए निकालकर दूसरे चिपकाने पडेगे। इन गुरु महाराजो का भी कुछ ठीक नही सिनेमा की एक्ट्रेसो की तरह आज है तो कल नही। (वीरु की पढाई कुछ रुक जाती है उसे देखकर) तुम क्यो सुन रहे हो ? पढाई करो अपनी। (ध्यान आते ही) और कम्मो तुम अभी यही खडी हो ?

कमला अम्मा ने चाय रख दी है। पानी अभी गरम नही हुआ। पर दद्दा इतनी सुबह आप कहा गए थे ?

दद्दा गया था जुहन्नुम मे पचास वार कहा है कि टोका न करो पर तुम लोगो के कान पर जू तक नही रेंगती।

कमला गलती हुई।

दद्दा और होगा भी क्या तुमसे वहा वह मिल गया गुरु के पाव पकडने आया था। मुह से शराब की बदबू आ रही थी। उलझन मे फसा हुआ है—गुरु महाराज की कृपा से देखे कुछ हो जाय तो—

भक्तिमाग समझाते-समझाते साने तीन घट खराब हो गए। मतलब समझाते-समझाते मैं खुद ही तल्लीन हो गया भक्तिमाग है ही ऐसा ।

कमला पर दादा आप उन्हें कौनसी पत्रिका के बारे मे बतला रहे थे ?

दादा अरे भाई ब्रह्मा नाम की भक्ति वाली पत्रिका के बारे मे कह रहा था।

बीरू है कहा पत्रिका ?

दद्दा गधे कही के—पत्रिका न हो—मैं तो हू—फिर ? और तुम्हे पचायत से क्या मतलब ? कुछ भी न मागने पर भी देने वाली एक ही चीज है इस घर मे—इतने सालो मे एक यही काम आ रही है। अनाथ बालकाश्रम से लेकर देवालय जीर्णोद्धार समिति तक—दुनियादारी से लेकर भक्तिमार्ग ब्रह्मा पत्रिका—सारा ब्रह्माड साला इसमे रखा हुआ है। लो—दो जाकर अपनी अम्मा को—और क्यू री गडे कित्ते तैयार किए ? यत्र सुख-सचारक ? स्टाक खत्म है समझो ? और मेरे यहा कोई आया था, कोई सदेश ? पूछताछ ? क्यू रे बीरू ? कम्मो ?

बीरू पुलिसमैन आया था। वही रोजाना आता है वही ।

दद्दा पुलिसमैन ? क्या बताया उसे ?

बीरू मैंने नही इसी ने बताया—

कमला दादा—वही जो आपने बताया था—खेती के काम से गाव गए है—कब आएगे पता नही।

दद्दा बहुत अच्छे—बहुत गच्छे । अपनी भी खेती ही तो चल रही है। अच्छे खासे लोगो को जोतकर पैसा ही तो पैदा किया जा रहा है। तभी तो मैं सोच रहा था कि वह सुबह जरूर आएगा—पुलिसमैन। कल रात देरी से आया उसी का मतलब यह है आज सुबह भी आएगा। मतलब अब दिन भर की छुट्टी हुई। कम्मो—वह जो मैंने अलमारी मे चरखे के नीचे एक खादी के कपडे मे कुछ कागज लपेट रखे है न उसे बिना पढे चूल्हे मे डाल आओ—क्या समझी ? और देखना उसे पता भी न लग पाए (कमला गर्दन हिलाती है।) किसे ?

कमला अम्मा को

दद्दा गधी कही की—(आवाज धीमी कर) तुम्हारी अम्मा को अब कौनसी बात जाननी रह गई है ? तुम्हारी भाभी को पता न चले—समझी ?

कमला पर दादा उसे तो पता चल ही जाएगा।

दद्दा बाद मे भले ही चलता रहे और कुछ कुछ पता चलते रहना चाहिए—एकदम पता चल जाए तो धक्का लगेगा—इधर इसानो के दिल साले कमजोर हो गए है न—जरा-सा धक्का लगा और हार्ट फेल। और एक तुम्हारी अम्मा है—उसे दिल भी है और इस बात का पता हमे कई सालो तक लग ही न पाया।

(जमुना दादा के लिए चाय ले आती है। चाय उसके हाथ से लेते हुए)

पाच रुपये ले लो—पेटी मे जमे हुए थे। (कमला

जमुना को नोट देती है।) कैसी क्या है वह ?

जमुना हा, ठीक ही है। कल से कुछ खाया ही नही है। कहती है भूख ही नही है। रात मे सब कुछ थाली मे छोड दिया था।

दद्दा शहर की फसल है—कुछ वक्त लगेगा—यहा घुलने मिलने मे

जमुना अब जरा अपनी लाडली कम्मो की शादी निबटा दीजिए तो सिर कुछ हल्का हो

दद्दा हा-हा वह भी हो जाएगी—अरी भागवान बाहर की बहू घर आ गई अब घर मे सब ठीक होता रहेगा—रास्ता साफ हो गया—अभी परेशानी की क्या बात है ?

जमुना अभी तक सो ही रहे है।

कमला दादा और हम जो बिस्तर पर देरी तक पड रहे तो ?

दद्दा वो मार पडेगी कि तबियत हरी हो जाएगी। समझती क्या हो अपने आप को—रानी एलिजा-बेथ—एक को कुछ आजादी दे दी—तो सभी मचलने लगे—अरी अर्ली टू बैड अर्ली टू राइज—जिसने कहा है वह क्या कमबख्त पागल था ? आज पच्चीस साल से जल्दी उठता हू तो ये दिन देखने को मिल रहे है। लग गई होगी नीद बहू की—पर इस जग्गू को कुछ तमीज है या नही ? तमीज सिखलाने सिखलाते हम तो मरे जा रहे हैं पर ये हैं कि पडे हैं आठ आठ बजे तक—कम्मो नहाने के लिए उबलता पानी नही चाहिए। पहले पानी की ओर देख और सुनो वह जो अलमारी

मे रखा है न उसे ले जाओ अपने साथ जैसे कहा वैसे ही समझी
श्री राम श्री राम—

जमुना क्या ले जा रही है मूख ?

दद्दा बस हो गई पूछताछ शुरू ? घर की छोडो वह बाहर क्या करती रहती है इसकी पूछताछ करो। हमसे पूछो तो वह लाखो मे एक है वहू के बारे मे कह रहा हू। रूप, गुण और तमीज एकदम वढिया फिर सौतेली मा की छाया मे पली हुई है इस वजह से मिलनसार भी है। जब मैंने देखी तभी जग्गू की ओर देखकर कहा—सोचो हो मत यही मौका है—मिलेगी नही ऐसी दूसरी—सारी बात मालूम हो उसके पहले ही उडा दो बार—क्या समझे ? आगे की आगे देखी जाएगी। बार को कोई खास बात टटोल रहे है। शहर मे एक शादी थी बस उसी दौरान बात जम गई। लेन देन कम्प्लीट। शादी का पूरा खर्चा निकल आया। (अखबार मे खास विज्ञापन मिल गया है—उसी पर नजर डालते हुए) हू—रसोई बनाने वाली चाहिए—कम्पेनियन चाहिए—मैकनिक चाहिए—मशीन बेचनी है—मैंस खो गई है—सलून बेचना है

(चट से उठकर टेबिल से लाल पैंसिल उठा लाते हैं—बैठकर अखबार के उस विज्ञापन पर निशान लगा देते है) सलून बेचना है

जमुना (कुछ हडबडाकर) बात क्या है आखिर—मैं भी

तो सुन

दद्दा हरिग्रोम—(उसी मे जम्हुग्राई) बात क्या होगी ? एक सौदा तय हो गया

जमुना ग्रौर सौदा ? कैसा सौदा ?

दद्दा (ग्रखबार मे ही नजर) खास रास्ते की जगह—चालू धधा—गुडविल के साथ बेचना है—ग्रजी जगह किसी की क्यो न हो—इसमे हमे क्या लेना-देना ? सीधे रकम ले लो ग्रौर चट से तुम लोगो के साथ मोटर मे बैठ लिया ।

जमुना पर कैसे ?

दद्दा मैं दूल्हे का पिता हू ग्राखिर तक वे जान ही न पाए । कपडे देखे—शादी मे पहने हुए— कोट ग्रौर नई धोती—सिर पर रेशमी टोपी—कपडे भले ही पुराने हो पर खूब फब रहे थे मुझ पर—चलो इस तरह नैया पार हो गई । खैर छोडो भी—तो वह मुझसे कहने लगा उस जमीन का काम कही तय हुग्रा या नही—तभी उसे हथिया लिया—एक ग्रोर खीचकर ले गया ग्रौर सौदा तय बस ! हा—वैसे लडकीवालो की ग्रोर का एक पहचान वाला जरूर था—क्या नाम उसका

(वीरू परेशान होकर किताब टेबल पर पटक कर बाहर चल देता है ।)

जमुना पर खुद के लडके की शादी मे ऐसी बात

दद्दा सिर्फ साट चार सौ दिए लडकीवालो ने—इससे खर्चा क्या पत्थर पूरा होगा ? गरीबी है—लडकी ग्रच्छी है—तिस पर हम लोगो की हालत भी कौन खास है—मतलब माली हालत—इसी वजह

म साढे चार सौ पर राजी हो लिए—पर एक बात जरूर है—शादी करने से तो सर्कस चलाना बेहतर है। इसे पूछो—उसे पूछो—खामखाह की झझट—फिर पहले बहू ठहरी—चार गहने चाहिए ही। साडिया चाहिए ही—इस तरह कही काम चलता है ?

जमुना और हम थे कि शकर-पावती की तरह बने रहे—

दद्दा तो कौन तीर मार दिया ? हम लोगो ने ही ता तुम्हे पसद किया। तब तो धधा चला चला था—अनुभव के नाम पर सिर्फ तुम्हारे हाथ मे सोने की चूडिया पडने के स्थान पर साली हमारे हाथ मे हथकडिया पडने की नौबत आ गई थी—सो कहा के गहने और क्या—फिर बाद मे तो सब कुछ मिल गया न ? बस पडोस मे आखे खोलकर तो देखो जरा

जमुना तो मैं व हा कुछ कहू हू—

दद्दा हा, तो आज सुनार के यहा चली जाओ और बहू के लिए कुछ गहने वहने बनवा लो—क्या समझी ?

(कमला अदर से आती है)

कमला दादा—नहाने के लिए पानी निकाल दिया है।

दद्दा अच्छा किया—(जमुना से) और सुनो—नई-नवेली बहू है उस पर यू ही रौब न झाडना—जितना प्यार दोगी उतनी ही रमेगी—नही तो आदतन लगोगी तीन-पाच करने—तुम्हारी लाडली की शादी बकाया है—क्या समझी ?

जमुना मुह बद किए तो सारी जिदगी गुजार दी—तिस पर आपके ताने बाकी हैं

(अदर की ओर चली जाती है।)

दद्दा हा—अच्छा—स्नान। जरूरी काम है। (कमरे के बद दरवाजे की ओर देखते हुए) जग्गू कम वख्त अभी तक— (कमला की ओर देखकर) तुम क्या खडी हो यहा? भाभी से जरा मुह सभाल कर बोला करो—क्या समझी? जो बकवास लगाई तो—कुछ पूछ ही ले तो क्या कहोगी?

कमला (गाल फुलाकर) मुझमे अक्ल ही कहा है। कैसे समझू

दद्दा नान कमिटल। नरो वा कुजरो वा—अपना क्या नाम सो महाभारत टेकनीक। हा भी नही और ना भी नही। क्रास करने लगे तो कौनसी पौलसी?

कमला कौनसी?

दद्दा पा—पालसी। मतलब पागलो का बादशाह बनने वाली पालसी। अज्ञान—एक नही दो नही—मुह बाए ऊपर की ओर देखते रहना—कोट म बिल्कुल रामबाण पालिसी। उसी से तो साला दो बार बरी हो सका—और सुनो, नद बनकर टर्रबाजी की तो याद रखना। वह लडकी गरीब है—उसे सभाल लेना चाहिए। और ये जग्गू घोडा कही का अभी तक—खैर जाने दो—स्नान—वह जरूरी है।

(शभो हर हर कहते हुए अदर जाते है।

कमला अलमारी के अदर से पुराना वक्सा निकालती है—इधर उधर देख-दाखकर गले मे वधो चावी से वक्सा खोलती है—और अदर के नकली इयरिंग्ज, नकली नेकलेस, चूडिया—सव कुछ देखती है—फिर वक्से मे ही रख देती है। कुछ गुनगुनाती है। तभी वद दरवाजे की कुडी की आवाज होती है। कमला चपपट हडवडाकर वक्सा अदर कर देती है। दीवार से सटकर खडी हो जाती है—नजर दरवाजे की ओर)

जगन्नाथ (सिर्फ शब्द उभरते है) ठहरो न जरा

मीनाक्षी (सिफ शब्द उभरते हैं) ना—कितनी देरी हो गई—कैसे नीद लग गई पता नही—

(कमला अव वद पेटी को ताला लगाती है—अलमारी खोलकर अदर पेटी रख देती है—विना आवाज किए—दीवार से सटकर चुपचाप खडी हो लेती है। दरवाजा खुलता है।

साडी पहने मीनाक्षी—प्रसन्न—उलझे वाल। चेहरे पर खुशी वाहर आकर वाल सवारती है—अधखुली आखो से इधर-उधर दखती है।

अगरवत्ती की सुगध—नए ताजे हार—मीनाक्षी खिल जाती है।
(वह लबी सास लेती है।)

जमुना (कमरे से झाककर) ए

मीनाक्षी ऊ हू—अब चलती हू। दिन कितना चढ आया है।

जगन्नाथ (मिचमिचाई आखो मे दिन कितना निकल आया—देखता है।) इस दिन को भी—साले को इत्ते जल्दी चढने की बुरी आदत है। हू ! अभी तो रात थी और—(अगडाई लेता है) और दादा की चीख-पुकार—एक बार सूरज नही निकलेगा—पर दादा की गालिया सारे घर वालो के लिए शुरू हो जाती हैं। (जम्हुआई लेता है।) कहा चले गए ? या फिर—(कील पर शट टोपी देखकर) नही यही हैं। हम लोग जब छोटे थे तब ऐसे ही सुबह देखे तो दादा—(होश मे आकर) कुछ नही—गाव गाव चल देते थे। (हडबडाया सा इधर-उधर और उसकी ओर देखता है। वह रामपचायत की ओर पीठ किए खडी रहती है।) पसद आई तस्वीर ?

मीनाक्षी बडी मजेदार बात है—नही ? हमारे घर मे भी इस तरह की तस्वीर है। बिल्कुल हूबहू इसी तरह की—दालान मे बाबूजी की बैठक के सामने लगाई थी—उन्हें हमेशा दीखती रहे—इसी वजह से—एक बार खेल खेल मे मेरे हाथ से टूट गई—तो ऐसी मार पडी—अभी भी पीठ पर निशान हैं—वे हमेशा ताकीद किया करते थे—उस तस्वीर को कोई न छूए—सच पूछो तो मैंने जान-बूझकर तोड दी थी।

जमुना जान-बूझकर ?

मीनाक्षी और मार भी खूब खाई—बिना राए हो—

जमुना हमारे दादा को तो मारने के लिए वक्त ही न मिलता था। बस उनका तो मुह चलता रहता था। पर रौब ऐसा कि चिल्लाते ही हमारी सिटी-पिटी वद। घर मे किसी की हिम्मत हो न थी—जो कोई जवाब दे दे—अम्मा तक का यही हाल था। मेरी हालत तो आज तक वैसी ही है—उनके आगे खडे होने की हिम्मत ही नही होती। साला जम ही नही पाता। (मीनाक्षी होठो मे ही हसती है) ए—वाकई तुम कितनी मीठी हसती हो—(करीब बढता है)

मीनाक्षी ना—कोई देख लेता (एक ओर हटती है) फिर वही बातें सुननी पडेंगी।

जगन्नाथ उल्लू के पट्ठो—गधो—ये तो दादा के लाडले सबोधन है। गधे कही के सच बात कहने के लिए किसने कहा था ? उल्लू के पटठे फिर सच बोल (जीभ चबाता है) झूठ बोलने पर कहा करते थे—

मीनाक्षी झूठ बोलने की चिढ न तो हमारे बाबूजी की देखते आप। लाल-लाल आखे कर लिया करते थे—कहते—जो चाहे सो करो। पर जो झूठ बोले तो—आखिर झूठ बोलते ही क्यू हो ? दगा किसे देना चाहते हो—बताओ किसे—

जगन्नाथ (हडबडाकर) किसे ? मैं किसे दगा दे रहा हू।

मीनाक्षी आपसे नही कह रही हू—बाबूजी की बातें बता रही हू।

जमुना (राहत की सास लेकर) अच्छा।

जगन्नाथ कम्मो—फिर तुम यही खडी हो—हमारी बाते सुन रही थी तुम ?

कमला कहा सुन रही हू ?

जगन्नाथ फिर वहा खडी-खडी क्या कर रही थी ?

कमला दादा ने कहा है—कोई आ जावे तो जवाब देने के लिए खडी थी।

जमुना चल हट। तुम्हें कौन आज से जानता हू ? क्यू बेकार बातें हाकती हो—चोरी से तुम बातें नही सुन रही थी ?

कमला अच्छा जाओ सुन रही थी—फिर ? तुम लोग यहा किसलिए बाते किए जा रहे थे ? अगर यही इच्छा थी कि तुम्हारी बाते कोई न सुने तो अपने कमरे मे ही कर ली होती बात—तुम्हारा कमरा है तो अलग—हमसे छीनकर तुमको दे दिया है न दादा ने—शादी हुई इसलिए—

जमुना फिर इस तरह कभी खडी रही—देख लूगा—

कमला हा-हा खडी रहूगी—देखू क्या करोगे। हिम्मत हो मोनी दादा की गैंग से मुकाबला करो—मुझे क्यो धमकाते हो ? वहा तो चट पूछ दबा लेते हो—तुम और तुम्हारे बदर—नाके वाले। लडकियो क आगे शेर बने फिरते हो—

जमुना कम्मो—बकवास बद—

कमला हा—करूगी—जाओ—

जमुना इसलिए कि अब मैंने उन हरकतो को बिल्कुल बद कर दिया है।

कमला (अचरज से ठोडी पर उगली रखकर) भया—

जमुना हा—कही काम-धधा देख लूगा—आखिर आज

से ही शुरू करनी है—

कमला क्या कह रहे हो भैया तुम ?

जमुना मट्रिक तक पढा हू—कही मामूली नौकरी तो मिल ही जाएगी—और नौकरी मिलते ही मैं अलग रहूगा—

कमला तुम ?

जमुना हा—म। क्यो ? कम्मो मुझे इस घर की शम आती है—यहा के सब लोग—

कमला तबियत तो ठीक है न भैया तुम्हारी ?

जगन्नाथ हा बिल्कुल ठीक है—तभी तो तय किया है—वह बहुत अच्छी है कम्मो बहुत अच्छी—

कमला कौन ?

जमुना वह री—

कमला और हम सब कूडाकरकट—तुम्हे छोडकर—रे ?

जगन्नाथ देखो कौन—मेरे बीच आई तो ठीक न होगा।

कमला दखू तो क्या कर लोगे ? और तुम्हारे बीच मे क्यो मुझे क्या लेना देना ?

जमुना उससे कुछ कहा ता देखना ? दादा क्या करते ह—हमारे बारे मे—अपने सभी के बारे मे—इस घर के बारे मे—

कमला पर भैया इसी घर पर रहेगी न वे ? फिर तो उह पता चल ही जाएगा—बात छुपेगी कसे—(अजीब तरह से तालिया बजाते हुए)
अब बोलो भैया—?

जमुना कम्मो बकवास बद। मैं अलग रहने लगू तब भले ही उसे पता चल जाए। फिर कुछ न होगा—और फिर तो कुछ भी होता रह—कम से-कम

मेरी हालत तो तब तक ठीक हो जाएगी—

कमला दो दिन मे ही बडे तबदील हो गए हो भैया—

जमुना हा—कम्मो—वाक़ई सुख क्या होता हे—पहली वार ही जान पाया हू। मुझे वह खूब अच्छी लगती हे—उसमे ऐसा कुछ है ऐसा कुछ हे—खव अच्छी लगता है—

कमला हू—हू।

जमुना कम्मो प्लीज उससे कुछ न कहना—सच कहता हू—उसे इन वातो से बेहद तकलीफ होगी कम्मो—मैं नही जानता फिर क्या होगा ?

कमला में तो नही कहूगी—पर दादा की बाते कौन कहे ? उनकी बाते तो पूरी तौर पर चालू है—तुम्हे नही मालूम भैया—तुम्हारी शादी मे—मडवे मे ही उन्होने—

जमुना क्या किया ?

कमला वही जो—हमेशा वाला काम—(अजीब तरह से हसती है)।

जमुना क्या कह रही हो।

कमला अब मैंने कौन खुद अपनी आखो से देखा है—पर वे ही अम्मा से कह रहे थे—वही मैंने कुछ-कुछ सुन लिया था। भाभी की ओर का कोई जान-पहचान वाला था—किसी के जमीन के पैसे ले लिए और अपने साथ मोटर मे आ बैठे—यही अपने दादा।

(फिर अजीब तरह से हसती है)

जमुना कम्मो तुम तो बेकार की बातें करती हो—

कमला ठीक है तुम समझा करो —

(दादा ओम नम शिवाय कहते हुए आते हैं। पहले अदर से बाहर की ओर भाकते ह फिर बाहर आ जाते है।)

दादा (एक ओर नम शिवाय चल ही रहा हे।) अब क्या चल रहा है ? यहा तुम लोग क्यो खडे हो ? भई जग्गू ? क्यू कम्मो ? हम तो मेहनत कर मरे जा रहे हैं—और तुम लोग हो कि गुलछर्रे उडा रहे हो। कम्मो कुछ काम वाम है या नही ? तुम्हारे भैया को कोई काम न हो पर तुम्हें तो है न ? अभी जो बात कही थी उसका क्या हुआ ? स्टाक खत्म हो चुका है। तमीज तो तुम लोगो मे नाम तक के लिए नही है। चारो ओर भ्रष्टा चार। एक हम और हमारे नदा जी दोनो चिल्ला रहे हैं। (कपडे पहनना शुरू करते हैं) गुरुदेव जय गुरुदेव। कम्मो आज स्नान हो ही गया है— सोचता हू लगे हाथ पूजा पाठ भी निबटा ही लू— पुराने सस्कार है—उनका ख्याल तो रखना ही चाहिए। अपने पुरखे क्या साले मूख थे ? कैसा अच्छा लगता है—पूजा पाठ करना ही चाहिए। एकदम ताजगी जा आ जाती है।

जमुना (साहस के साथ) दादा—

दादा (धोती पहनते हुए—ओम नम शिवाय चल ही रहा है) आपने पुकारा ?

कमला हाय राम। दादा आज भैया को 'आप' कह रहे हैं ?

दादा हा—शादी हो गई है न उनकी—अब बडे हो गए है वे—बीवा के आगे उन्हे तुम कहना अच्छा नही लगेगा—फिर भले हा दो पसे कमाने की अक्ल न हो—देरी तक सो तो सकते हैं—(ओम नम शिवाय चलता ही रहता है) ठीक है लगाओ खुराटें—जब तक हमारे हाथ पाव मे दम है तब तक ठीक है—घर मे बहू लाने की इच्छा थी सो ले आए—

जमुना दादा—मुझे आपसे कुछ बाते करनी है—

दादा कम्मो तुम पजा पाठ की तैयारी करो। यहा खडी क्या कर रही हो ?

(कमला कान इधर की ओर ही लगाकर बेमन से जाती है।)

(जगन्नाथ से) और सुनो जग्गू—घर मे कह दिया है—अपनी अम्मा से पैसे लो और बहू के लिए तीन चार साडिया ले आओ—गहनो के लिए उसे कहा ही है—वह ले जाएगी और बनवा लाएगी—वह काम भी एक बार हो जाए तो छुट्टी हो—साडिया जरा रगीन ही लाना गोरे रग पर फबती है—

जमुना दादा एक खास मामले पर आपसे बात करना चाहता हू—दादा मेरी शादी मे मडवे मे आपने—

दादा गर्मी थी न ? फिर ? शहर मे इतनी हीट थी—लडकी वाले विचारे क्या करेंगे—लडके वाले ऊल-जलूल बातें करते रहे—अब इस जमाने मे ठीक थोडे ही दीखते हैं—तिस पर अपनी हालत भी तो नाजुक ही थी—फिक्र ता यही थी कि

जैसे-तसे शादी हो पर तुम लोग इन बातो को क्या समझो ? तुम लोगो की बातें तो नाके वाली—

जमुना मैं दूसरी बात पूछ रहा हू दादा—आपने वहा क्या किया ? मेरी शादी के मडवे मे ?

दादा (ओम नम शिवाय ओर से कहते हुए) तुम अपनी शादी के बारे मे कह रहे हो ? क्यो ? क्या गलती हुई ? (पुकारते हुए) कम्मो—ए कम्मो—घर है या साला होटल ? इतनी देर से पुकार रहा हू पर एक आए तो कसम है—

जमुना दादा मेरी शादी के मडवे मे आपने क्या काम कर डाला ? वही हमेशा वाला ?

दादा (ओम नम शिवाय बद) खाली पीली बैठे हुए हो—और अपनी शादी पर हम लोगो पर हमला—ऐ ?

जमुना पर उस ओर के किसी आदमी को आपने—

दादा जग्गू तुम भी अजीब हो—सब साले ऐसे ही होते ह—फिर कही के लोग क्यू न हो—अभी अभी जो आया था—वैसे ही क्यू न हो—सब लटने के लिए ही तो होते हैं—इस दुनिया मे ढेर लोग हैं जो बेअक्ल और बेकार हैं—बस उनका यही उपयोग रह गया है—समझे ?

जमुना पर दादा उसके यहा पता चल जाए तो ?

दादा फिर तुम क्या समझते हो जिदगी भर पता ही न चलेगा ?

जमुना फिर भी उसे इसी वक्त—

दादा पता चल ही जाएगा । कोई बात हमेशा किसी से

छुपी नही रहनी वरखुरदार। क्यू वेकार की वात करते हो—? उसे मालूम हो जानेवाला है। (जग्गू अचक्चाकर वैठ जाता है।) जो हो उससे भी ज्यादा समझे ? गरज कि झूठ का पुछल्ला लगाए बगैर सच का हवाई जहाज साला उड नही पाता—

जमुना फिर मेरा तो घर-बार खत्म हो ही गया ?

दादा तुम जैसे डरपोक लोगो का खत्म होगा ही—वेकार हमारा नाम लगाए जा रहे हो—बरखुरदार आदमी मे हिम्मत होनी चाहिए—हिम्मत—समझे हिम्मत मर्दा तो मदद खुदा—सिफ हिम्मत के बल पर मैं इतना आगे बढा हू—तुम्हारी अम्मा से शादी—की तुम्हे पैदा किया बढाया—एक पाव जेल मे और एक पाव घर पर—क्रातिकारी की जिदगी जीता रहा—तीन वार जेल गया पर हिम्मत नही हारा समझ ?

जगन्नाथ दादा आपकी वात अलग थी—

दादा हा हमे पालने के लिए कौन हमारे बाप मौजूद थे—तुम्हारे मौजूद है न। मुझे तो खुद अपनी शादी तय करनी पडी—तुम्हारी तुम्हारे बाप ने तय कर दी। (धीमी आवाज मे) अदर की सायकलाजी तुम नही जानते जग्गू—इसीलिए ऐसी बाते किए जा रहे हो—तुम्हारी अम्मा को मैंने शादी के दूसरे ही दिन अपने धधे के बारे मे बता दिया था कहा—यही करता रहा हू और करता रहूगा—पसद न हो तो रास्ता खुला है—शौक से चली जाओ—औरत जात उलटकर बोलने लगे तो मैं पसद न करूगा—। बस वह रहने लगी—चुपचाप रहने

लगी जाएगी यहा ? पहले पहल रोती थी—फिर ठीक हो गई—क्या समझे।

जमुना पर दादा—

दादा वह पढी लिखी न थी—औरते घर के बाहर न निकला करती थी—इसीलिए वह रही—यही मतलब है न तुम्हारा ? पर इतनी ही बात न थी जग्गू। असली बात तो यह है कि वह जान गई थी कि मुझमे साली हिम्मत है। औरत चली जायेगी—इस डर से रोनी शक्ल लिए न बैठा रहा—नही तो एक तुम हो—। ताला-चाबी उसके हवाले कर अपने धधे पर चला गया। दो दिन तक वापस ही न आया—अपना काम पूरा किया और लोग आया। भूखी बैठी थी घर पर—आदमी मे हिम्मत चाहिए—समझे ? (आवाज धीमी कर) लडकी अच्छी भली है—गरीब है—अब दीखने दाखने मे भी अच्छी है वह बात अलग है—पर याद रखो इस वजह से बाहरी दुनिया मे खतरा ही बना रहता है—सब कुछ जान लेने पर अगर चली गई तो बाप वापस भेज देगा—वह ठहरा मास्टर। मा सौतेली—फिर तुम्हे भी हिम्मत बनाए रखनी चाहिए—ऐसे घबराते क्यू हो ? और मैं जो हू—हा एक बात जरूर याद रखनी है—धीरे-धीरे—आस्ते आस्ते उसे सब पता चल जाना चाहिए—एकदम धक्का न लगे—लाडली है नाजुक है—कुछ भी पूछे—बस अपनी पालिसी—क्या समझे ? नान कमिटल—धमराज टैकनीक नरो—वा कुजरो वा—समझे ? जाओ अब सिर पकड बैठने मे कोई

तुक नही है—और सुनो वह साडियो वाली बात न भूलना।

(बाहर से 'पडित जी' 'दादा पडित' है पुकार होती है)

(एकदम सावधान होकर) कौन ? ये काका इधर कहा से आ गए (जगन्नाथ से) ठहरो—वह बैसे जाएगा नही—कह दो घर मे नही है। (कील पर टगा कोट पहनकर, दरवाजे के पास पडी चप्पल हाथ मे उठाकर तेजी से अदर चल देते है। बाहर से हट्टे-कट्टे ऊचे-पूरे शरीर वाले रमई कवा अदर चले आते हैं। हाथ मे बेंत। ऊपर से नीचे तक खादी के कपडे—रौबीला व्यक्तित्व।)

जमुना घर मे नही ह—बाहर गए है।

काका अच्छा ? (वदनवार सरकाकर अदर आ जाते हैं) खैर जाने दो—अब आया ही हू तो घर तो देख जाऊ। (अदर आकर सारे कमरे मे नजर डालते हैं) वाह—घर तो बिल्कुल आश्रम जैसा सजा रखा है। तस्वीरो की ओर बढकर छोटी छोटी आखो से एक एक तस्वीर पर निगाह डालते है—ये कौन हैं—और ये ? अच्छा ये पता नही कौन हैं ? और ये पता नही कौन हैं ? और ये कौन नए आ गए— ? अच्छा अच्छा—(तस्वीर देखते देखते धर्मादाय पेटी की ओर आते है) ये रहे सबसे बडे गुरु महाराज—धर्मादाय पेटी—

जमुना दादा नही है और इतने जल्द आएगे नही—

काका हा-हा—समझ गया। मुझे कौन जल्दी है ? और

उनसे मिलने की कोई खास जिद भी नही है। सिर्फ घर ही देख लू यही क्या कम है ? उनसे तो कई बार मिला हू। जेल व्हिजोटर का काम करता हू इसीलिए मुलाकात हुई। तुम कौन हो ? उनके सुपुत्र बड़े हो गए अब—वे तुम्हारे बारे मे कहते रहते थे—तब तुम छोटे छोटे थे। शादी किसकी तय हुई है—तुम्हारी ?

जमुना हो चुकी है—

काका (जैसे एकदम धक्का लगा हो) क्या हो चुकी ? शादी ? इतने जल्द ? (गभीर होकर) हू—बड़े जल्द निबटा ली। वैसे बड़ा होशियार है—हो बिल्कुल ठीक बदनवार तो है—मतलब शादी हो चुकी है। (बेचैन होकर) तुम क्या करते हो ?

(अदर से दादा कोट टोपी पहने आते है)

दादा उसे क्यू तग कर रहे हो—मैं जो हू—

काका (बिना अचरज के ही) हो—मतलब घर मे—ये कह रहे थे नही हैं घर मे—खूब अपने तावे रखा है—

दादा घर सर्वोदयी नही बना है काका।

काका पर धोखाधड़ी तो कर रहे हो—

दादा पेट के खातिर—ससार कल्याण की भावना नही है—

काका वाह—अक्ल वाला गुनाहगार इसी अक्ल से काम लेता है—तुमसे तो काफी कुछ सुना है। पर पट नही पाएगा। दादा अक्ल से वह कैसे फस सकेगी ?

दादा पर आप यहा कैसे ?
काका तुमसे मिलने आया हू—
दादा घर तक आने की खास वजह ?
काका तुम जेल मे नही मिल पाए—यही वजह। 'वैसा' कोई काम किया ही नही—
दादा जेल न जाकर देश भक्तो से मत्र जो सीख लिया है —धम रक्षक उपाय।
काका देशभक्ति करना है तो जेल तो जाना ही होगा—यह तो फिजूल की बाते है—अरे भाई रानडे, गोखले ये क्या देशभक्त नही थे ? सौ फीसदी देश-भक्त थे। और जो जेल गए वे क्या सब देशभक्त थे ? कोई गुनहगार थे—किसी ने चोरी की थी कोई जगल से भाग आए थे—कोई लुच्चे बनावटो साधु सत उस बात को छोडो—क्यो निरी बकवास मे उलझे—मैं तो किसी काम से आया था।
दादा किसी काम से और मेरे पास ?
काका शादी मे बुलाया ही नही तुमने ?
दादा (चौककर) तुमको किसने बताया ?
काका क्यू ? आखिर हमारी तो जान पहचान है न ? शादी तय होने की बात तो पता चल गई थी—इसलिए जल्दी चला आया—तुम्हारे ये सुपुत्र बोले की शादी निबट गई।
दादा फिर अब क्या चाहिए तुम्हे ?
काका (सहज ही) लड्डू—और क्या मागूगा ?
दादा सर्वोदयी आदमी लड्डू कैसे खा सकेगा ? मन की शुद्धि के लिए नीम की पत्ती—
काका हा दुनिया के कटु अनुभव पचाने के लिए नीम की

पत्तो ही चाहिए।

दादा अच्छा—तो एक प्लेट मगवाए देता हू—

काका और क्या मगा सकोगे तुम ? (खिन्नता से बैठने है)

दादा मुझे फुर्सत नही है—काफी काम हैं मुझे—

काका और मैं कौन बेकार हू—जानते हो न ? अगर वही बात होती तो तुम्हारे घर की निगरानी न किया करता। तुम्हारे इन लफडो को देखने की फुर्सत किसे है ?

दादा काका साहब।

काका गुर्राने से क्या होगा ?

(खिन्न बठते ह)

दादा काका साहब आपके आने से हम पामरो का बेहद खुशी हुई हे। हमारी पापी झोपडी पवित्र हो गई। अब जाइए आप—

काका मैं यहा से हिलूगा नही—पहले जवाब दो—

दादा बेबात की बातो मे टाग अडाने का यह सर्वोदयी धधा—

काका हा—यह इसानियत का धधा है—अरे शादी करने से पहले मुझसे तो पूछ लिया होता ?

दादा मेरी प्रायवेट बातो मे गाव के खादीधारी सतो क दखल की कोई जरूरत नही है।

काका फिर क्या भोली भाली लडकियो को इस घर मे लाने की जरूरत है ? तुम इतने दिलदार हो यह में नही जानता था।

दादा मेरे घर आकर मेरी ही छाती पर मूग दल रह हो

--यह कैसा गाधीवादी शिष्टाचार है काका ? ऐसे धध और कही कीजिए क्या--यहा आपकी दाल न गल पाएगी--

काका अच्छा काफी बाते करने लगे हो--तुम्हे लगता है कि मैं कुछ भी न करू ? इसानियत का रिश्ता ही भूल बैठ ?

दादा मेरा कभी साला विश्वास ही न था--

काका था--तुम्हारा यही आग्रह था--उसी वजह से जेल के अधिकारियो से मैं तुम्हारी सिफारिश करता रहा--सुविधाए दिलवाता रहा--सजा देने मे भी सहूलियत करवाता रहा--खुद के लडके के बारे मे बाते करते वक्त जेल के सीकचो मे तुम्हारी आखो मे पानी आ जाता था और दूसरो की लडकी के बारे मे ऐसी उल्टी बात ?

दादा काका साहब--काफी आगे बढ रहे हैं आप--ताकीद किए देता हू हमारा और आपका रास्ता एकदम अलग है--

काका पर मेरी जिद भी तो कम नही है--अभी इसे तुम्हे समझाना बाकी है। तुम्हारी बहू कहा है ?

दादा ढोगी अपना ढोग छिपाए जो रखता है--

काका (गुस्सा सभालते हुए) ठीक है यही बात है तो यह ढोगी उससे मिले बगैर हटगा नही--
(बैठे रहते हैं।)

(जगन्नाथ हडबडाए खडा है।)

दादा क्या चाहिए आपको ? उस--उस अभी किसी बात की कल्पना तक नही है--एकदम जान लेगी

तो उसे धक्का लगेगा—पर उसकी हर चिंता तो मैं कर रहा हू—सडक चलते राहगीर को उसकी चिंता करने की कोई जरूरत नही है—

काका दादा अपने शब्द वापस लो—सडक चलता राहगीर ? उसका भाग्य हू मैं—

दादा (साश्चर्य) आप ?

काका हा हा मैं—उसकी मा के साथ छुटपन मे खूब खेला हू—भाई की तरह—सारे लोग हम भाई वहन समझते थे—अभी ता मैंने शादी की ही बात सुनी है—

दादा फिर कह रहा हू—वह एकदम खुश है—कोई चिंता की बात नही है मैं जो जिम्मेदार हू—तुम्हारे जैसा सत भले ही न होऊ—फिर भी सारी जिम्मेदारी किसे कहते है खूब जानता हू। आपकी लाडली पूरी तरह से सुरक्षित है—समझे ?

काका बातो से मेरा समाधान न होगा। उसे बुलवाओ—
(बैठे रहते है)

दादा (बेचैनी से सोचकर) ठीक है—एक शर्त—उसे अभी कुछ न मालूम हो सके।

काका मुझे मजूर है।

दादा वचन दो—

काका हा-हा वचन देता हू—पहले उसे बुलवाओ—

दादा जगन्नाथ बहू को बाहर बुलवा लाओ—

(जगन्नाथ अचकचाकर अदर की ओर जाता है। कुछ देर बाद बाहर आता है पीछे पीछे गर्दन नीची कर मीनाक्षी आती है—बाहर

से बीरू आ खडा होता है।)

काका बेटी मीनाक्षी—इधर आओ बेटी—हा वही चेहरा —वही शालीनता। मुझे पहचाना बेटी? कैसे पहचानोगी? मैं ही हू रमई काका—तुम्हारी मा का लम्बे रिश्ते मे भाई—

(मीनाक्षी गर्दन ऊपर कर देखती है।)

तुम्हारी मा और मैं बचपन मे एक साथ खेला करते थे—गुड्डा-गुड्डी का खेल—साथ पढे लिखे और उसकी शादी हो गई। हम देशभक्ति मे जिदगी लगा बैठे—कभी-कभार मिल भी लेते थे पर पहले जैसी आजादी कहा थी। फिर वह भी चल बसी। बेटी तब तुम छोटी थी—मैंने ही तुम्हे सभाला था—जब उसे ले जाया गया था—तकदीर थी—साबरमती के जेल से छूटा ही था तब

(गद्गद् हो जाते हैं और मीनाक्षी भी गद्-गद् हो जाती है। खुद को तसल्ली देते हुए)

ऐसे है रिश्ते-नाते—बडी खुशी हुई तुम्हे देखकर —बरसो बाद देखने का मौका आया है।

मीनाक्षी बचपन मे—मामाजी आपने मुझे खिलाया है?

काका तुम्हे याद आता है बेटी? ऐं? बडी जिद्दी थी तुम। मेरे आते ही गोद मे आने के लिए मचल जाती थी। ऊपर उठाने के लिए कहती थी—न उठाता था तो रोने लगती थी। गोद मे लेते ही सिर पर बैठने के लिए मचल जाती थी। इस सिर

पर दो ही बैठ पाए—एक तुम और दूसरे महात्मा गांधी—

(वह धीमे से अंदर जाने लगती है)
कहां चल दी बेटी ?

मीनाक्षी चाय बना लाती हूं—
काका देखा —ऐसे होते हैं रीति रिवाज—। बेटी मैं चाय लेता नहीं—खराबी वैसे कुछ नहीं—पर आदत से लाचार हूं—एक बार छोड़ दी बस छोड़ दी—फिर तो कभी चाय तक का नाम ही न लिया—समझे दादा ?

(दादा सरत)

बेटी—अब जो कुछ पूछ रहा हूं—सही-सही जवाब दोगी बेटी ?
दादा (गुर्राकर) काका साहब—
काका खुद ही जान लेना चाहता हूं—तुम चिंता न करो —(स्वर में अपनापा लाकर) बेटी तुम्हारी शादी की बात सुनकर यहां चला आया, शादी हो चुकी यह बात तो यहां आकर ही जान पाया हूं—पर फिर भी तुम्हारी मां के भैया की हैसियत से पूछ रहा हूं बेटी—तुम्हें अपनी ससुराल पसंद है ?
मीनाक्षी (मर्यादापूर्वक) हां मामाजी—
काका तुम्हें इस घर में ससुर जी कैसे लगते हैं—
मीनाक्षी वे बहुत अच्छे हैं—अच्छा सलूक करते हैं—
काका पर (खुद को संभालकर) ठीक है। तुम्हें अपने ससुराल पर गर्व है ?

मीनाक्षी हा—अच्छे-भले लोग है मामाजी—

काका इस तरह के जवाब न दो बेटी—जो कुछ पूछ रहा हू वही बताओ—

दादा (धीमे से) काका साहब—

काका हा—मुझे याद है। तुम चुप रहो। (मीनाक्षी से) तुम्ह अपनी ससुराल पर गर्व है न ?

मीनाक्षी मामाजी मुझे अपनी ससुराल पर गर्व है—

काका कोई शिकायत—मामा पूछ रहा है—घबराओ नही बेटी—किसी बात का सकोच न करो—

मीनाक्षी हा, एक शिकायत है।

(सब सख्त)

काका वह क्या बेटी ?

मीनाक्षी मुझे घर का काम नही करने दिया जाता—

(सब लबी सास लेते है।)

काका हा-हा करने देगे बेटी—नई नवेली बहू हो—धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा बेटी—(सोचकर) तुम अपनी सारी बातें दिल से कह रही हो न ? आखरी बार पूछ रहा हू—फिर मन मे कुछ अटकाव न रहे।

मीनाक्षी मामा जी मैं वाकई सुखी हू—आप जरा भी फिक्र न करें—

काका (उठते हुए) ठीक है—ठीक है—बेटी कभी जरूरत हो तो मुझे बुला लेना—गाव मे ही रहता हू।

मीनाक्षी वैसे ही जा रहे है मामाजी—बिना खाए-पीए ही ? घर मे इतनी बडी शादी हुई और आप—

काका (कोशिश से) फिर कभी आऊगा बेटी—तब जरूर खाऊगा—अच्छा दादा अब चलता हू—

(दरवाजे की ओर बढते हैं—मीनाक्षी आगे बढकर नमस्कार करती है 'सदा सुखी भव' काका कहते हैं। चप्पल पहनकर चल देते है —मीनाक्षी नीची गर्दन किए अदर की ओर चली जाती है।)

दादा (जैसे राहत पा गए हो) चलो छुट्टी हुई—खैरियत से सब बातें निबट गई जग्गू। मुझे तो डर था कि कही भडाफोड न हो जाए—चलो जीत लिए

बीरू (जमे रहा न जाए) बिल्कुल गलत—

जमुना बीरू तुम—

दादा क्या कहा गधे के बच्चे ?

बीरू आप सब खुद को ही दगा दे रहे हैं—

जमुना मतलब ?

बीरू मतलब वही—भाभी को सब कुछ मालूम है—

(सब सन्नाटे मे हैं)

जमुना चल हट—

बीरू शादी के पहले ही भाभी को सब कुछ मालूम हो गया था। शादी होने वाली थी तब की बात है। शहर मे हम लोग उतरे थे। मैं घर के कटटे भर बैठा था। पढाई करने की कोशिश कर रहा था। तभी एक लडकी आई और बोली तुम ही हो बीरू ? मैंने कहा—हा। वह बोली तुम्हे तुम्हारी भाभी बुला रही है—चलोगे ? मैं चला गया। उसने भाभी के कमरे मे पहुचा दिया। सारे घर मे शादी का हगामा था। पर उस कमरे मे खामोशी थी। एकदम अधेरा था। फिर भाभी की आवाज आई —भैया मैं जो पूछू—सच-सच बताओगे ? मैंने

कहा—हा। फिर उसने सारी बातें पूँछ ली—

जमुना क्या क्या पूछ लिया ?

बीरू क्या मतलब—सब कुछ। वह सारी बाते जान चुकी थी। तुम्हारी बाते—कम्मो की बाते—दादा की बाते—सब कुछ—

कमला फिर तुमने क्या जवाब दिया ?

बीरू मैंने सच सच कह दिया—झूठ बोलना मुझे कतई पसद नही। झूठ बोलकर अब तो मन ऊब चुका है।

(सब हैरान खडे है।)

मैंने कहा—भाभी तुम हमारे घर न आओ—मुझे भी अपने घर से चिढ है—हमारा घर खराब है। दादा झूठे हैं—गोलमाल करते है। भैया कोई काम नही करते—दादागिरी करते है—कमला किसी के साथ घूमा करती है—भाग जाती है। हमारा सारा घर खराब है—तुम उस घर मे न आओ। पर वह बोली—हा, सभी यही बता रहे थे बाबूजी ने भी देखा है पर—पर इसीलिए मैं शादी करने वाली हू भैया। क्या होता है यही मै देखना चाहती हू। मैं एक जिद्दी लडकी हू—
बहुत जिद्दी—

(अजीब खामोशी)

दादा (काफी बेचनी से) शभो कैलासनाथ—(धीमे से आकर बैठक पर बैठ जाते है)

(धीरे धीरे पर्दा गिरता है।)

अंक दो

(स्थान वही। गुरु महाराज की तस्वीरों में कुछ तबदीली है। उनमें राम पचायत वाली तस्वीर बिल्कुल बीचों-बीच आ गई है। एक बाबा की तस्वीर नदारद है। दादा और जमुना का साथ खींचा गया फोटो दीवार पर टगा है। एक कलंडर जिसमें बच्चे का चित्र है। धर्मादाय पेटी की जगह बदल दी गई है। खूटी पर धोती रखी हुई है।

एक ओर कमला अपने ट्रक का सामान देख रही है। पास वाले कमरे का दरवाजा खुला हुआ है।

पोस्टमैन आकर जग नाथ जी कहता है। पास वाले कमरे से जगनाथ आकर पोस्टमैन के दिए हुए दो खत लेकर उन्हें खोलते हुए अपने कमरे में निकल जाता है।)

दादा (अदर से सिर्फ आवाज) कम्मो—कमबख्त धोती कहा रखी है? साली एक चीज जगह पर मिले तो कम है। अरे साला घर है या रेलवे लॉस्ट

प्रापर्टी का दफ्तर ? कम्मो—

(कमला बेमन से उठती है। ट्रक अलमारी मे रखतो है। धोती के लिए खूंटी की ओर बढती है। अंदर से मीनाक्षी आती है अच्छी सी साडी पहने हुए है।)

कमला एक हफ्ते से दादा का तो दिमाग खराब हो गया है।

मीनाक्षी ऐसा न कहो—

कमला और क्या तो—देखो न किस तरह चीख रहे हैं। गनीमत है जो तुम्हारी वजह से हर चीज करीने से रखी हुई है। घर की हालत ठीक हुई तो दादा को हालत खराब हो गई।

मीनाक्षी (धोती लेकर) लो—अंदर जाकर उन्हें दे दो। मैं जाकर दूगी तो यू ही खीज पडेंगे। और हा—दोपहर मासजी को महाभारत पढकर सुनाना—आज भूल न जाना ए—

कमला पर भाभी बडी उबकाई आती है—महाभारत-वहाभारत से—इससे तो उपन्यास अच्छे रहते है—वह खतरनाक जासूस—एक हसीन रात—कटी डोर—

मीनाक्षी बात तो ठीक है—पर तुम्हारे उपन्यास मासजी को कैसे अच्छे लगेगे ? और उपन्यास पढने के लिए कौन मना कर रही हू। पर सासजी के लिए तो—

कमला भाभी तुम सिर्फ जिद्दी ही नही हो—जिद से काम भी करवाना जानती हो।

(धोती लेकर अंदर जाती है। पास वाले

कमरे से जगन्नाथ आता है। हाथ मे दोनों खत है।)

जगन्नाथ ए देखो—काल आया है एम्प्लायमेट एक्सचज से —देखो—न—

मीनाक्षी अच्छा? (उसके हाथ से खत लेकर देखती है और वापस करते हुए) अच्छा अब की बार दाढी वाढी बनाकर अच्छे कपडे पहनकर जाइएगा और बेकार की चिढन पालने से कुछ न होगा—! आई हुई नौकरियो को गमा देने मे क्या रखा है? अच्छे जवाब दीजिए—अदब से सलूक कीजिए—जो मिले वही काम ले लीजिए—फिर अच्छे काम की तलाश बाद मे होती रहेगी।

जगन्नाथ करू भी क्या—कोई नीचा दिखाने की कोशिश करता है तो साला मेरा दिमाग ही ठिकाने नही रहता। तुम्हारे मामा जी ने खत दिया था उस बार भी यही हुआ। रेशम की खादी पहने वहा चार लोग बैठे बीडी पी रहे थे। खत पढकर मुझ से इस तरह बोले जैसे मैं लावारिस हू—बोले—जूतो पर पालिश करना पडेगा—मैं उनके जूतो पर पालिश करू गा—मैं?

मीनाक्षी और क्या एक आदमी बडा तेज मिजाज वाला है —एकदम गर्म मिजाज—

जगन्नाथ फिर अपनी इज्जत अपने हाथ—

मीनाक्षी हा, होती है। पर इज्जत खुद पहले कमानी पडती है—खुद के पैरो पर खडे रहने मे इज्जत है—

जगन्नाथ अच्छा तुम्हारी बात ही सही—

मीनाक्षी और दूसरा खत किसका है?

जगन्नाथ वे जो कम्मो को देखने आए थे न—चतुर्वेदी—

मीनाक्षी हा-हा क्या लिखा है ?

(चेहरे पर उत्सुकता)

जगन्नाथ लिखेंगे क्या—वही नामजूर—

(मीनाक्षी लबी सास लेती है)

दहेज के लिए बैक मे काफी पैसा हो तो लडकी का रिश्ता मिनटो मे तय होता है—दादा का यही ख्याल है न—वे सोचते है पैसे से सब कुछ हो सकता है। पर नही—

(कुछ खिन्न होकर)

तुम्हारी बात ही तुम्हे सुना रहा हू—पर बात मुझे भी पट रही है—पर आज तो मैं ठीक इटरव्यू दूगा—

मीनाक्षी हा—और मेरी याद करते रहना—समझे ?

जगन्नाथ इटरव्यू मे ? हा, यह बात भी ठीक है—तुम्हारी याद करते ही वह मुझे फौरन ले लेगा—

मीनाक्षी चलिए आप भी वडे वो है—

(लज्जा जाती है।)

(अदर से दादा इसी समय झाकते है—फिर सिर अदर कर लेते है।)

दादा (सिर्फ चीख पुकार) कम्मो—गधे की बच्ची—आश्रम मे वाहियात बातें नही चाहिए—लाख बार कहा होगा तुम लोगो को—अरे साला आश्रम है या सिनेमा थियेटर ? यहा साली मेरी ही आजादी छीन ली गई है।

(मीनाक्षी और जगन्नाथ एक ओर हटते हैं। एक दूसरे को इशारा कर मीनाक्षी मर्यादा पूर्वक अंदर जाती है। जगन्नाथ खड़ा ही है। अब दादा ओम नम शिवाय कहते हुए आते है। एक ओर धोती का कच्छा बाध रहे हैं।)

दादा सारे घर मे साला हगामा मचा रखा है—बस मैं नाम मात्र का मुखिया रह गया हू—सिर्फ राशन कार्ड के लिए—और तो सब मछलीघर बन बैठा है—तमीज ता रह ही नही गई है। अब इसी समय वह बडी पार्टी आने वाली है।

(जगन्नाथ को खडा देखकर)

अब आप यहा और क्या कर रहे हैं ?

जगन्नाथ दादा खत आया है—चतुर्वेदी जी का—(वे उस ओर देखने लगते है) नामजूर कर दिया है। वजह दी है कि आपके घर मे तमीज नही है—अजीब बोल वाला है—और लिखा है बुरा न मानिए—

दादा (तेजी से गुस्सा आता है पर रोककर) पर मेरे खत तुम्हे देखने के लिए किसने कहा था ? किसने कहा था मेरे पत्र देखने के लिए—

जगन्नाथ दादा किसी के कहने की जरूरत ही कहा है—लिफाफे पर भेजने वाले का नाम चतुर्वेदी लिखा हुआ था—इसीलिए पढा कम्मो के बारे मे ही था।

दादा इसलिए क्या मेरे खत पढ जाओगे—शादी हो गई तो बरखुरदार क्या समझ रहा ? राज्याभिषेक हो गया तुम्हारा। खबरदार जो किसी ने मेरे खत को हाथ लगाया—और खडे क्या हो बुत बने—जाओ

अपने कमरे मे—वहा करो जो—सिनेमा

(जगन्नाथ खत रखकर अपने कमरे की ओर बढ जाता है)—

खत पढेगा—चतुर्वेदी नही तो उसका बाप त्रिवेदी ये दादा मिट्टी का लोदा नही है—एक-दो नही साले पच्चीस दूल्हे इकट्ठे कर दूगा—हिम्मत है—लौडा देखो तो म्युनिसपालिटी के ड्रेनेज मे—नाम चतुर्वेदी और हाथ मे ड्रेनेज का पाइप—(सोचकर आगे कुछ सोच-समझकर चलना होगा और काम फौरन निबटा लेना होगा—टाइम दिया यही तो सारी गलती हो गई—

(यहा दीवार की तस्वीरो की ओर ध्यान जाता है और एकदम उफन पडते है)

अरे क्या देख रहा हू—मैं—मेरे गुरु बाबा (चीखते हुए) कम्मो पहले इधर आओ—यहा आओ पहले कहा हो—वहा से पहले इधर आओ—कम्मो—बीरू—अरे कोई—

(कमला आती है—पास वाले कमरे से जगन्नाथ झाकता है)

कमला क्या है दादा ? अब और क्या हो गया ?

दादा क्या हो गया ? अरे अब होने के लिए बचा ही क्या है ?

कमला आपका पूजा पाठ। पर आज करनी है—आपने कहा ही कहा ? और अब तो भाभी करती ही हैं—रोजाना—

दादा (दीवाल की तस्वीरो की ओर इशारा कर) ये—सब कुछ क्या है ? यहा किस गधे ने तबदीली कर दी ?

कमला तबदीली ? भाभी ने—

दादा यहा के गुरु बाबा वहा गए—और वह गुरु महाराज उधर क्यू सरका दिए और यह रामपचायत—इसे बीचोबीच क्यू रखा ? क्यू बोलो ? और यहा हम लोगो को टाग रखा है।

कमला हाय राम, दादा। वह तो आपका ही फोटो है—अम्मा के साथ खिचवाया हुआ—

दादा आज क्या हमारी शादी की जुबली है ? इस फोटो की यहा क्या जरूरत ?

कमला दादा बुरा तो नही लग रहा—इससे तो वह मोट पेट वाला गुरु बाबा ही।

दादा उसी पर तो तुम लोगो का पेट पाल रहा हू—उसी की खिल्ली उडा रही हो—

कमला पर दादा—पेट बडा है तो खुला बदन क्यू रखा है ?

दादा बकवास बद करो—पहले उसे यहा लगाओ—*साला घर क्या—भटार खाना बना रखा है।*

कमला दादा—अब कही घर करीने से लगा है—

दादा अच्छा अच्छा—बकबास बद (वह चुप) साले सब सिर पर चढे जा रहे हे।

(अदर से जमुना आती है)

जमुना इस तरह क्यू बोल रहे हैं ?

दादा हा हा अब तुम भी यही कहो—पहले वह गुरु बाबा

यहा लगाओ—अच्छा खासा चालू बाबा है आज-
कल—उसे ही यहा से निकाल रहे हो कैसे मुक्ति
होगी तुम लोगो के पापो की ? और (देखते हुए)
मेरी धर्मादाय पेटी किसने हटाई ?

जमुना वह तो रखी है सामने—वहा रख दी कौन सा नुक-
सान हो गया ?

दादा क्या नुकसान हो गया ? साला सारे घर की शान
ही चली गई ?

जमुना सिफ पेटी की जगह ही तो बदली हे—उसमे कौन
सी शान चली गई ?

दादा तुम पूछ रही हो—और मुझसे ? औरत हो या
विरोधी पक्ष—पिछले सत्ताइस सालो से जो तुमसे
न हो सका वह अब हो रहा है (याद आकर) उस
—अलमारी के मेरे कागज कहा है ?

कमला वे है तो सही—

दादा पर उनकी हालत इस कदर किसने कर दी—

कमला हालत तो और भी ठीक हो गई है दादा—भाभी
के कहने से मैंने ही तो करीने से लगाया है सब—

दादा करीने से ? मैं क्या गधा था जो इस तरह सब
चीजे रखता था। (जमुना से) क्यू जी ? अब
कमबख्त मेरा कागज उसमे मिलने से रहा और
रामायण का गुटका मेरे कागजो मे क्यू ? (कमला
की जीभ बाहर आ जाती हे।) कम्मो बोलो क्यू ?

कम्मो दादा—भाभी जो पढकर सुनाती है—

दादा पहले खुद को पढ लो—फिर रामायण वामायण
पढना—मेरे गुरु महाराज को पहले इधर लगाओ
—(सब खामोश) कम्मो—मै क्या कह रहा हू

—(वह तेजी से रसोई की ओर भागती है—फिर दादा जमुना से) और तुम—उस तस्वीर को निकालो यहा से—

जमुना बहू ने तो तमाम कचरे से पोछ पाछकर—

दादा बस बस बकवास बद करो—हमारी तस्वीर लगाने चले—हम कौन मर गए है जो हमारी तस्वीर लगाओगे—तुम्हारा क्या कल को मूर्तिया लगाने लगोगे—

जमुना पर मुझे क्यू डाटे जा रहे है ?

दादा दमन बाण गडो का स्टाक खत्म हो चुका है—सुख सचारक यत्रो की सख्त जरूरत है—चिर यौवन पाक के आर्डर्स पडे हुए है—कितने दिनो से चोख रहा हू पर कोई सुने तब ना ? सब अपना ही तामझाम लगाने मे जुटे हुए है—रामायण महाभारत पढे जा रहे है

जमुना इते दिनो से मुए—

दादा हा, बडा एहसान जो कर रही हो—

जमुना पर दादा आखिर नुकसान कौनसा हो गया ?

दादा और वह बीरू—(बीरू बाहर से आकर खडा है) महात्मा गाधी का चरित्र पढ रहा है—

बीरू नही दादा—गाधी चरित्र तो पढा चुका—अब बुद्ध गाथाए लाया हू । भाभी ने कहा है खूब पढा करो—

दादा लो—अब इनकी सुनो—

बीरू दादा आप भी तो बुद्ध का पुतला बिठाए हुए है—

दादा कागज पर वजन रखने के लिए—समझे ? सिर पर उठाए नही घूमता (ध्यान आने पर उफन

पडते है) बस अब तो कमाल ही हो गया—चला गया—वह भी चला गया—

कमला दादा कौन ?

दादा मेरा बुद्ध—मेरा बुद्ध चला गया—मेरा बुद्ध कहा है ? मेरा बुद्ध (जमुना से) क्यू जी ? मैं पूछता हू आखिर इस घर का तुम लोग क्या कर देने वाले हो ? ए ? मेरा बुद्ध कहा है ? (अदर से मीनाक्षी आती है। हाथ मे गुरु महाराज की तस्वीर—एकदम धीमे स्वर मे) मेरा बुद्ध पहले यहा लाओ—

मीनाक्षी मैंने ही इनके कमरे मे रख दिया है—

दादा (जमुना से) मेरा बुद्ध इनके कमरे मे क्यू गया ? मैं पूछता हू क्यू ? पहले जवाब दो

मीनाक्षी लाती हू (पास वाले कमरे की ओर जाती है)

दादा (जमुना से) सुना कान खोलकर सुन लो मेरे आश्रम की चीजे मेरे आश्रम मे ही रहनी चाहिए उन्हे अलग करना मुझे नही जचेगा।

जमुना पर मुझे क्यू बेकार मे

(मीनाक्षी बुद्ध का पुतला लाकर स्टूल पर पहले जैसा ही रख देती है।)

कमला और दादा वह रामपचायत ? उसे वही रहने दें ? और आपका और अम्मा का फोटो ? आप फिर चीख-पुकार मचाए गे इसलिए याद दिला रही हू

दादा मैं पूछता हू उसे पहले यहा लगाया ही क्यू ? बोलो ?

कमला भाभी बताओ अब ?

मीनाक्षी मुझे पसद आया इसलिए सारा सामान करीने से लगा रही थी तभी पुरानी तस्वीरे हाथ लगी उसी मे यह भी था जवानी मे कितने बदले हुए लगते हे लोग है न ?

कमला हाँ

दादा हा, क्या ? हमसे बिना पूछे फोटो लगाने के लिए साले हम कुछ थे ही नही ?

मीनाक्षी नहीं ऐसी बात नही है जो न हो उसकी तस्वीर कौन लगाएगा

दादा पहले गुरु महाराज को जगह पर लगाओ (मीनाक्षी आगे बढकर रामपचायत वाली तस्वीर निकालकर वहा गुरु महाराज की तस्वीर लगाती है।) गुरु महाराज को क्या यू ही समझ रखा है क्यू रे जग्गू अरे सत्ता बडा महापुरुष पिछले साल उसी के जोर पर दुनियादारी चलती रही अरे कुछ तो ख्याल करो

(मीनाक्षी दादा और जमुना का फोटो निकालते लगती है। जमुना पल्लू आखो से लगाती है)

कमला दादा रहने दो न आपका फोटो वही पर लगा रहे तो कौन नुकसान हाने वाला है

दादा नुकसान वुकसान बाद मे बताऊगा पहले फोटो अलग करो—सारी चीजे पहले जैसी रखो

(मीनाक्षी वहा से कलेंडर के पास जाती है। उसे उतारने लगती है)

जमुना अरे-अरे उसने क्या बिगाडा है—उसे वही रहने दो—

दादा नही—जैसा था वसा ही होना चाहिए—शादी क्या हुई एक-एक के दिमाग चढ गए हैं।

जमुना दादा—

दादा रोजाना राम मदिर जाते है—

जमुना दादा —वहा जाने पर वाकई अच्छा लगता है—

दादा लगेगा ही—अब लगता है—पहले अक्ल कहा चरने गई थी ? घर मे साले—

(मीनाक्षी को देखकर चुप लगा जाते है—)

जमुना क्या कह रहे है आप ? घर मे क्या ?

दादा कुछ नही सुबह-शाम रामधुन हो रही है बस—

जगन्नाथ और आप दादा हर शनिवार को तीखी आवाज वालो के साथ भजन करते रहते ह तब ? तब भी तो हो हल्ला ही होता है।

दादा हो-हल्ला ? जग्गू ? फिर कहो तो। अरे आश्रम के साप्ताहिक भक्ति गीतो को हो हल्ला कहते हो तुम लोग ? बेवकूफी की भी हद होती है। उसी वजह से तो पेटी मे सव्वा तीन सौ जम पाए—जानते हो ? और नए-नए भक्तिमार्ग की जान-पहचान हुई सो अलग—हा अब काम आई उस एकाऊटेंट वाली बात—(मीनाक्षी की ओर देख कर रुक जाते हैं।) खैर छोडो—तुम लोग सब यही क्यू खडे हो ? काम धाम नही है तुम लोगो को—ए ? यहा क्या नाच-गाना चल रहा है या भाषण इंदिरा गाधी का—ए ? चलो सब—साली आश्रम की

हालत खराब कर रखी है—उसी मे वह साली पार्टी आने वाली है—

(मीनाक्षी जमुना, बीरू रसोई की ग्रोर जाने लगते हैं। जगन्नाथ अपने कमरे की ग्रोर बढता है—कमला वही मडराती रहती है।)

दादा कम्मो—सब चले गए न ? (रसोई की ग्रोर अच्छी तरह देख लेते है) इधर ग्राग्रो—(वह करीब ग्राती है) घर मे ग्राजकल क्या चल रहा है ? ए ?

कमला दादा—कही कुछ नही। सब ठीक चल रहा है।

दादा सब ठीक चल रहा है। (खुद को सभालकर) खर छोडो—जब मैं बाहर गया था तब कोई आया था मेरे यहा ? कोई सदेशा—कोई आदमी कुछ ले लुवाकर ग्राया ?

कमला ले लुवाकर ? नही ता दादा—

दादा हो नही सकता कम्मो—वही ग्राया था न ?

कमला हा दादा—वह जो इपोट या किसी लायसेस के लिए ग्राता था—वह ग्राया था—जैसा ग्रापने बताया था वही दादा मैंने—

दादा फिर ?

कम्मो दादा उसने पैसे दिए ही नही—

दादा नही दिए—हो नही सकता कम्मो।

कमला सच कहती हू—दादा। मैंने तो बिल्कुल वही कहा था जो ग्रापने बतलाया था—पर तभी सब गुड-गोबर हो गया—

दादा गुड गोबर ? मतलब ?

कमला भाभी किसी काम से बाहर आ गई। वह पूछ रहा था कि पडित जी दिल्ली से कब लौटेंगे ? तो भाभी अचकचा गई—मैंने कहा—चार दिन बाद लौटेंगे पर तभी भाभी से न रहा गया—पूछ बैठी कौन गया है दिल्ली ? मैंने कहा दादा —तो बोली दादा तो यही हैं—सच दादा—उस पर मने कहा भी—भाभी दादा दिल्ली ही गए ह—पर वह बोली—नही वे तो अभी नहाने गए है

दादा ऊ—हू-च-च च

कमला दादा—मैंने बात जमाने की कोशिश भी की—पर उसे खुटका हो गया—फिर तो वह पैसे देता ही न था—कहने लगा चार दिन बाद खुद पडित जी को ही दूगा—दिल्ली से नहाने के लिए आ जाए तब—

दादा खत्म हो गया—सारा खेल ही खत्म हो गया कम्मो—मामला सब मटियामेट हो गया । चार दिन बाद मतलब अब कभी नही—आई हुई लक्ष्मी लौट गई—हजार कोशिशो के बाद कही मामला तय हो पाया था—बस यू ही तो होता है—बकवास करने के लिए किस हरामजादे ने कहा था तुम लोगो को ए ?

कमला दादा—आप भी मुझ पर ही नाराज हुए जा रहे ह ?

दादा तुम और तुम्हारी भाभी—

कमला पर दादा—उसमे उसकी भी गलती कहा है ? उसे तो कुछ मालूम ही न था।

दादा पर दूसरो की बातों मे टाग अड़ाने की जरूरत क्या

थी ? मैं पूछता हू क्या जरूरत थी ? बस यही सिखलाया है मा बाप ने—

कमला दादा—भाभी तो मेरी ही गलती ठीक कर रही थी—

दादा और ढाई सौ पर पानी फेर दिया—अगली उम्मीद भी खत्म हो गई—साला बनता तो कुछ नहीं बिगड जरूर जाता है—पैसे क्या पेड पर लगते हैं ? साली कहा से जग्गू की शादी कर दी—अब रो रहा हू अपने कम को—

कमला पर दादा—भाभी तो अच्छी-भली हैं—

दादा कम्मो बकवास बन्द करो—कौन कैसा है—उसे मैं खूब समझता हू—करने कुछ गया और साला कुछ और हो गया—आकर दो दिन हुए नहीं है—और न जाने क्या-क्या करने लगी है—

कमला पर दादा—

दादा गुरु महाराज देखो तो कचरे मे डाल दिए—

कमला कचरे मे नही दादा—रसोई मे रख दी थी तस्वीर—

दादा हा हा बात तो वही हुई न ? मेरा बुद्ध—सीधे उस जग्गू के कमरे मे रख दिया—सारे कागजात तितर-बितर कर दिए—

कमला पर दादा—मैंने भी तो—

दादा फिर वही बात ? मैं पूछता हू आखिर क्यू ? जरूरत क्या थी ? मैं अपने कागज साल कहीं भी रखू—उसे क्या ? चाहू तो आग लगा दू—पर उसने जुरत क्यू की ? रही सही धोती भी खूटी से गायब—

कमला दादा—उसने तो करीने से रख दी थी—

दादा पर मैं पूछता हू क्यू ? साली इतनी फिक्र करने की जरूरत क्या थी ? मेरे हाथ क्या टूट गए जो वह धोती की तह करने चली—कोट के बटन लगाने की क्या जरूरत थी ? अरे टूट बटन और मैलपन मे तो सारा राज था—उसे पहनते ही कैसा नम्र और पागल दीखता था मैं—अब वह धुला हुआ कोट पहनकर क्या गवनर से मिलने जाऊ ? या साला फोटो खिचवाऊ ? वह—वह तेरी अम्मा के साथ खिचवाया फोटो—

कमला हा दादा—वह अगर यही लगा रहता तो आपका क्या विगड जाता ? भाभी ने तो खोजकर निकाला था—साफ सुफाई की थी—

दादा मैं पूछता हू किसलिए ? अगर वह यहा लगा रहता तो कम्मो मै लोगो के सामने किस मुह से कहता कि मैं बाल ब्रह्मचारी हू—बोलो ?

कमला दादा—आप ब्रह्मचारी ?

दादा तो उसमे हसने की साली कौन सी बात है ? इतना सरल नही है कम्मो—दुनियादारी मे लोगो पर बडा प्रभाव पडता है ऐसी बातो का समझी ? और रामपचायत की तस्वीर बीच मे लगा दी थी न ? गुरु महाराज की निकालकर—ए ? कौन राम का भगत है आज जो उसके नाम पर चार पैसे भी दे दे ? ए ? अब कहे देता हू—कान खोल कर सुन लो—अब ऐसी हरकतें न की जाए इस घर मे—समझी ?

कमला पर मुझे क्यू डाट रहे हैं दादा ?

दादा हा-हा—चाहो तो कह दो अपनी भाभी से भी—

कमला मै क्यू कहने चली—आप खुद ही जो कह दें—

(पुकारते हुए)

भाभी ओ भाभी—

दादा (नाखुशी से) कमबख्त—किसलिए—बेकार ही—

(मीनाक्षी आती है)

मीनाक्षी (देखकर मर्यादा से) मुझे बुलाया ?

कमला हा भाभी—दादा ने ही बुलवाया है—

दादा मैं कहा ? किसी ने पुकारा था—

कमला पर दादा आप कुछ कहना चाहते थे न भाभी से—?

दादा क्या कहना है ? कहना क्या है। सब ठीक है—सब ठीक है—

मीनाक्षी मुझसे कोई गलती हो गई ?

कमला देखा दादा—और है कि हमे ही डाट पिला रहे हैं—

दादा डाट पिला रहा हू ? क्या डाट रहा हू ? शम नही आती कहते हुए ! पर इस घर की जो हालत थी वही कायम रहनी चाहिए—

(दीवाल की घडी की ओर देखकर)

साढे नौ। हर हर। कम्मो खडी खडी क्या देख रही हो ? काम करो चलो—

(मीनाक्षी मुडकर अन्दर जाती है। पीछे-पीछे कमला भी चलने लगती है)

कम्मो तुम यही ठहरो—

(कमला रुक जाती है)

इधर आओ—सुनो—यहा अभी एक आसामी आने वाला है—बकवास न कर अन्दर से मेरे मैले कपडे ले आओ—या उसे भी धो डाला—उसने तुम्हारी भाभी जान ने ?

कमला शायद नही—

दादा तभी मैंने उसकी धोती मे छुपा रखे थे—तुम्हारी भाभी का क्या ठिकाना—

कमला पर दादा कौन आने वाला है ?

दादा मेरा सिर—लाख बार कह चुका हू कि टोका न करो—साला कहते कहते तो मेरे सिर के बाल पक गए—

कमला (गाल फुलाकर) नही पूछती—

दादा अब तुम्हे क्या बताऊ —लबी चौडी दास्तान है—

(पास वाले कमरे से जगन्नाथ काच और एक डिब्बा लाकर खिडकी मे रखता है और रसोई की ओर चल देता है—उसके जाते ही)

जिसके आने की उम्मीद नही वह आने वाला है समझी—चार सरया वाला बकरा है—स्पेशल है—एकदम स्पेशल—नोटो की चरबी झुलाते हुए अभी आएगा—वह यहा नही है—तुम्हारी भाभी ?

कमला नही—पर दादा आप उससे घबराते है ?

दादा घबराता हू ? क्या कहा कम्मो ! मैं और उस छोकरी से घबराऊ गा ! मैं—तुम लोगो ने मुझे समझ क्या रखा है ? कम्मो कोई सोच नही

सकता ऐसे ऐसे काम मैंने अकेले कर डाले हैं—
मैंने तुम्हारे बाप ने—एक पाव जेल मे तो—पर
तुम यहा क्या कर रही हो ? क्यो खडी हो यहा ?
कितने बजे है ? पहले जाकर मेरे कपडे लाओ—
भागा—साला वह अभी आ टपकेगा—

कमला (जैसे चली गई हो)
कौन है वह दादा—?

दादा फिर वही बात—

कमला गलती हुई—

दादा करो और गलतिया—अरे बडा अमीर आसामी
है—ब्लेक मार्केट के चक्कर मे फस गया है—चार
दिन हो गए—निकलने का रास्ता ही नही है—
आखिर हमारे कदमो मे आ रहा है—

कमला दादा आपके कदमो मे—?

दादा फिर समझती क्या हो गधे की बच्ची ! बाप क्या
तुम्हारा छोटा-मोटा आदमी है ! जरा मेरे कपडे
ले आओ—एक एक पल कीमती है—

(कमला अन्दर जाती है। दादा चिंतामग्न
खडे रहते है। सोचने के लिए तरह-तरह की
मुद्राए बनाते हैं—कुछ चहलकदमी करते
हैं—पर चलने मे हौसला कुछ दूसरा ही है—
कुछ हसते है—एकदम बनावटी हसी—
कमला खादी के मैले कपडे ले आती है—
बडी—खादी की टोपी—पचा)

कमला दादा यही है न ?

दादा (हडबडाकर) ए ? (देखकर) हा यही हैं—खादी

के कपडे—लाओ इधर लाओ पहले—(कमला कपडे लाकर देती है) और सुनो जरा दरवाजा बन्द कर दो—पर खुला ही रहने दो—) मैं खुद कपडे बदलकर आता हू—तुम यही रुको—कोई आए तो देखना—मैं अभी आता हू—

(कपडे उठाकर पास वाले कमरे की ओर बढते है। कमला खडी रहती है। जगन्नाथ अन्दर से प्लास्टिक के बर्तन मे पानी लाकर खिडकी मे रखता है।)

जगन्नाथ कहा गए कम्मो ?

कमला कौन ?

जगन्नाथ हम दोनो के बाप—और कौन !

कमला तुम्हारे कमरे मे—

जगन्नाथ किसलिए ?

कमला कपडे बदलने के लिए—

जगन्नाथ कपडे बदलने ? अब दादा को भी कपडे बदलने के लिए अलग कमरा चाहिए—(दाढी बनाने की तैयारी शुरू करता है) कम्मो मुझे काल आया है—नई नौकरी का—आज इटरव्यू है—अभी सुबह साढे ग्यारह बजे—

कमला इसलिए दादा के बारे मे इस तरह कहे जा रहे हो ?

जगन्नाथ उसमे कौन काल की जरूरत होती है ? कम्मो—सच कहता हू—आजकल दादा का डर लगता ही नही—

कमला भाभी आ जाने की वजह से—

जगन्नाथ अब कुछ भी कह लो—देखो 'उसके' आने की वजह से दादा कैसे हो गए हैं—जब तब चीखते रहते है—ऐसे तो कभी न थे दादा—मुझे तो सिर्फ याद आते ही पसीना आने लगता है—बचपन मे तो उनके पुकारते ही मेरी नीकर गीली हो जाया करती थी—अब हसी आती है—बेचारे दादा—

कमला बेचारे—दादा को बेचारे कहते हो! दादा क्या ऐसे-वैसे हैं जो—

जगन्नाथ फिर कैसे है?

कमला वे तो हमसे खूब बडे है—लोग सोच नही सकते ऐसा काम वे अकेले कर चुके है—और ऊपर से खूब नीद लेते थे—

जगन्नाथ अब क्या नीद उड गई है?

(अन्दर से मीनाक्षी बीरू को लेकर आती है।)

मीनाक्षी बैठो यहा और पढो—

जगन्नाथ क्या हुआ?

मीनाक्षी रसोई मे बैठकर पढ रहे है—मे कहती हू औरतो मे आदमी का क्या काम? यहा बैठो और खूब पढो—

कमला पर भाभी—

मीनाक्षी अब उन्हें पढने भी दोगे तुम लोग या नही? नही तो वे फिर रसोई मे जा बैठेंगे।

कमला पर—

मीनाक्षी अब आप अपनी दाढी वाढी जल्दी कीजिए—नही तो रसोई मे जल्दबाजी करोगे—

(अन्दर चली जाती है)

(बीरू एक कुर्सी पर बैठकर पढने लगता है। पीछे की खिडकी पर जगन्नाथ दाढी करने लगता है। कमला खडी है। पास के कमरे से मैंने से कपडे पहनकर दादा आते है।)

कमला हाय राम दादा!

दादा (खुद पर खुश होकर) क्यू कैसा लग रहा हू ?

कमला दादा—टोपी तो उल्टी पहन रखी है आपने—

दादा पहनी है न—जानकर भी उल्टी ही पहनी है—दूसरो को टोपी सीधी पहना देनी चाहिए—और उसके पहले अपनी टोपी उल्टी ही होनी चाहिए। इससे अपनी बुद्धिमत्ता छुप जाती है और सामने वाला बेफिक्र हो जाता है। खैर तुम क्या समझोगे—पचा साला धुला हुआ-सा लग रहा है। इसे धोने के लिए किसने कहा था। ए ? खैर छोडो—चल जाएगा—

कमला हाय राम—दादा आप तो बिल्कुल दूसरे ही लगते है—पहचान भी नही सकता कोई—

दादा नही पहचान सकता न ? दो ताली—नही—बस अब तुम अदर जाओ—अरे (पढते हुए बीरू की ओर दृष्टि जाती है) बरखुरदार तुम यहा ?

बीरू (किताब मे ही ध्यान) वे वैठे हैं—भैया उधर—

दादा फिर आप कौन है ?

बीरू मैं बीरू—मतलब मैं भी (किताब बन्द कर) बोलिए—

दाद बोलिए क्या ? घर को क्या फ्री लायब्रेरी समझ

रखा है या सार्वजनिक बागीचा—? ए ?

बीरू दादा आप साफ-साफ क्यू नही कहते—

दादा यहा पढने न बैठो—अन्दर जाओ— यहा एक आसामी आने वाला है—

बीरू पर भाभी ने तो यही पढने के लिए कहा है—

दादा मैं जो कह रहा हू—अन्दर बैठो—रसोई मे—

बीरू पर भाभी—

दादा (उफनकर) बकवास बन्द। अन्दर। कहता है भाभी ने कहा है—

(जगन्नाथ की ओर मुडकर)

और आप ?

(जगन्नाथ दाढी बना ही रहा है।)

दादा अजी—जनाब—

जगन्नाथ (मुडकर देखते हुए) मैं—? मुझे कह रहे हैं ?

दादा हा—आपको ही—। दाढी अन्दर कमरे म बनाइए —अपने कमरे मे—यहा एक आसामी आने वाला है—

जगन्नाथ तो आने दीजिए—

दादा आने दीजिए—आपकी दाढी देखने के लिए नहीं आने वाले समझे ? कुछ जरूरत की बातें होनी हैं यहा—समझे ?

जगन्नाथ मुझे इटरव्यू के लिए जाना है—दादा। अन्दर उजाला कम है—इसी वजह से यहा निबटा लेता हू—

दादा इसे क्या सैलून समझ रखा है ?

जगन्नाथ मैं कहा कह रहा हू—पर दादा आप भी तो यही दाढी करते है।

दादा हा-हा मैं तो झक मारता हू—जग्गू पहले दाढी रोको—

कमला पर दादा—

दादा रोको मतलब रोको—बन्द करो दाढी—

कमला पर दादा ग्रापके वे ग्राने तक दाढी बन जाएगी।

दादा पगली उसकी साइड लेती है? क्या हो गया है तुम लोगो को? मेरे घर मे मेरी ही बात नही मानी जाती?

जगन्नाथ बस ग्राधी बन ही गई है—बची हुई ग्रभी बन जाती है—

दादा नही।

जगन्नाथ दादा—पर इन्टरव्यू—

दादा ग्राग लगाग्रो साले इन्टरव्यू को—तुम्हारे उस इन्टरव्यू ग्रौर नौकरियो की बाते मुझे न सुनाग्रो जग्गू—क्या कमाग्रोगे म खूब जानता हू। कौन-सी नौकरी की जावेगी—चपरासी की या पोस्टमैन की—

जगन्नाथ दादा—

दादा तुम लोगो के दिमाग क्यू चढ गए है मैं इसे खूब जानता हू—समझे?

कमला भैया—दादा कह रहे ह तो चले ही जाग्रो न ग्रदर—ग्रपने कमरे मे—

जगन्नाथ ग्ररी कम्मो मैं कहता हू इतने सालो से यही सब होता रहा—पर तब कुछ नही कहा गया—यही तो हम लोग खेला करते थे—सोया करते थे—

यही सारी बातें हो जाया करती थी—तब तो अनाथ आश्रम के अनाथ बच्चे कह दिया गया।

दादा बकवास बन्द—तुम लोगो के पालने पोसने के लिए ही इस तरह कहा गया था। समझे ?

जगन्नाथ हमारे पालने पोसने के लिए सालो हमारी ही बिक्री—

दादा बरखुरदार—सीधे अदर जाओ—

(जगन्नाथ तेजी से सामान उठाकर अदर के कमरे मे जाता है।)

साली एक एक आफत—बैठे ठाले खाने वाले हैं सब—

कमला पर दादा वे आने वाले हैं न—

दादा अरे हा—(पढना हुआ बीरू दीखता है—एकदम उफनकर) बीरू गधे के बच्चे—मैं क्या बक रहा हू ? साला बोधिवृक्ष सा यही जमा हुआ है—साली बुद्ध कथाए क्या पढने लगा है अपने आपको बुद्ध समझने लगा है—बुद्धू कही का—

(बीरू तड से किताब बन्द करता है—अदर जाकर दरवाजा लगा देता है।)

साला सभी ने मिलकर मछली बाजार लगा रखा है।

कमला पर दादा वे आने वाले हैं न ?

दादा हा हा मैं जानता हू। पर इस घर के मारे तो नाको मे दम आ गया है (घडी देखकर) साढे नौ पाच।

पगली—चलो तुम भी अन्दर—जब तक मैं न बुलाऊ इधर न आना—समझी ? और न किसी को आने देना—खास तौर पर तुम्हारी उस भाभी पर निगरानी रखना—नही तो साले फिर लाख के हजार हो जाएगे—ऐसा चास फिर नही मिलेगा—गह योग ऊचे है—अच्छा खासा योग है—तुम अदर चलो—और सुनो—मेरी कही हुई बातें याद रखना—तुम्हारी भाभी—

कमला हा—दादा।

(रसोई की ओर जाता है।)

अब दादा अकेले ही हैं। एक लम्बी सास लेते हैं। दरवाजे और खिडकिया के परदे ठीक ठाक करते है। जाकीट के बटन ठीक लगे हैं या नही टटोल लेते है। टोपी सिर पर कुछ तिरछी रख लेते है। रसोई या दरवाजा लुढका लेते है। धर्मादाय पेटी छुपा देते है। अलमारी से चरखा निकालकर टेबल पर रखते हैं। एक प्लेट म खजूर निकालकर रखते है। ध्यान बीच बीच मे रसोई की ओर—फिर सीधे रसोई की ओर वाले दरवाजे की कुडी लगा देते हैं—अब कुछ राहत सी महसूस होती है।

चाल बदलकर कुछ चहलकदमी करती चाल। स्नेहिल मुद्रा दो तीन बार बनाते हैं। बुद्ध के पुतले को नमस्कार करते हैं। फिर चरखे के पास आकर बैठते हैं—उठते है। जेब मे कागज निकालकर देखते है—सारी बातें याद रखने के लिए—

दादा साला दिमाग मे कुछ रह हो नही पाता।

(नीचे मोटर को आवाज। मोटर ठहरती है। एकदम होशियार हो जाते ह—उत्साह)

आ गया वकरा—

(तेजो से जाकर बाहर के दरवाजे की कुडी निकाल लेते हैं—फिर तेजो से चरखे के पास आ बैठते है। सूत कातने की पोज वनाते हैं—वाहर वाले दरवाजे पर दस्तक होती है।)

आदमी दादा पडित है ?

दादा (खास आवाज मे) हा भाई—अदर आओ—दर वाजा खुला ही है।

(दरवाजा खुलता है। दरवाजे मे एक आक र्षक व्यक्तित्व वाला आदमी खडा है—रौवीला चेहरा—चेहरे पर चिंता हाल चाल मे अजीब नवसनेस। लगातार सिगरेट पीए जा रहा है। एकदम बुझा देता है।)

आदमी (एक बार दादा की ओर देखकर फिर सारे कमरे की ओर नजर डालकर) नमस्कार।

दादा (वही खास अदाज कायम रखते हुए) जय भगत। भाई आपकी तारीफ।

आदमी मैं अपना सदेशा भेज ही चुका था। मेरा नाम लक्ष्मीकान्त—

दादा लक्ष्मीका त—मतलब सन ततीस मे आप साबर-मती मे थे—?

लक्ष्मीकात सावरमतो ? सावरमती मे तो कभी नही था। मेरे काम के बारे मे आप जान ही चुके होंगे ?

दादा हा, किसी काम से ही आए होग—मुझे लगता है आपको वही देखा है। महादेव भाई के यहा मैने कहा भी था—

लक्ष्मीकात केन आय टेक दा सीट ?

दादा शायद लाठी चार्ज के समय—

लक्ष्मीकात (बैठते हुए) देखिए मेरे पास वक्त नही है—यदि आप इजाजत दें तो—

दादा भाई मुझे तो आपके व्यक्तित्व मे गोपाल भाई की छाया दीखती है। अलमोडा जेल मे हम दोनो साथ साथ थे—एक क्लास मे—

लक्ष्मीकात देखिए मेरे पास वाकई वक्त नही है—जो कुछ कहना-सुनना है एकबारगी कह-सुन लिया जाए—आइ अम इन हरी—

दादा मुझे तो कोकिलाबेन ने वर्धा मे साय सभा के वक्त जो कहा था बिल्कुल याद आ रहा है—बडी मीठी बात थी—

लक्ष्मीकात देखिए मैं इस तरह का प्रश्न सुनने की मन स्थिति मे नही हू। इस समय मेरे सामने बडे बडे सवालात है।

दादा मीराबाई के ही अगर शब्दो मे कहना हो तो

लक्ष्मीकात छोडिए भी काम की बातें कीजिए जल्दी वही जरूरी भी है।

दादा वाह क्या बात कही है। देखिए कैसा योग है—आज सुबह ही मेरी डायरी मे तत्वचिंतन के बारे

मे तीसरी लाइन या चौथी लाइन—पाचवी हो सकती है—

लक्ष्मीकात इनफ इनफ ग्राफ इट। प्लीज—हर पल का अपना महत्व है। मेरा टाइम खराब न करें तो अच्छा होगा—बस खाम खास बाते कर ली जाए—

दादा (उसके सामने कुर्सी मे ही पालथी मारकर बठते हैं) कहिए—यह मन की एकाग्रता के लिए सूत कातते हुए सुनू—? आश्रम की आदत है—क्या करू? बापू जी कहा करते थे सूत कताई का सदव विचार करना चाहिए लगातार सूत कताई

लक्ष्मीकात ग्राय मे इनफ। आखिर आप कर क्या रहे हैं? मेरी हालत पर तो गौर कीजिए पडित जी। सारी जिंदगी बर्बाद हुई जा रही है जेल जाना पडेगा।

दादा गोकुल भाई कहा करते थे—तामसी मन शैतान का घर होता हे।

लक्ष्मीकात (खडे होकर) वुइल यू स्टाप दिस ब्लडी गोकुल भाई एण्ड आल द रबिश—मैं क्या इन बातो को सुनने के लिए आया हू? मेरे काम की बातें आप को बता दी गई हैं। आप काम कर सकेंगे कि नही? कैसे करेंगे लेट मी नो न हो सकने वाला हो साफ मना कर दीजिए—मैं और कोई राह खोज लू गा—अब तो काफी आदत पड गई है—जिनके लिए हजारो रुपये खच किए थे वे भी मुझे बचाने के लिए तैयार नही है। उनका चरित्र और मानशस आडे आ रहा है। मेरे सगे भाई मेर लिए कुछ करना नही चाहते—वे सोचते हैं मैं डूबती नाव हू सभी मुकर गए हैं पत्नी भी।

इट्स आल राइट—मुझे खुद ही सब कुछ करना होगा मुझे आपका नाम के० टी० ने बताया था

दादा हा हा उनका श्रद्धा है मुझ पर—बडे दयालु हैं

लक्ष्मीकात कौन के० टी० ? अव्वल नबर का बदमाश है। आय नो हिम बैटर उसे मैं अच्छी तरह जानता हू पडित जी वह भी आप लोगो के हो बिरादरी का है श्रद्धालु जीव मेरे किस काम आएगे इस समय तो मुझ इन्फ्लुएस चाहिए—आपका है—दिल्ली मे मुझ यही बताया गया है है या नही ? एक शब्द मे खुलासा कर दीजिए

दादा के० टी० भाई ही जाने

लक्ष्मीकात दूसरो के हवाले क्यू देते है—आप अपनी बात बताइए पडित जी वक्त तो ऐसा है कि मैं चोरो पर भी विश्वास कर सकता हू किसी भी पत्थर को सिंदूर लगाने के लिए तैयार हू। कहिए दिल्ली मे कहा इन्फ्लुएस है आपका ?

दादा अब आप इन्फ्लुएस कह लीजिए—पर मैं तो ऋणानुबध मानता हू (खजर आगे करते हुए) लीजिए अरबिस्तान के है खजूर। दूध भी है पर बकरी का है

लक्ष्मीकात आप कहे तो गधे का भी पी जाऊगा—वक्त पडे वाका तो गध को भी कहे काका। कहा है न किसी ने। काम हो जाना चाहिए। बस।

दादा हा वैसे कभी कभार दिल्ली जाता हू ता स्वागत—आव भगत जरूर करते हैं—बाते होती हैं—मत-लब स्वतत्रता के पूर्व की यादे स्मृतिया !

लक्ष्मीकात बस बस उन्हे तो ग्राप ही सजोकर रखिए—वक्त पर काम आएगी। पहले बताइए आपकी मिनिस्ट्री मे कहा लिंक है ?

(पास वाले कमरे से जगन्नाथ दाढी का सामान लिए ग्राता है ग्रौर सीधे रसोई की ग्रोर बढ जाता है।)

दादा (ग्रनजान ही) जग्गू—(सभलकर—हडबडी मे) गीता का तेरहवा ग्रध्याय पढिए—मन मे बेहद राहत मिलती है—

(जगन्नाथ रसोई का दरवाजा खोलकर अदर चला जाता है)

लक्ष्मीकात पसे की ग्रफरातफरी ग्रौर खामोखाह हवा महल बनाना नही चाहता—मन को बैलेंस्ड रखना पडता है। (जेब से सहज ही रिवाल्वर निकालकर फिर जेब मे रख लेता है।) मुझमे उतनी ताकत है—ग्रौर ग्रगर ग्रापने मेरा काम करने का वायदा कर दिया तो एडवास भी दे सकता हू—डोट वरी —ग्रभी मेरे पास हैं—

दादा (ढोग बनाए रखते हैं) भाई—ग्राखिर पैसा है क्या ? कहा है—'कागज केरी नाव'—

लक्ष्मीकात हा हा उसी कागज केरी नाव के लिए ही तो है सब कुछ पडित जी उसी के लिए ग्रापके सारे घधे है—उसी लिए ग्रापकी मीरा बाई ग्रौर बापू जी

की बकवास है—बोलिए है न ? नाउ लेट अस कम टू द पाइट—के० टी० और आप कितना चाज लेंगे ? साफ साफ बता दीजिए—किससे मिलेंगे आप मेरे लिये—और किस तरह सब कुछ होगा ?

दादा कौन ? वह—अपना क्या नाम सो—टी० देव राजन्। वित्त मत्रालय मे हैं—बयालिस मे येरवडा जेल मे था। मीराबाई के भजन दक्षिणी तज पर ऐसा गाता था—ऐसा गाता था कि क्या बताए अब आपको—

लक्ष्मीकात भजन उसे गाने दीजिए—उसके हाथ मे कुछ नही है—आगे बोलिए उसे तो मैं पहले ही टेप कर चुका हू।

दादा फिर वह अपना ईश्वर भाई—जेल मे थे तो अपनी चीजें दूसरो को यू ही बाट दिया करता था—हर चीज पहले मुझे मिला करती थी—अजी वह

लक्ष्मीकात बेकार—उसे पहले ही टटोल चुका हू—नेक्स्ट—

दादा नेक्स्ट—सच पूछा जाए तो बिल्कुल टेप कार्ड मत लब हमारे शिवराम भाई—डेप्युटी मिनिस्टर। वे भी बैठने उठने वालो मे से ही हैं। अजी उनका साला और हम—दोनो अडरग्राउड थे—वे अरेस्ट हो गए और हम लडते ही रहे—

लक्ष्मीकात कोई फायदा नही—शिवराम भाई तो मेरे पीछे ही पडे हुए है—
(उठता है) अब चलता हू—थैंकस फार द मोअर एक्सपोरिअस। एण्ड गुडबाय स्मार्ट चेप (चलने ही लगता है)

दादा (जोर से सिर खुजलाकर—एकदम उसे रोककर) अब वक्त आ ही गया है तो कहने मे कोई हर्ज नही है—यहा के प्रसिद्ध आचार्य रमई काकाजी—(लक्ष्मीकात रुकता है) हा वे तो (इसी समय जगन्नाथ रसोई स निकलकर अपने कमरे मे चला जाता है—जाते ही दरवाजा बद कर लेता है) वे बडे आदमी हैं—यही के नही दिल्ली के भी महान सर्वोदयी—प्रायमिनिस्टर तक पहुच सकते हैं—

लक्ष्मीकात हा, उनका नाम मुझ तक जरूर आया—पर लोग कहते हैं कि वे इस तरह के काम करते ही नही—बडे सिद्धातवादी है। एकदम साफ दिल वाला आदमी है—किसी चीज का शौक नही—

दादा (ढोग को छोडकर) ख्याल है आपका—हकीकत कुछ और ही है—मैं उन्हे खूब जानता हू—

लक्ष्मीकात (इटरेस्ट और सशय के साथ) ऐसा—?

दादा और बिल्कुल मेरे इशारे मे हैं—अरे भाई हम दोनो ने साथ साथ ही तो नमक सत्याग्रह किया था—मैं आगे और वे पीछे! यहा मेरे पास आते रहते हैं—मेरा तो बिल्कुल जिगरी दोस्त है—

लक्ष्मीकात यू डोट से?

दादा अब क्या बताऊ आपको। घटो मेरे यहा बैठे रहते है—मैं अगर कह दू तो चाहे जो करने के लिए तैयार हो जायेंगे—अजी वे भी यार लोगो मे से ही हैं—सब कुछ करते है—इधर कुछ पसो की वजह से तग भी हैं—किसी चक्कर मे ही—अजी नैतिक ब्रह्मचय होता ही क्या है?

लक्ष्मीकात नो—नो—यू डोट से!

दादा अब झूट क्यू बालू —प्रमाण दे सकता हू—अरे भाई उनकी नस नस मैं पहचानता हू।

लक्ष्मीकात दिस इज इटरेस्टिग—
(कश खीचता है)

दादा अरे भाई तीन बार मुश्किलो से तो मैंने ही उन्हे छुडवाया था—बड नाजुक किस्म के काम थे—बस कुछ न पूछिए—

लक्ष्मीकात (कश खीचत हुए—बैठते हुए) आय सी।

दादा फिर—कुछ करू आपके लिए ?

(बाहर से 'बेटा मीनाक्षी—मीनाक्षी बेटे' आवाज काका की आती है। दादा कुछ हड बडा जाते हैं।)

(काका दरवाजे मे आ खडे होते है। काख मे एक पुस्तक है)

काका मीनाक्षी—मीनू बेटे—(दादा का बदला हुआ अवतार देखकर) ओ हो दादा तुम इतने बदल गए—ऐ ? अरे तुम ही हो और कोई ? तुम्हें तो पहचानना मुश्किल हुआ जा रहा है।

(इद गिर्द का माहौल देखकर)

सारा ट्रासफर सीन दीख रहा है। अरे भाई हमारे दर्जे मे कब से आ गए ? ए ?

दादा (नाखुशी से—पर सब कुछ सभालते हुए) ऐसा क्या कह रहे है आचार्य ? हम तो आप ही के साथ है।

काका	अरे भाई हम जैसे सर्वोदयी के इतने भाग कहा !
कोयल के घोसले मे कौए का अडा कहा से आ गया ! ए ! (दादा की चाल जानकर—धीमे से) अच्छा अच्छा काम मे हो—समझ गया। यू ही कुछ बक गया—अच्छा छोडो—बहू घर मे हैं न ? वैसे वह जाएगी भी कहा !

दादा	अदर आइए काका—अदर।

काका	अदर ! क्यू भाई ,

दादा	पहले अदर तो चलिए फिर बताता हू—चलिए तो सही—

(काका को करीब करीब रसोई की ओर ढकेलते ही हे)

काका	अच्छा भाई चल रहा हू—(रसोई की ओर बढते हैं—उनके जाते ही दादा रसोई के दरवाजे की कुडी लगा देते है—कुछ राहत पा जाते हैं)

लक्ष्मीकात	(काका गए उधर देखते हुए) वाय द वे—ये ?

दादा	मिलाओ हाथ —काका आचार्य—अब तो समझ ?

लक्ष्मीकात	आदमी तो लम्बा लगता है—

दादा	पर है अव्वल दर्जे का ढोगी—मुझसे पूछो—खर हमे क्या लेना-देना ? अपना काम हो जाए बस—तिकडम लडाना अपना काम है—और वह अपनी जेब मे है।

लक्ष्मीकात	यू मौन रसोई मे—

दादा	अब शुरु शुरू में दस तो लगेंगे (एक ऊगली बनाते है) क्या समझे ? अलावा दिल्ली तक का आने

जाने का हवाई जहाज का भाड़ा और दिल्ली के आलीशान होटल में दो दिन टिकने का खर्चा—इसके बगैर तो वह आदमी अपनी जगह से हिलेगा ही नहीं—बड़ा हिसाबी आदमी है—पैसे के पीछे तो जान देने के लिए तैयार हो जाता है—हां, अब इधर-उधर कुछ तो पैसे डालने ही पड़ेंगे। कुछ भी क्यूं न हो—अब दिल्ली तो आधुनिक तीर्थ है। इधर पैसे रखो उधर पैसे चढ़ाओ—इस मूर्ति के आगे—उस मूर्ति के आगे—गाने उनके और चेले-चपाटे हैं ही। साली हजार झमटें हैं। कुल मिलाकर समझिए दो हजार—रुपया तो लगेगा ही लगेगा—मतलब इसके बिना तो पत्ता ही नहीं चलेगा—समझ लीजिए आप—और हां सब कुछ चट पट—शुभस्य शीघ्रम—क्या समझे?

लक्ष्मीकांत ऐसा कौन कहता है? मीराबाई या बापूजी?

दादा ह ह ह (हंसते हैं) नहीं हम ही जो कहते हैं—अच्छा तो फौरन—(पंजे पर पंजा मिलाते हैं।)

लक्ष्मीकांत पंडित जी मेरा काम हो जाए तो कित्ता लेंगे—पहले यह तो बता दीजिए?

दादा (हड़बड़ाकर) ए? बताया नहीं? अच्छी साली यह बात तो रह ही गई है—इसे कहते हैं विस्मरण—पैसे की चिंता की वजह से दिमाग ही गड़बड़ा गया—कम से-कम यह समझिए दस तो लगेंगे ही।

लक्ष्मीकांत बस इतने ही? पंडित जी दस लाख के काम के पीछे इतने ही? पंडित जी फिर एक बार सोच लीजिए—

दादा अच्छा तो बारह कर दीजिए।

लक्ष्मीकात पडित जी आप उम्मीद बडी करते है। एनो वे मुझे आपका आफर मजूर है—एकदम मजूर—

दादा व्हेरी गुड। अब एडवास दे दीजिए—क्या समझ? एक बार उस आदमी को दे दू तो साला सवाल ही मिट जाएगा—

(लक्ष्मीकात जेब से नोट निकालकर गिनने लगता है। इसी वक्त रसोई का दरवाजा उधर से खटखटाया जाता है—जोर जोर से)

काका (बद दरवाजे के पीछे से) अच्छा बेटी बैठता हू—बैठता हू—बाहर के कमरे मे ही बैठता हू—बनने दो तुम्हारी चाय—दादा अरे भाई हडबडी मे दर वाजा ही लगा दिया क्या? अरे भाई खोलो तो तो सही—

(दादा हडबडा जाते हैं)

दादा ओ दादा—

लक्ष्मीकात शायद वे बाहर आना चाहते है—(नोट गिनना बद कर देता है)

दादा (हडबडी मे ही) ए? हा—हा। लाइए आप—

लक्ष्मीकात मैं गिनता हू—तब तक आप दरवाजा खोलिए—

(दादा बे मन से दरवाजा खोलते है)

काका (बाहर आते हुए)

क्यू भाई एक तो तुम मुझे अदर भेजो और तुम्हारी बहू मुझे बाहर भेज देती है—कहने लगी बाहर जाकर बैठू। तुम लोग आखिर मेरा करने क्या वाले हो? अच्छा भाई बैठना हू यही—

(आवाज धीमी कर)

दादा मेरी वजह से तुम्हें तो कोई तकलीफ नही हो रही? तुम अपना काम तबियत से करते रहो। ए? मैं यही बैठे रहता हू—कुछ पढता हू (पत्रिका मे देखते हुए) इन साहब ने हमारे विनोबा पर गहरा व्यग्य किया है। गहरा मतलब टू द पाइट। भूदान के खिलाफ इनके विचार पटते भले ही न हो। पर विचार सोचने लायक जरूर है—खाम-खाह तुम क्यू परेशान होते हो—तुम अपना काम करते रहो।

(तेज आवाज मे)

बेटी मीनाक्षी मैं बाहर ही बैठा हू।

(मुह फेरकर चश्मा पहनते हैं और पत्रिका पढने मे तल्लीन हो जाते हैं)

लक्ष्मीकात (दादा से) यैस दो हजार लीजिए—

(दादा अचकचाते है काका पढने मे लगे हैं)

(फिर दादा से) ले रहे हैं न? पूरे दो हजार है—

(दादा इशारे से ठहरने के लिए कहते हैं—अदर ही अदर जलते रहते हैं)

लक्ष्मीकात (इस माहौल से परेशान होकर) एसक्यूज मी—

दादा (एकदम उफनकर) हा हा लक्ष्मीकात।

काका (पीछे मुडकर देखते हुए) क्या हुआ भाई।

लक्ष्मीकात (उन्हे) नमस्ते।

काका ए हा हा नमस्कार (किताब मे ध्यान लगाते हैं—फिर ऊपर देखकर) आप अपना काम करते रहिए—हमारी वजह से क्यू परेशान होते हैं। मैं तो बस उसी के लिए आता हू—जैसे चाहे नाचता हू—मैं कहता हू—चाय नही लूगा—पर वह है कि मानती ही नही—कई बार कहा कि कई सालो से चाय छोड रखी है—पर सुनती ही नही। आखिर कहना ही पडा। अच्छा पिला रही हो तो पीना ही होगा—बोली कि बाहर जाकर बैठिए—सो बैठा हुआ हू—बान यू है बस—आप अपना चलने दीजिए—

(किताब मे ध्यान लगाते हैं पर परेशान ही हैं)

लक्ष्मीकात (दादा के इशारे पर ध्यान न देकर काका से ही) मैं—मैं हू लक्ष्मीकात।

(काका गदन उठाकर देखते हैं)

वडा भारी विजनेस है अपना। हा अब यू कह लीजिए कि था—कई कपनियो का मैनेजिग डाय रेक्टर हू—कम से कम फिलहाल तो हू ही—मेरे काम के बारे मे ये पडित जी आप से कहेगे ही।

दादा (जल्दबाजी मे) हा हा कहूगा। अब आप लक्ष्मी कात जी चलिए। ए—? फिर मिलेंगे ही (धीरे

से) ऐसे काम इस तरह नही हुआ करते—
समझे ?

काका ठहरो दादा—क्यू जी—क्या काम है आपका—
अगर काम है ही तो बीच मे दादा की क्या जरूरत
है ? दादा को अपने कामो से ही कहा फुरसत
मिलती है—क्यू भाई—दादा

दादा नही-नही—मैं ही बताऊगा। (लक्ष्मीकात से)
आप फिक्र न करे चलिए आपको रास्ते तक छोड
आता हू। बाकी बाते बाहर ही हो जाए गी—

(फिर धीरे से)

सीधे बात करने से ये कही मानते है—

काका अरे पर उन्हें इस तरह भगा क्यू रहे है—? काम
हो तो सीधी बात करने दो न ? आप अपनी
कहिए—मैं ही हू काका आचार्य—हा, भ्रम न हो
इसलिए कह रहा हू—पहले बता देना ही ठीक
होता है।

दादा (लक्ष्मीकात) लक्ष्मीकात जी मेरी बात मानिए
आप चलिए।

काका दादा—देखो तुम बडी अशिष्टता कर रहे हो।

दादा आप बेकार गैर समझ रहे है आचार्य—उन्हें जल्दी
है—कब से जल्दबाजी कर रहे हैं—कहते है हर
पल का महत्त्व है—क्यू लक्ष्मीकात जी—ठीक
कह रहा हू न मैं ?

काका हा, पर वे खुद अपने मु ह से तो कहे—क्यू जी
आपका क्या नाम—लक्ष्मीकात जी—आप बहुत
जल्दी मे है ? बातें करने के लिए समय हो तभी
बाते कीजिए।

दादा वाकई लक्ष्मीकात जो आप चलिए—क्यू बेकार टाइम बर्वाद करते हे टाइम इज मनी—चलिए।

काका दादा—अलग हटो पहले—हो अलग। वे बोलने वाले और मै सुनने वाला—फिर तुम्हारे बीच मे पडने की क्या जरूरत है? ए? अलग हटो देखें।

(दादा और परेशान होकर अलग हटते है)

दादा (धीमे स्वर से) लक्ष्मीकात जी फिर मुझे गालिया मत देना काम बिगड जाएगा।

काका कहिए लक्ष्मीकात मुझ से कौन सा काम था?

(अदर से मीनाक्षी तीन कप चाय ट्रे मे लाती है)

मीनाक्षी मामा देखा कितने जल्द चाय बना लाई—

काका और क्या मामा को चाय बनाने मे तुम देर क्यू लगाओगी।

मीनाक्षी बस मामा—मेरी हाथ की चाय से आप आज म चाय पीना शुरू कर दीजिए—कही जाने पर चाय के लिए मना करने पर अच्छा नही लगता मामा।

काका साथ मे तुम भी तो लो—

दादा (एक ओर) लक्ष्मीकात जो अभी भी मेरी बात मान लीजिए फिर मेरी कोई जिम्मेदारी नही रहेगी—इस तरह की बातें नही हुआ करती—

(मीनाक्षी तीनो को चाय देती है)

लक्ष्मीकात (कृतज्ञता से) थक्स। काका साहब बस सक्षेप मे मे ही बताता हू—आपका ज्यादा वक्त नही लूगा।

काका अभी जल्दी की बात क्या करते ह—जल्दबाजी

के लिए मैं कोई मत्री तो हू नही । ईश्वर की कृपा से अभी काफी वक्त है—आप कहिए अपनी वात—

लक्ष्मीकान मैं जरा आफत मे हू—दिल्ली के वित्त मत्रालय के लोग मेरे पीछे हाथ धोकर पडे है—वस यह समझिए कि जान पर आ बनी है—

काका वित्त मत्रालय—और आपके पीछे पडा है। क्यू नये कर खोज नही पा रहे वे ? ए ?

मीनाक्षी मामा पहले चाय तो पी लीजिए—

काका हा हा पीता हू वेटी । लक्ष्मीकात जी लीजिए—तो भाई दादा तुम वडे चायवाज हो—हा तो लक्ष्मीकात जी आप वित्त मत्रालय के बारे मे कह रहे थे न ?

लक्ष्मीकान नही—मैं तो अपने बारे मे कह रहा था—इनकम टैक्स को वडो भारी रकम मेरे नाम निकली है—और मेरे कपनियो के कुछ डायरेक्टर्स को फुसला कर और भी कुछ काम करवाने वाले है—

काका , अरे भाई तो तुम पडित जी के पास किस लिए आए थे । नही वैसे बताने लायक न हो तो रहने दीजिए ।

लक्ष्मीकात बात दरअसल यह है कि मुझे पता लगा है कि पडित जी के केबिनेट मे कुछ कानटेक्टस हैं—

काका (चाय पीते हुए आश्चर्य से) ए ? इन पडित जी के ?

(अदर आती हुई मीनाक्षी ठहर जाती है)

अरे दादा इतने वडे आदमी कब से हो गए ?

लक्ष्मीकात वे ता स्वतत्रता सग्राम के कार्यकर्त्ता थे—और

आज के कुछ टाप इटलेक्चुअल लोगो के साथ वे भी जेल मे थे ।

काका — कौन ? ये दादा ? हा, जेल मे था तो सही—पर इसके साथ के लोग टाप इटलेक्चुअल्स कब से हो गए ?

लक्ष्मीकात — और आपके साथ इनकी तभी से दोस्ती है—

काका — हा दोस्ती तो है—अभी भी है—झूठ क्यू बोलू —जेल मे ही हमारी दोस्ती हुई—बात सही है।

लक्ष्मीकात — अब तो मुझे कोई उम्मीद नही है। केस मेरी फेटल है—सभी ओर के दरवाजे बद हो चुके ह—मुझे तो आज यू लगने लगा है जैसे चारो ओर से मुझ पर बदूक दागी जाने लगी है—बस फायर का हुक्म मिलना शेष है—

काका — अरे-अरे—क्या कह रहे हो लक्ष्मीकात—

लक्ष्मीकात — हकीकत तो यही है—बस अब तो मैं बर्वाद हो गया—शायद जेल जाना होगा—खैर जेल की कोई बात नही—पर बर्बादी ।

काका — बिल्कुल ।

लक्ष्मीकात — फिर भी कोशिश करना अपना काम है। अगर वही न कर सके तो आखिर होगा भी क्या ? यही तो सवाल है—

काका — इस हालत मे भी आपकी मन स्थिति ठीक है—यह भी कोई छोटी बात है लक्ष्मीकात ?

दादा — (एक ओर धीमी आवाज मे) लक्ष्मीकात—खाम-खाह देरी कर रहे हो ।

काका — पर लक्ष्मीकात—सरकार द्वारा लगाए आरोप आखिर कहा तक सही हैं ।

लक्ष्मीकात पूरे-पूरे सही है—

काका मतलब आपने कर चुकाया ही नही—पैसो मे अफरा-तफरी की।

लक्ष्मीकात देट्स देट—उसके वगैर इतना बडा काम हो कैसे सकता था ? उम्मीदो का तकाजा था—श्रौर आय मेट बिजनेस—

काका फिर तो सरकार की कोई गलती नही है ?

लक्ष्मीकात ना—

काका फिर आप दादा के पास किसलिए आए थे।

लक्ष्मीकात कहा तो सही—कोशिश करना आदमी का काम है—

दादा (धीमी आवाज मे) मेरी मानिए अभी भी यहा से खिसक लीजिए।

काका ठहरो जी दादा—तो भाई लक्ष्मीकाव जी—ये दादा—महाराज आपके लिए दिल्ली मे कुछ कोशिश करने वाले हैं ?

लक्ष्मीकात मतलब यह है कि श्रापके जरिए ही वे कुछ करने वाले थे—

काका ए ? मेरे जरिए ? (मीनाक्षी के हाथ से ट्रे गिरते-गिरते वचती है) आपके ऐसे पापो से मैं श्रापको मुक्ति दिलवाऊगा ? मैं ? ऐसा इन दादा ने श्रापसे कहा ?

लक्ष्मीकात यू ही कौन कह रहा है ? आपके हिस्से के साथ जो कुछ लगेगा वह मैं दूगा (जेव से नोट निकाल कर) यह लीजिए पहला एडवास दो हजार।

काका (कापते हुए) च-च-च

(पास के कमरे से जगन्नाथ श्रौर वीरू श्रा

खडे होते है—अंदर से कमला भी आ जाती है।)

लक्ष्मीकात (दादा से) पडित जी पैसे आपको दू या सीध इन्ही को दे दू ? मेरा तो काम होना चाहिए बस— (काका सयम की स्थिति के लिए गीता की पक्तिया दोहराते है) अगर इतने मे काम न चल सकता हो मैं और भी देने के लिए तैयार हू— आखिर जिंदगी और मौत का सवाल भी तो कम नही है—आप चाह उतने ले लीजिए—पर मेरा काम होना चाहिए। आपकी हर इच्छा मैं पूरी करूगा—आप मौन पडित जी ने मुझ सब कुछ बता ही दिया है। आप यकीन रखिए—मैं हर बात सीक्रेट रखूगा।

काका (सभलकर—कापते हाथो से बेंत उठाते हुए) बेटा मीनाक्षी—चलता हू—अब चलता हू—

मीनाक्षी मामा—(आगे बढती है)

(काका गुस्से से दादा की ओर देखते हैं— तिरस्कार की नजरो से देखते हैं)

काका मुझे जाना चाहिए बेटी—न सोचा था कि ऐसा भी प्रसग आ सकता है उसी के लिए चिंता किया करता था। शरीर—मन मारता रहा—हर पल चिंता मे डूबा रहता था—सोचता था कही दाग न लगे—बस—वही हुआ—आखिर दाग लग ही गया—अच्छा बेटी नसीब मेरा—और क्या कहू—

चलता हू बेटी—

(आवेग मे लकडी टेकते निकल जाते हैं। कुछ देर खामोशी। लक्ष्मीकात दादा से 'गुड बाय माय -मार्ट चैप' कहकर निकल जाता है—पैसे जेब मे डालकर। मीनाक्षी चुपचाप अपने कमरे मे चली जाती है। जगन्नाथ गुस्से मे अपने कमरे मे चला जाता है। कमला वही पर है। दादा मन ही मन उफन रहे हैं नीचे मोटर की आवाज सुनाई देती है। तभी दादा सिर की टोपी एक झटके के साथ निकालकर फेंकते है।

कम्मो हाय राम दादा।

दादा (आवाज मे तेजी) गधी की बच्ची—अपनी भाभी को बाहर बुला लाओ—

(हडबडाती कमला अदर चली जाती है। फिर बाहर आकर खडी हो जाती है। पीछे-पीछे मीनाक्षी है। कमरे के दरवाजे पर जगन्नाथ खडा होता है। मीनाक्षी खडी है दादा अदर-ही अदर सुलग रहे हैं।)

मीनाक्षी (आखिर) मुझे पुकारा ?

दादा हा—(खामोश)

मीनाक्षी कुछ चाहिए आपको ?

दादा काफी मिल चुका है।

जगनाथ दादा उसे क्यू खामखाह—

दादा चुप बैठो जी—

मीनाक्षी (जगन्नाथ से) देखिए आप बीच मे न बोलिए (दादा से) मुझसे कोई गलती हुई ? कोई अपराध हुआ ?

दादा नही गलती तो हमारी हुई—हमारी । अब कहने को बचा ही क्या है ? क्या रहा है साला—

जगन्नाथ दादा आप चाहे जो कुछ कहे—पर उसने क्या किया है जो आप उसे कहे जा रहे हैं—वह तो सभी के लिए काम कर रही है—

मीनाक्षी मेरी सुनेंगे नही आप ? मैं कह रही हू—खामोश रहिए आप—

दादा क्या किया है—अब क्या बताऊ ? ऊपर से सीनाजोरी है ही—

मीनाक्षी मेरी गलती तो बता दीजिए—मैं अपनी गलती ठीक करने के लिए तैयार हू—

दादा (जगन्नाथ से) बरखुरदार—आखिर इस घर मे कुछ रीति रिवाज हैं—तुम लोग शादी हो जाने के बाद भले ही उन्हें भूल जाओ—फिर भी वे कायम हैं । भूलो मत कि उसी पर सारा घर पला है और उन्ही रीति रिवाजो को तोडा है तुम्हारी पत्नी ने—उसको जिद है—उसके नादान इरादों पर घर के लोग मरे जा रहे हैं—घर का सारा माहौल गंदा हुआ जा रहा है ।

कमला दादा—

दादा पेट का धंधा छोड़कर—पत्र खतम होने पर भी रामायण-महाभारत पढ़े जा रहे हैं—आखिर यह सब क्या है कम्मो ?

जगन्नाथ आखिर उसमे बुराई कौन सी है ?

दादा यही कि मुह चलाए जा रहे हो—घर की परम्पराओं को ताक मे रख दिया है तुम लोगो ने—बस जिसे देखो वही अपनी धुन मे मस्त है—

(बीरू आ खडा होता है)

बीरू दादा बात बिल्कुल गलत है—उल्टा घर अब ठीक तरह से चल रहा है—घर अब कम से कम घर लगने लगा है—

(अदर से जमुना आ जाती है।)

जमुना मैं कहती हू—बधू जी क्यो परेशान किए जा रहे हो ? बेकार जी खराब करने से क्या फायदा ?

दादा अब तो हद हो गई—तुम भी यही कह रही हो ? अगर इसी तरह चलता रहे तो क्या घर चल सकता है ? कहा से आएगे पैसे ? कहा से खाओगे ? कैसे जिंदा रहोगे ? कुछ करने जाता हू तो उसी मे परेशानी पैदा हो जाती है—एक ओर वह सत्य और सर्वोदय का काट्रैक्टर—वह बीच मे टाग अडा गया—अगर ये न होते तो वह आता ही कैसे ? बोलो ?

कमला पर दादा—भाभी ने कौन बुलाया था—वे तो खुद ही चले आए।

दादा पर आया किसके लिए ? और मैं कहता हू—मैं घर मे किस लिए हू ? मैं क्या करता हू इस बात से उसे परेशान होने की क्या जरूरत है ?

जगनाथ आप ही तो उसके नाम पर चाहे जो कुछ—

दादा चाहे जो कुछ ? जग्गू चाहे जो ? कान लबे हो गए

है तुम्हारे अरे इस बात को क्या आज से जाना है? अरे तुम पैदा भी न हुए थे तब से इस सत खद्दरधारी को जानता हू--उस समय जेल मे ऊपर वाली क्लास मे रहते थे--त्याग सेवा--सब साले ढोगी, दगाबाज, इनसे तो हम ही ठीक है--कहा बात पूरी होने का मौका आ गया था--बीच मे पडकर साली आग लगा दो। सब गुड-गोबर कर दिया। मेरी तो नैया ही डूब गई--

जगन्नाथ दादा--मैं आपकी बात ही नही समझ पा रहा--

मीनाक्षी आपकी बात मेरे समझ मे भी नही आ रही--मैं कौन-सा वातावरण गदा किए जा रही हू--सारी बात जान लेने पर भी यहा आने की जिद पकडे रही--पर मेरी कौन-सी गलती है यह तो जरा बता दीजिए? पता नही हम लोगो की गरीबी की हालत की वजह से इससे भी अच्छा घर मिलता या नही--सौतेलेपन के व्यवहार स मैं खुद परेशान हो चुकी थी--कहती--कही भी दे दो। सच कहती हू भाग्य से जो मिला है उसे ही अच्छा बनाने की कोशिश किए जाती हू--समझ नही पाती कैसे रहू। अब आप ही बताइए--मैं अपनी गलती ठीक करने के लिए तैयार हू।

दादा बताऊ क्या सिर अपना? सब खत्म हो गया अब बताने को रह ही क्या गया है? अनजान क्यू सारी अक्ल तो है न कम्मो? सच कहू अगर यही चलता रहा तो घर का मटियामेट हो जाएगा। मैं नही सभाल पाऊगा--सच कहता हू--

जगन्नाथ दादा--जो कुछ कहना चाहते है--सीधे सीधे कह

दीजिए।

जगन्नाथ सीधे कहूं—? सुनो फिर—तुम्हारी बीवी इस घर के रीति रिवाजो के अनुसार चले—

कमला पर दादा वह कहा विरोध कर रही है ?

दादा विरोध सिर्फ शब्दो के जरिए ही नही प्रगट किया जाता जग्गू—मैं खूब समझता हू—उसके सलूक से ही विरोध प्रगट हो जाता है। हर पल विरोध।

जगन्नाथ हद हो गई अब तो—

दादा हद हुई तुम्हारी बीवी की—लायसेन्स के लिए आए आदमी के बीच टाग अडाने की क्या जरूरत थी ?

कमला पर दादा—वह तो इस बात को जान ही न पाई थी ?

दादा अभी उस काका महाराज को अदर से बाहर क्यू भेजा उसने ?

जमुना अभी मेरा स्नान जो होना था—आप भी खूब हैं—

दादा बस उस बकवास बद करो—तुम लोगो की नादानी को क्या कहू ?

जगन्नाथ दादा—आप तो हर बात का उल्टा ही अर्थ लगा लेते है—

दादा मै कहता हू यह घर मेरे अनुसार चला और चलता रहेगा। जिसे न पटता हो वह साला बाहर निकल जाए—(खामोशी। जगन्नाथ परेशान। सभी परेशान) (धीमी आवाज मे) बहू—मैं क्या कह रहा हू उसे समझने की कोशिश करो—हर घर की एक रीति होती है—उसी तरह इस घर

की भी है। उसे तुम्हे भी निभाना होगा—इस घर की स्थिति से समझौता करना होगा बहू—

मीनाक्षी दादा—मैं विरोध नही करती—विरोध करने का मेरा अधिकार भी नही है—पर जो कुछ मुझे पसद है वह तो करने दीजिए।

दादा बहू जहा भी चिनगारी गिरती है आग लग जाती है। जो कुछ तुम करना चाहती हो वह चिनगारी है—चिनगारी।

मीनाक्षी नही दादा—ऐसा न कहिए—जो बडे बडे लोगो ने किया वह चिनगारी कैसे हो सकती है—मेरा भाई जो कुछ समझता रहा वह फिजूल कैसे हो सकता है ?

दादा बहू उसने एक भी भला काम नही कर दिखाया। बताओ जरा, किया कोई काम ? साला मैं चलकर देखने के लिए तैयार हू—कौन सा घर सुधर गया उसकी वजह से ? पोथी पुराण की बातें न कहो—जो बात तुम्हे पसद है वह आखिर है क्या मैं भी तो सुनू ? बहू—जीना खुद एक अजीब व्यवहार है—आजकल पचपन साल से यही देख रहा हू—उसी वजह से यह घर पर इस तरह है—बाल बच्चो को उसी तरह पाल पोस सका। जीना खुद अपने आप एक चाल है—बहू—

मीनाक्षी मेरे भैया जिंदगी भर सत्य के मार्ग पर चलते रहे—अच्छी तरह घरबार बसाकर जीते रहे।

दादा उसी का फल था कि तुम लोग पेट भर खाना तक न खा सकते थे बहू—

मीनाक्षी मामा जी ने उसी सत्य के लिए अपनी जिंदगी यू

हार दी—

दादा वहू उस ढोंगी का हवाला दे रही हो—उस दभी की वात न करो—तुम्हारे उस मामा पर एक परिवार की जिम्मेदारी होती तो आटे दाल का भाव मालूम हो जाता। फिर तत्त्व चितन ताक मे रख देना पडता। समझी ? फिर तो उसे भी यही करना पडता जो मैं कर रहा हू—और वह तो हमसे भी वडे पेट वाला वन गया होता क्यू वेकार उसके बारे मे बातें कर रही हो ? बताओ तुम्हे मेरी बात समझ मे आ गई है ? वही ज्यादा जरूरी है—इस घर मे सब उसी तरह चलता रहेगा—

मीनाक्षी दादा माफ कीजिए—मुझ से यह सब न हो सकेगा—

दादा वहू रानी ?

मीनाक्षी सच कहती हू—दादा।

दादा (नाराजी से) फिर कहो, देखें ?

मीनाक्षी आपकी बाते मुझे मजूर नहीं दादा—मैं एक माहौल मे पली हू इसमे मेरा क्या दोष ?
(जगन्नाथ से) आप ही बताइए—मुझे इस तरह की जिंदगी मिले—मैंने तो कहा नही था—बताइए वह क्या मेरे हाथ की बात थी ? जन्म कही मागे मिलता है ? फिर जो बात मेरे हाथ की नहीं और जो कुछ मेरे तन बदन मे समाया हुआ है उसके लिए मैं क्या करू ? बताइए उसे कैसे बदल लू ?

जगन्नाथ हा—बात तो ठीक है—

बीरू भाभी मुझे आपकी बात पूरी तौर पर पटती हैं—
जमुना (दादा से) सुनिए—जो कुछ कह रही है उसमे बुरी बात क्या है ? और मैं कहती हू उसका रहन सहन कौन खराब है ?
कमला हा दादा—अम्मा सही कह रही है—

(ये सब मीनाक्षी के इर्द गिर्द खडे हो जाते है। दादा अकेले रह जाते है—मन मे, बेचैन, परेशान। फिर उन्हे राह दीखती है—)

दादा सही है—बहू। बिल्कुल साला सही है। तुम्हारी ही बात ठीक—(सब हैरान। खुश) मुझे मजूर है—एकदम मजूर है। (सब सुनते है देखते है) एक अलग माहौल मे तुम पली हो—उसमे तुम्हारा क्या दोष ? तुम्हारी कोई गलती नही बहूरानी—नाराज न हो—आज से यह घर तुम्हारे हवाले कर दिया—(सब हैरान)—बहू सच—आज से यह घर तुम्हारे हाथ मे देता हू—तुम अपनी तरह घर चलाओ—अपने तौर-तरीके से चलाओ—जैसा तुम चाहो बिल्कुल उसी तरह—
जगनाथ दादा—
दादा कोई बुरी बात नही—सभी हाथ बटाओ—
कमला दादा—सच कह रहे है आप ?
दादा गधे की बच्ची—मैं क्या कभी झूठ बोलता हू ए ?
कमला नही वह बात नही—पर ?
दादा वाकई दिल से कह रहा हू—इस घर को अब बहू-

रानी ही चलाएगी—जैसा वह चाहे वैसा ही—

जमुना आखिर इरादा क्या है आपका—इत्ती सी लडकी—

मीनाक्षी दादा—घर मैं अपने हवाले लेती हू—

दादा बहुत अच्छे—बहुत अच्छे। हो जाने दो—हमारा चार्ज हमने छोड दिया—कम्मो—चलो साली एक चाय लाओ एक्स्ट्रा स्टाग (कुर्सी पर पाव मोडकर बैठते है—चेहरे पर चमक)

मीनाक्षी दादा—आपकी मदद मुझे चाहिए—

(दादा हडबडाकर देखने लगते है—सभी हैरान)

किसी को दगा न देते हुए—बडी ईमानदारी से—आप सबके आगे कुछ कर दिखाना चाहती हू—अपने तौर-तरीके से—

(दादा अचकचा जाते है—सब की वही हालत।)

(धीरे धीरे परदा गिरता है।)

——

अंक तीन

(स्थान वही। बाहर के कमरे के दो भाग हैं। कमरे के एक ओर लकडी का केबिन—प्रक्षका की ओर खुली केबिन के बाहर वाले कमरे मे 'उन्नति गृह उद्योग भडार' के गहोपयोगी चीजो के बडे-बडे विज्ञापन टगे है।

दीवार पर गुरु महाराज की तस्वीरो के स्थान पर महात्मा गाधी, सुभाषचद्र बोस और सरदार पटेल के चित्र लगे हैं। साथ ही 'सत्य ही धम है', आज नगद कल उधार' आदि की तख्तिया लगी हुई हैं। दूसरी दीवार पर एक पुरानी अलमारी फिट की गई है—एक बडा सा टेबल भी है। अलमारी पर 'ग०भ० फाइलें और कागजात' लेबल लगा हुआ है। अलमारी का एक दरवाजा खुला हुआ है। उसमे से फाइलें और कागजात दीखते है। पास के टेबल पर पेक बद डिब्बे, बोतलें, बरनिया—एक काने में टूट हुए पासल के डिब्बे—दीवाल के पास बीरू का टेबल आगे की ओर खीचकर उस पर बिक्री विभाग की तख्ती लगी है। टेबल पर स्याही दवात होल्डर। टेबल पर सिर रखे हुए बीरू सोया हुआ है। एक ओर खुली पुस्तक।

पास ही कमला पालथी मारकर बैठी है—पास ही उसका ट्रंक—उसमे चीजें करीने से रख रही है।

केबिन मे एक टेबल दो कुर्सिया। टेबल पर काफी कागजात और फाइलें हैं। टेबल कलैंडर, कालबेल—लकडी की ट्रे। आवक-जावक, आवश्यक आदि लेबल्स। वृद्ध का पुतला कागजो के ढेर पर रख दिया गया है।

केबिन मे धधे की कुछ बेतरतीब चीजें भी हैं। एक ऊचा पावरपाट, उसमे फूल हैं। प्लास्टिक की गुडिया। रामपचायत की तस्वीर भी लगी है।

केबिन मे सिर्फ दादा नाक पर चश्मा चढाए टेबल पर कुछ लिखने मे मशगूल हैं—बदन पर बनियान और धोती। दोनो पाव कुर्सी पर रखे हुए हैं।

केबिन के स्प्रिग वाले दरवाजे पर 'है' 'नही' की तख्ती है। बाहर के दरवाजे से फिर घटी बजती है। सोया हुआ बीरू हडबडा जाता है। कमला अनसुनी कर देती है। केबिन मे दादा लिखना छोडकर उस ओर देखने लगते हैं। रसोई से जमुना भाकती है—काम की वजह से अस्त पस्त। फिर दरवाजे पर घटी। कोई सुनता नही। जमुना साहस के साथ पसीना पोछते हुए जाती है और दरवाजा खोलती है। दरवाजे मे मीनाक्षी खडी है—साधी-सादी वेशभूषा साथ मे पस)

मीनाक्षी (अंदर आते हुए—पीछे मुडकर देखते हुए—ऊचे स्वर मे) आइए—अंदर आइए न। (उसके पीछे एक आदमी—कोट धोती—पेट बडा सिर पर ऊटोपी—आखो पर काला चश्मा। उगलियो मे कई अगूठिया—गले मे सोने की माला—हाथ मे सोने की रिस्टवाच—शर्ट मे सोने के बटन—दो दात सोने के है—झूठी हसी चेहरे पर लाने की खास आदत। मीनाक्षी ऊचे स्वर मे कृत्रिम अतिरिक्त उत्साह है) यह हमारे उन्नति गृह उद्योग भडार का कार्यालय—अभी एक ही साल हुआ है।

(सोए हुए वीरू और पालथी मारकर बैठी कमला की ओर नजर जाती है)

कमला कार्यालय मे इस तरह् बेतरतीब बैठना ठीक नही। (कमला ट्रक बद कर उठती है। मीनाक्षी अब सोए हुए वीरू की ओर आकर) वीरेन्द्र जी कार्यालय सोने की जगह नही है। (वह उठता है। मीनाक्षी मेहमान से) ये रात वाली ड्यूटी के है और ये कमला जी—घर घर जाकर बिक्री देखते हैं। (मेहमान अदर जाती हुई जमुना की ओर देखते हैं।) वे हैं जमुना जी—निर्माण विभाग उन्ही के पास है। (जमुना पल्लू कसकर तेजी से रसोई की ओर चल देती है। अब तक दादा केबिन के बाहर की ओर कई बार भाक चुके है—उन्हे) आइए न दादा साहब—(दादा केबिन मे कुर्सी पर रखा कोट हडबडी मे

बनियान पर ही चढा लेते हैं।) ये हैं हमारे व्यवस्थापक—वैसे यही समझिए कि सारा परिवार ही इसमे लगा हुआ है—मालिक नौकर वाला रिश्ता यहा है ही नही। दादा साहेब ये हैं मगल प्रसाद जी—बडे भारी व्यापारी है—अपना अमूल्य समय देकर आए है। (दादा एक नजर से उनकी ओर देखते है और असली व्यवस्थापकीय नमस्कार ठोक देते है) किसी काम स बबई आए थे—जरा भी फुसत नही थी—पर मैंने कहा कम से कम अपने दशना से ही हमे प्रोत्साहित कीजिए—

दादा वाह-वाह अलभ्य लाभ ही कहना चाहिए। सच पूछा जाय तो इनकी मुलाकात तो पहले ही हो जानी चाहिए थी। मीनाक्षी जी इन्हे कुछ ठडा या गरम—कुछ चाय वाय—केंटीन मे आडर देता हू—

आदमी (बोलने का खास ढग है।) ना ना—डायबेटीज। क्या करे—चार साल हो गए—

मीनाक्षी नही नही कुछ तो लेना ही होगा।

आदमी सोरी माफ कीजिए—

मीनाक्षी (उन्हें केबिन की ओर ले जाते हुए) आइए न—अदर आइए—ये रहा हमारा आफिस—कम-से-कम बैठिए तो सही—

(आदमी बैठता है। रगीन रूमाल निकाल कर—रूमाल से हवा करने लगता है)

दादा साहेब अपना फेन ठीक होने गया है न?

कब तक आएगा ?

दादा फेन ? बस आने ही वाला है। सच बात तो यह है कि एयर कडिशन करवाना था इसलिए फेन की ओर ध्यान ही न जा पाया।

आदमी वेट ईज वेस्ट। एयर कडिशन। अपने ज्वाला प्रसाद जी ने अभी अभी लगवाया है। एयर कडिशन—अपने डिपो मे—वेस्ट।

मीनाक्षी टेबल के करीब बैठकर फाइल का एक कागज दिखाते हु) येए हैं सारे भडार की जानकारी—भडार का उद्देश्य, सबकी जानकारी इसी मे है। हम तो ग्राहको के सतोष की ओर सबसे अधिक ध्यान देते हैं—वही हमारा मोटो है। माल ठीक हो यही हम चाहते हैं।

हमारे माल के बारे मे कइयो ने प्रमाणपत्र दिए हैं—वही तो हमारा सबसे बडा लाभ है—(दादा से) दादा साहब वह जो डेढ हजार का आडर आया था—वह पूरा कर दिया गया है न ? उनके दो रिमाइडर भी आ चुके है। (आदमी से) हम लोगो की इच्छा तो यही है कि लोगो को सस्ता माल दे सके और उसी के लिए हम लोग कोशिश भी कर रहे ह। (दादा से) ठीक बात है न दादा साहब ?

दादा (तत्परता से) और क्या ?

मीनाक्षी मतलब यही कि अभी भडार की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी न होने से (दादा से) हा, वैसे अभी नया-नया भडार खुला है—

दादा (हा मे हा मिलाकर) और क्या ? अभी तो एक

साल भी पूरा नही हो पाया है।

मीनाक्षी इसी वजह से चाहते हुए भी खास सस्ती चीज नही दे पा रहे है बस इसी बात का अफसोस है—पर एक बात तो दावे के साथ कही जा सकती है कि हमारे यहा की चीजे बाजार की अपेक्षा अच्छी और सस्ती रहती हैं। (वाक्य पूरा कर आदमी की ओर राहत से देखती है—आदमी उसकी बातो मे रुचि न लेकर अपनी अगूठी से खेल रहा है।)

दादा (पास के दो-तीन प्लास्टिक के रगीन छोटे-छोटे डिब्बे एक साथ निकालकर) देखिए तो सही—कम-से-कम साला नमूना तो देखिए बडा टेस्टी है—आपका केचप—मतलब अपना अचार—और यह मधुकर जाम—मतलब वही अपना मुरब्बा—और यह है मदन मसाला हा हा वो तो है ही—रहने दीजिए—होगा ही टेस्टी—।

मीनाक्षी अब देखिए कुल एक साल हुआ है और इस हालत मे प्रगति भी हुई है—क्यू दादा साहब ?

दादा और क्या—एक साल के अदर।

मीनाक्षी पर पू जी की जरूरत महसूस होती है—उसी वजह से कई योजनाए पूरी नही हो पा रही हैं—अभी तो हम सिफ चार चीजें बनाते है—उसकी लिस्ट (दूसरा कागज आदमी की ओर रखकर) इसमे है। इसी लिस्ट को हम लोग नए एजेंट के पास भिजवा देते हैं। योजना तो ऐसी है कि अभी कम-से कम पचास चीजे बनाने लगे हैं—पर सवाल तो वही है न—

दादा (जैसे वक्त पर बोला जाय) पूजी का सवाल—

मीनाक्षी इन आडस को देखिए जरा (एक फाइल उठाकर देखती है) दादा साहब तबाकू का फाइल से क्या काम है ?

(फाइल झाडती है)

दादा (तत्परता से) नही—सॅपल के लिए रख दी थी—आगे-पीछे बनानी ही पडी तो।

आदमी देट इज बेस्ट—तमाकू—देखें जरा –(दादा टेबल के दराज से तबाकू की पुडिया निकालकर चट आगे कर देते है –ऊपर से चूना भी देते है—आदमी करीने से चूना लगाकर तबाकू मुह मे डाल लेता है। दादा बडे प्रेम से उसकी ओर देखते है।)

मीनाक्षी (उसका ध्यान केंद्रित करने के लिए) देखिए आडस—(फाइल आगे करती है) महाराष्ट्र के करीब करीब सारे एरिया मे हमारा माल जाता है—अकोला अमरावती सतारा-पणजी—

आदमी (तबाकू मुह मे घोलते हुए) वेस्ट—व्हेरी बेस्ट—

मीनाक्षी अब देखिए जगह की भी कैसी तगी है—क्यू है न दादा साहब ?

दादा और क्या—इत्ती सी जगह मे—

मीनाक्षी जगह मिल जाय तो उत्पादन भी बढाया जा सकता है (बात कही है आदमी से पर ध्यान दादा की ओर है) कभी-कभार तो आडर भी पूरी तरह सप्लाई नही कर पाते हम लोग।
(फिर आदमी से ही)

माल हमारा बिल्कुल सोलह आने होता है और सस्ता भी—

दादा सारे महाराष्ट्र मे बेलगाव से कारवाह तक—

मीनाक्षी ए? (देखकर निर्विकार रूप से) हा बेलगाव कारवाह तक हमारी सस्था को घर घर पसद किया जाता है।

आदमी (मुह पर दो उगलिया रखी हे—दादा से) हू—

मीनाक्षी (अपनी बातो पर और जोर देते हुए) बाजार मे तो मिलावट की हद हो गई है—

आदमी (फिर उसी मुद्रा मे दादा से) हू—? (दादा उसकी हालत देखकर टेबल के नीचे से पीकदान निकालकर बढाते हुए। आदमी उसी मे थूकता है। दादा इस ओर भी बडे प्रेम से देखते है।)

मीनाक्षी (जिद से) सफाई तो दवाई तक मिलना मुश्किल है—हर जगह बस मिलावट—

आदमी (उठते हुए) और क्या। चलता हू—जरा अर्जेन्ट काम है—

मीनाक्षी (और जिद से) बैठिए न—बैठिए न दादा साहब—इन्हें अपने माल के बारे मे आए प्रमाण पत्र दिखाइए न (आदमी उठ खडा है) खुद राज्यपाल की पत्नी ने भी हमारी तारीफ की है। सुप्रसिद्ध टी० मेनन ने हमारा ब्राह्मी तेल खरीदा है और प्रमाण पत्र दिया है कि इससे दिमाग ठीक रहता है। और इसके अलावा (आदमी केबिन के बाहर निकल आया है) फिल्म की वैजयन्ती कुमारी—गायिका कोकिला जी और प्रसिद्ध व्यापारी डी० डी० शाहा—

(उसी के साथ केबिन के बाहर बातें करती आती है—पीछे पीछे दादा)

पूजी लगाई जाय तो वापस मिलने की पूरी उम्मीद है—व्याज हमेशा टाइम पर—आजकल बाजार मे पैसे लगाए जाए तो व्याज तक टाइम पर मिलता नही—पैसे डूबने को हालत बनी रहती है। विश्वास तो हमारा पहला उद्देश्य है। वही हमारी सबसे बडी पूजी है।

(आदमी बाहर जाने के दरवाजे तक आ चुका है—पीछे पीछे मीनाक्षी और उसके पीछे दादा—)

और हमारे देश में स्त्रियो द्वारा चलाए जा रहे धधे कम ही हैं—दादा साहब इन्हें नमूने की दो चार बोतलें दीजिए न—

(दादा एकदम तत्परता से दो-तीन बोतले देते है।)

दादा साहब मैं जरा मेहमान के साथ जा रही हू तब तक आप नए आर्डर के बिल तैयार कर लीजिए—

(आदमी बाहर निकल चुका है—इस बात को देखकर दादा से—धीमे से)

अभी आई दादा—(दादा खडे ही रहते है।)

दादा (वापस केबिन की ओर जाते हुए) क्या सुनहरा आदमी है। पर साली मुलाकात देरी से हुई।

(केबिन मे आकर कोट टोपी निकालकर फिर कुर्सी पर जम जाते ह—पाव ऊपर कर

लेने है—ग्रादमो द्वारा छोडे गए कागज देखते है)

मतलब इन्हे यही छोड गया—खूब होशियार जान पडता है। बहूरानी इसे तुम कैसे पा सकोगी—सोने के मढे इस ग्रादमी को ईमानदारो से क्या मतलब ? हा हमारे हवाले कर दो फिर देखो—खैर छोडो भी।

(कोट की जेब से कुछ कागज बाहर निकालते हैं। पढने मे मग्न होते है। बीरू टेबल के करीब बैठा है। कम्मो पालथी मारकर बैठी है। ग्रदर से जमुना ग्राती है। एकदम थकी मादी।)

जमुना फिर चली गई न ? मेरा ख्याल था कि फिर कोई लेनदार ग्रा धमका है। (मुह पर ग्राए बाल ग्रौर पसीने को हाथ से ठीक करते हुए) ग्रब नया कौन साथ मे था कम्मो ?

कमला मैं क्या जानू ? था कोई व्यापारी—व्यापारी।

जमुना ग्रौर सुबह वह कौन सा एजेंट फेजेंट ग्राया था ? मैं तो डरी जा रही थी कि कही फिर चाय-वाय का ग्रार्डर न हो जाय—मुन्ना तक के लिए तो घर मे दूध नही है—

कमला मैं कहती हू इतनो को ले ग्राती है ग्रौर एक ढग से देख नही पाता ग्रौर कर्जा कोई देता नही। नही तो एक हमारे दादा थे—एक एक को ऐसा फासते कि बस चार छ हजार से कम नही उतरता। भाभी से तो कुछ होता ही नहीं। ग्रजीब मुसीबत

है—वह तो खेल कर रही है—और हम हैं कि बीच मे ही पिसे जा रहे हैं।

जमुना काम करते-करते तो मेरा दम निकला जा रहा है—रात दिन चूल्हा जलाए रखना पडता है। मसाले मुरब्बे और अचार पापड, बस जान आफत मे है—

कमला हमारे दादा भी अजीब है—पूरा का पूरा घर भाभी के हवाले कर दिया—आखिर हमारी तो फिक्र की होती दादा ने ?

जमुना साल भर मे ऐसी कौन सी तबदीली आ गई है। सच कम्मो अब तो देखा नही जाता। घर क्या कारखाना लगने लगा है। बस बेकार की चीजें जरूर बढती जा रही है। चूल्हा फूककर चार बच्चे पाल लेती पर न जाने कहा से बेगार पाल ली है। और ये भी अजीब बने बैठे है। (केबिन मे दादा जोर से कालबैल बजाते है।) कम्मो देख तो उन्हे क्या चाहिए—(दादा फिर बैल बजाते है)

कमला अम्मा तुम्हारे लिए है—

जमुना पगली पहले जाकर पूछ तो सही—

(दादा फिर बेल बजाते है)

कमला अम्मा देखो न ?

वीरू (झुझलाहट से) अम्मा जाओ देखो न क्या है ? बेकार की परेशानी साली।

जमुना (पल्लू से नाक पोछते हुए) क्या चाहिए जी—बेकार तब से—

दादा क्या बकवास लगा रहे थे तुम लोग ? ए ? किसके

बारे मे बोल रहे थे ? बोली ?

जमुना क्या ?

दादा वही कि चार बच्चे सभालकर—

जमुना आप खुद भी तो जानते है—

दादा आज तुम लोगो को हो क्या गया है ? ए ? कार्यालय मे मालकिन के बारे मे चाहे जो बके जा रहे हो तुम लोग ?

जमुना फिर करू क्या ? अब तो नही सहा जाता—घर की हालत बडी अजीब हो गई है।

दादा देखो हालत बिगडती है पैसो की वजह से—पर पैसा ही तो सब कुछ नही है—सच्चा सुख तो आत्मिक हुआ करता है—

जमुना इस बात को आप कह रहे हैं ?

दादा हा, अभी तो मैं ही कह रहा हू। बहू को अपने कामो से फुर्सत नही है। इसी वजह से कह रहा हू। अजी माल उठ ही नही पा रहा तो इसमे बहू क्या करेगी ? ए ? साली असली और अच्छे माल की कदर ही गायब हो गई। अब भला इसके लिए बहू क्यो जिम्मेदार है ? तुम लोगो को तो खाने के लिए पैसे चाहिए—फिर कसे भी क्यू न मिले—

जमुना आप ये सारी बातें मुझे क्यू सुनाए जा रहे हैं ? कम्मो की शादी के पैसो मे बत्ती लगा दी—

दादा किसने लगा दी ?

जमुना आपने—और उसने खच मे डाल दिए—

दादा और तुम क्या मुह ताक रही थी ? बात दरअसल यह है कि जरा शान शौकत से जीना हो तो त्याग

तो करना ही पडता है—

जमुना आपकी कमाई के जो बचे थे वे भी खच हो गए—

दादा फिर कौन बट्टे खाते मे चले गए ? काम के लिए ही तो खच किए गए ? आखिर एक बडा भारी एक्सपेरिमेंट चल रहा है यहा—

जमुना शादी के बाद जब मै यहा आई हू तकलीफ सहना ही भाग मे बदा है–आप जब जेल मे थे तब बच्चो को लेकर कैसे दिन काटे हैं यह तो मैं ही जानती हू। पास मे चार पैसे तक न थे। (आख से पल्लू) अब कही दिन अच्छे आ पाए थे—तो इस तरह हो गया। (रुआनी सी होकर) लेनदार दिन भर चक्कर काटते रहते हैं। इस तरह की बेइज्जती तो कभी न आने दी थी मैंने—आस पडोस की औरते ही मेरे पास पैसे मागने आ जाया करती थी। कहती—जमुना चाची के पास पसे जरूर मिल जाते हैं—कही कायक्रम होता तो पहले मुझे बुलावा आता था। अब कौन पूछने वाला है। और अगर आए भी तो जाऊ किस मुह को लेकर ? अच्छी साडिया तक तो बच नही पाई हैं—और क्या खाली हाथ जाऊ (पल्लू मुह से लगा लेती है।)

दादा तुम लोग ही उस दिन बहू की तरफदारी किए जा रही थी ? ए ? तुम बहू की ओर से मुझे फटकार रही थी ? तुम्हे तो उसका सलूक बेहद पसद था।

जमुना तब कौन जानता था कि नौबत यहा तक आ सकती है ? मुझे तो बिल्कुल भोली भाली लग

रही थी।

दादा हू—तो अब क्या हो गया ? कार्यालय मे बेकार की बकवास ठीक नही। पिछले कई दिनो से देख रहा हू—साले सब अब उसे ही गालिया दिए जा रहे है। सामना हो जाय तो चुप लगा जाते हैं—चलो जाकर अदर बैठो—(जमुना पल्लू नाक से लगाए ही केबिन के बाहर आ जाती है।)

कमला (सारी बाते पहले ही सुनी हुई) अम्मा—आज भाभी से ही कह दो—मैं भी कह दूगी—

(जमुना तेजी से रसोई की ओर निकल जाती है। कमला की बात सुनकर दादा कुछ सोच मे पड जाते है। जैसे बडा-सा सवाल हल करने मे मशगूल हो—पाव ऊपर ही—लिखने मे तल्लीन)

और क्या आदमी कितने दिन तक सहन कर सकता है ? (बीरू जैसे सो रहा है) यही तो होता है। हम लोग तो कारखाने के मजदूर ठहरे—और वह सिफ हुक्म चलाती रहेगी। हम लोग बुरी तरह पिसते रहेंगे। और बदले मे मिलेगा क्या ? मीठी-मीठी बातें और बेकार की सम्भाइश। उपदेश—तत्वचितन। हुक्म पूरा न हो तो आखें नीली पीली। इतनी नई नई साडियो की फैशन निकल रही है पर हम है कि वही के वही। बीरू सुना तुमने नए नए पिक्चर लगे है। पर हम नही देख सकते। मेरी हमजोलिया तो मुझ पर हसने लगी हैं। कहती हैं आजकल तो तुम बिल्कुल मामी

वन गई हो। वीरू दादा के समय मे तो इस तरह कभी न हुआ था। सव कुछ तो मिट्टी मे मिला जा रहा है। और तो और शादी की कुछ उम्मीद वधी तो वह भी गायव—वीरू उसने सारे पैसे अपने कामो मे खर्च कर दिए हैं—

(दादा सुन रहे हैं) अव घर मे बचा ही क्या है? रात दिन काम मे जुट रहो—पिसो रहो—पीसो—उवालो और बोतलो मे भरो वस। लेविल्स लगाओ, डाट लगाओ और नही तो पेटी सिर पर रखकर दिन भर माल वेचते रहो—सब भगा देते है, दरवाजे मे पाव ही नही रखने देते। सव कहते हैं आगे जाओ—कुछ तो बदमाशी भी करते है—चाहे जो वोलते है—वोलो वीरू मैं क्या ऐसी-वैसी हू—जो सुनती रहू? और तिस पर भी भाभी की फटकार है ही। वह तो अच्छी अच्छी साडिया पहनती हैं, सेंट लगाती है—और वडे वडे लोगो के साथ कान्ट्रक्ट करती हैं—क्यो? मैं पूछती हू आखिर क्यू?

(गुस्से मे ही बैठ जाती है। केबिन से दादा उठते हैं। सामने लिखे हुए कागजात अदर रखते हैं। बाहर की आहट लेते हैं। हरी हरी कैलाशनाथ कहते हुए केविन के बाहर आ जाते है। 'है—नही' की तख्ती पर जान बूझकर 'नही' कर देते हैं। रसोई की ओर वढने लगते हैं—'साली रीति रिवाजो पर तो जैसे पानी ही फिर गया' धीमे से कहते हुए चल देते ह।)

बीरू (एकदम उठकर) दादा—(वे रुक जाते हैं) मेरी फीस का क्या हुआ ? फीस न दी गई तो कालेज से नाम हटा दिया जाएगा—

दादा रामचन्द्र जी कालेज नही गए थे बीरू—पढा है न रामायण मे ?

बीरू पर उनके पिताजी भी आप नही थे दादा—और मुझे भी दडकारण्य नही जाना है। मुझे तो पढाई करनी है। मुझे कालेज गए बगैर चैन ही नही पडता—दादा—

दादा किसे सुना रहे हो बीरू ? तुम्हारी भाभी एक बहुत बडा काम करने जा रही ह—दखते नही हो तुम ? उन रमई काका से ही पूछ लो जरा—कही बहू का काम चल निकला तो पूरा का पूरा परिवार ही राह पर आ जाएगा—समझे ?

बीरू मैं कुछ नही जानता—मुझे तो मेरी फीस चाहिए—

दादा भाभी से कतई न मागना—मेरी बात मानो—मेरे सामने बच्चे हो तुम—सुनो बीरू तत्वो के खातिर कालेज भी छोडना पडे तो कोई हर्ज नही।

बीरू नही दादा—

दादा रमई काका को तो जानते हो न ? उन्होने पढाई-वढाई छोड छाडकर ही देश सेवा की है। समझे ?

(मच पर बीरू तिलमिलाता है। कम्मो भी बेहद गुस्से मे है। जग्गू बाहर से सिगरेट पीते हुए आता है)

जगन्नाथ क्यू आ गए क्या ? (चप्पल उतारता है)

बीरू कौन ? मुझे नही मालूम—

जगन्नाथ टेढे जवाब नही चाहिए बीरू—

बीरू फिर तुम भी अजीब हो—तुम्हारी पत्नी के बारे मे मैं क्या जानू ? बेकार की झझट साली—

जगन्नाथ बात किसके बारे मे कर रहे हो बीरू ?

बीरू तुम्हारी पत्नी के बारे मे और किसके बारे मे ? मेरा कालेज डूबा जा रहा है—कालेज से नाम काटने की नौबत आ गई है। सारे लडके पास होकर आगे बढ जाएगे और हम वही के वही। बताओ इसमे मेरी कौन सी गलती है ? तुम्हारी पत्नी की वजह से यह सब हो रहा है। उसी की जिद की वजह से—उसके पास बस अपने कामो के लिए पैसे है—पर हमारी फीस के लिए नही—बाहर घूमने के लिए है—पर हमारी फीस के लिए नही—

जगन्नाथ चुप बैठो जी—(पास वाले कमरे मे निकल जाता है)

बीरू चुप बैठू ? मैं पूछता हू किसलिए चुप बैठू ? अभी नही तो आखिर कब बोलू ?

कमला (गाल फुलाए वसे ही बैठी हुई है) चुप बैठो—

(बीरू कुछ कहने की जगह तिलमिलाता ही रहता है। केबिन मे जाकर वहा पर रखी कालबेल पर जोर जोर से हाथ मारता है। प्लास्टिक के बबुआ की ओर नजर जाती है। उसे तेजी से बाहर की ओर फेंकता है तभी मीनाक्षी आ जाती है—हालत पहले

जैसी नही पर ठीक नजर आती है। बीरू बबुआ को फिर करीने से रखता है। पर चेहरे के भाव अभी भी गुस्सैल ही है।)

मीनाक्षी (बाहर के कमरे मे कमला को नाराज देखकर कुछ चिडचिडाहट के साथ) कमला जी ऐसी रूठी क्यू बैठी है ? कुछ काम-वाम करना है या नही ? इस तरह बैठने से कैसे काम चलेगा ? मैं तो बाहर काम कर मरी जा रही हू और तुम लोग हो कि खाली बैठे ठाले वक्त काटे जा रहे हो—आज फेरी पर गई थी। अभी पेटी खोलकर सामान लगा रही थी—जरा जल्द सामान लगा लेती ? आखिर कुछ तो सोचो तुम लोग ? घर की कोई रीति है या नही ? क्या कहेंगे लोग ? यह कार्यालय है और उसके कुछ रीति रिवाज हैं। और 'ये' वसूली करने गए या नही ?

(एक और अलमारी का दरवाजा बद करती है)

वसूली के मामले मे कुछ ठडे दिल से काम लेना पडता है। छोटी-मोटी बातो से नाराज होकर काम थोडे ही चलता है—इस तरह काम करने पर वसूली तो हो नही पाती, ग्राहक जरूर रूठ जाता है। कई बार कहा पर उनके कानो पर जू ही नही रेगती—परसो पता नही किसे मारने के लिए तैयार हो गए थे !

(टेबल करीने से लगानी है)

आज बाजार मे सभी यही कहे जा रहे थे। वह वापस आए या नही ? पासल वैसे के वैसे पडे हुए ह—सबसे कहा अब वह काम भी मुझे ही करना होगा ?

(केबिन मे जाकर दरवाजा खोलती है। सामने बीरू खडा दीखता है।)

आप वहा खडे-खडे क्या कर रहे ह ? घर पर ही तो उन पार्सलो को करीने से लगा लो जरा—यहा तो बस सभी काम से जी चुराते हैं।

(टेबल की ओर देखकर)

और दादा का कोट और टोपी यही कुर्सी पर लगी रहेगी ? टेबल के दराज मे चूना और फाइल मे तमाकू ? आखिर यह सब क्या है ? कब अक्ल आएगी भगवान ही जाने—परसो वह ऐजेंट आया था तो उसी के सामने कुर्सी पर पाव रखे तमाकू खा रह थे। भले ही वह माल न लेने वाला था—पर कुछ तो सोचना चाहिए। कि आदमी के साथ किस तरह सलूक किया जाता है। इस तरह कही धधे मे इज्जत रह पाती है। और मैं हू कि अकेली मरी जा रही हू।

(बीरू अभी भी नाराज ही खडा हुआ है। उसकी ओर देखते हुए)

आखिर इस तरह क्यू खडे हो ? काम-धधा नही है ? उन पासलो को खोलकर माल करीने से

लगाग्रो—चटपट काम मे लगो—

(बीरू तेजी से घम घम कदम रखते हुए केबिन के बाहर निकल जाता है ग्रौर बाहर जाकर वैसे ही खडा हो जाता है। उस ओर कमला वैसी ही खडी है। मीनाक्षी केबिन मे निढाल बैठ जाती है। फिर जरा तनकर बैठती है। कालवेल बजती है। कोई हटता नही। फिर बेल बजती है। तभी दादा रसोई से बाहर ग्राते है—बेल की ग्रावाज सुनकर केबिन की ग्रोर जाते है। कोई ग्राएगा इस ख्याल मे मीनाक्षी है।)

दादा क्या है बहू ? मैं तो ग्रा ही रहा था—
मीनाक्षी ग्रापकी ही जरूरत थी—दादा।

(उठकर करीने से खडी हो जाती है।)

दादा बैठो बहू—रिश्ते नाते तो घर मे होते है। धधे मे कौन काम ग्राने वाले है ? किसलिए बुला रही थी—बहू ?
मीनाक्षी (ठीक तरह से बैठते हुए) दादा—एक पत्र ग्रग्रेजी मे लिखना है—
दादा (तत्परता से टेबल का लेटरपैड उठाते हुए) बोलो क्या लिखना है ?
मीनाक्षी (ग्रकडकर बैठते हुए—जैसे शब्द खोज रही हो इसी ग्रदाज मे) सेठ जयरामदास ढलकिया—ग्रागे समाचार इस रूप मे। लिखिए—पिछले दस दिन पहले जो बाते हुई थी उसी स्मरणार्थ

पत्र। हम भडार की जानकारी फिर से भिजवा रहे हैं। है न आपके पास ? आगे लिखिए—आपके पैसो का ठीक से उपयोग हो इसी तरह का भडार हमारा है। इस बात को बार-बार बताने की जरूरत तो है नही। खैर इसे न लिखिए। उसकी समझ मे कुछ न आ पाएगा। और आपकी जो भी परेशानिया हो हम दूर करने के लिए तैयार है। आशा है आप अवश्य ही इस मसले पर गौर करेंगे। पैसे जरूर भिजवाएगे यही उम्मीद है। नीचे सचालिका लिखिये। सारा खत अग्रेजी मे ही लिखिए—पता फाइल मे देख लीजिए।

(इस तरह कहते कहते ही निढाल हो बैठ जाती है। दोनो हाथ सिर पर रख लेती है)

दादा — बस अभी लिखता हू। पर वह अभी जो सुनहरा आदमी आया था उसका क्या हुआ ? वही जो अभी-अभी आया था—कुछ हाथ लगा ?

मीनाक्षी — धधे मे इस तरह एकदम कुछ हाथ मे नही आता दादा—

दादा — हा बात तो साली सही ही है। ऐसे धधे हमने कभी किए ही नही थे। हमारी तो दुनिया ही और थी।

मीनाक्षी — कई जगह कोशिश करनी पडती है तब कही एकाध जगह कुछ हाथ आ पाता है। आदमी को काम मे चिपके रहना चाहिए था। दादा एक खत और लिखिए—अग्रेजी मे ही लिखिए—

दादा — किसे बहू ?

मोनाक्षी उसे ही जो अभी-अभी आया था। वह एक ही रट लगाए जा रहा था—ऐसे धधे से कोई खास फायदा नही हुआ करता। आप तो सिनेमा का धधा निकालिए—दादा—उसने तो सोने-चादी के धधो मे ढेर पैसा कमाया है। अक्ल के नाम पर सिफर। लाख समझाए पर अक्ल मे घुसे ही न तो क्या किया जाए?

दादा और क्या साला—मेरे ख्याल से तो अमूमन ऐसे लोगो मे अक्ल कम ही हुआ करती है। पर हिसाब के मामले मे बडे तेज हुआ करते हैं—हा—

मीनाक्षी दादा आज तान-चार और से भी मिली थी। एक और भी मिला था—हालत ऐसी कोई खास बुरी भी नही है। कही-न-कही से तो कर्जा मिल ही जाएगा। मैं तो जरा भी निराश नही हू। हा मुझे और कसकर काम करना पडेगा। मुझे मतलब हम सभी को एक बार पैसा आ जाय तो गाडी पटरी पर चलने लगेगी। उन व्यापारियो को तो तब हम जैसा मोडना चाहे मोड सकेंगे।

दादा और क्या—सो तो है ही—और तुम्हारे मामाजी हैं ही—सरकारी लोन के लिए वे हामी भर ही चुके हैं।

मीनाक्षी हामी नही दादा वे तो जी-जान से कोशिश कर रहे है। आज तो कह गए हैं कि कुछ-न-कुछ करके ही आऊगा अब उन्हें ही आना चाहिए—मामा इस उम्र मे भी काम करते हैं— मुझे तो उन पर दया आ जाती है।

दादा वैसे बडा तकलीफ वाला आदमी है। मतलब खास अर्थ मे कह रहा हू।

मीनाक्षी *हा, आप ठीक ही कह रहे है। अब तो तय कर लेना* चाहिए कि माल भेजे जाने पर वापस न आ पाए। नही तो ये लोग माल खपाने की फिक्र हो न करेगे। ये ता मुनाफे के ताक मे रहते है अगर कोशिश ही न की जाए तो माल विकेगा कैसे? माल वापस भिजवा देते है। पासल का खर्चा भी हमी लोगो का—आजकल हमारे समाज मे ईमानदारी तो जैसे रह ही नही गई है। चोरी और बस बदमाशी की ही हवा है।

दादा वाक्ई सच कहती हो बहू—सोलह आने सच है। *(नजरें मिलाते हैं) मतलब मैं कहता हू—*

मीनाक्षी (नजर दूसरी ओर कर) हा—इस बात को मैं भी समभती हू। मै भी तो वही कर रही हू। आप यही कहना चाहते है—मैं खूब समभती हू। लोगो के सामने रिश्ते नाते छुपा लेती हू—भूठ बोलती हू—सौतेला व्यवहार करती हू। (विश्वास के साथ)

पर दादा—इस तरह की बात बिल्कुल अलहदा है—मेरी तो बस एक ही इच्छा है कि जैसे-तैसे घर ठीक राह पर ले आऊ—और मैं करू भी *क्या दादा? मुझे किसी तरह भी क्यू न हो इस घर* की हालत को ठीक करना ही है। अगर यही न कर पाई तो सब कुछ खत्म हो जाएगा। सच कह रही हू दादा। (मन का समझा बुझाकर) दादा पत्र न लिखने से काम न बन पाएगा। पत्र

लिखिए और मुझे दिखाकर रवाना कर दीजिए। मैं जरा आराम करती हू—बात असल मे यह है कि मैं आज बेहद थक गई हू—मतलब ऐसी कोई खास बात नही है—बस यू ही भागा-दौडी के चक्कर की वजह से थक गई हू। दादा सारा वदन वर्रा रहा हो तो कैसा अच्छा लगता है न? (प्लास्टिक के बबुआ से टेबल पर सिर रखकर खेलने लगती है। दादा पल भर उसकी ओर देखने लगते हैं। एक बार बनियान मे रखे कागजात निकालते हैं और फिर अदर रख लेते हैं। केबिन से बाहर आकर अलमारी को खोलकर कार्बन निकाल लाते हैं। कम्मो और बीरू की ओर देख कर केबिन की ओर आ जाते हैं। खत लिखने के लिए बैठ जाते हैं।)

मीनाक्षी (एक ओर प्लास्टिक के बबुआ से खेलते हुए) तन-वदन मे थकान महसूस हो रही है—मन पर बडा बोझ-सा बना रहता है। चारो ओर परेशानी है—अजीब माहौल है। हमारे हाथ तो बस दो ही हैं। चाहे जितनी होशियारी बरतो पर कही न कही गलती हो ही जाती है। और फिर हाथ लगता है सिर्फ गलत हिसाब। पर इन मुश्किलो को अपनी हिम्मत से, मेहनत से मात दे दी जाय तो बडी तसल्ली मिलती है। दादा। अजीब हौसला बध जाता है—ऐसी जिंदगी मे भी एक मजा है—दादा। फिर कुछ भी क्यू न होता रहे। मेरे भाई के उदाहरण सामने हैं—वह मास्टर था पर गरीबी से हमेशा टक्कर लेता रहा। मैं समझती

थी कि इस तरह की जिदगी मे क्या रखा है ? अब मैं उन हालात को अच्छी तरह महसूस कर रही हू—दादा—उन स्थितियो से झगडने मे भी समाधान था। नामुमकिन कामो को करने मे भी एक खास तरह की खुशी हुआ करती है, दादा इस बात को अब मैं महसूस कर रही हू। ऐसी जिदगी का भी एक अर्थ होता है दादा—मुझे तो इस बात से भी तसल्ली है कि मेरे कामो मे घर के सभी लोगो का साथ है। सभी लोग बेहद परेशानी उठा रहे है। बीच बीच मे गुस्साते जरूर है—पर मेरे साथ हरदम बने रहते है। सच कितनी तकदीर वाली हू मैं—दादा—वाकई कितनी सुखी हू मैं—इसी वजह से अकेलापन महसूस नही होता—लगता है—सुख-दुख मे भी हम साथ-साथ हैं। मैं, मेरे पति, नद, देवर, सास ससुर। सभी साथ हैं। दादा खत तो भेजना ही होगा, वे जरूरी है।

(प्लास्टिक के बबुआ से खेलती रहती है। चुपचाप। केबिन के दूसरी ओर कपडे पहन कर जगन्नाथ आता है। एक कुर्सी पर बैठता है। सामने वाले टेबल पर पाव पसार देता है। नई सिगरेट निकालकर मुह मे रखता है। सिगरेट जलाता है।)

जगन्नाथ (टेबल पर रखे बिक्री विभाग की तख्ती को उलट कर एश ट्रे बना लेता है) अभी तक नही आई न कम्मो ? ए ?

(केबिन मे जगन्नाथ की आवाज सुनकर मीनाक्षी हडबडा जाती है। जगन्नाथ आ गया है इस बात को वह अब जान पाई है।)

अच्छा ही है—साली खामखाह की आफत—

(मीनाक्षी गुमसुम बैठी है। जैसे कुछ और भी सुनना चाहती है। दादा खत लिखने मे तल्लीन होते है। पर ध्यान मीनाक्षी की ओर ही है)

मैं क्या कहू—अच्छा साला भडार खोल रखा है—देखते ही साला सिर भन्ना जाता है। कम्मो सच कह रहा हू—इतना गुस्सा आता है कि क्या बताऊ।

(मीनाक्षी खामोश सुन रही है)

मैं पूछता हू किसने कहा था उससे कि घर मे इस तरह तबदीली कर दे—? क्या अधिकार था उसे? कम्मो क्या कह रहा हू मैं? दादा ने कम से कम हमे पदा तो किया था—पर वह कौन होती है? पहनी बनकर यहा आई और दूसरे दादा बन बैठी। मेरा घर बार है हो कहा—कहा है मेरी पत्नी?

(मीनाक्षी केबिन मे अकडकर बैठती है)

कम्मो एक मशीन है हिसाब करने वाली—दिन-रात सिफ हिसाब होते रहते हैं—योजनाए बनती

रहती ह। और वोगस धघे के पत्र व्यवहार—वागस नही तो इसे और क्या कहूँ ? इसे क्या धधा कहा जा सकता है ? फालतू का धधा साला—रात रात जागकर हिसाव करती रहती है—मेरी पत्नी—इस वागस धधे का हिसाव।

(केबिन मे मीनाक्षी से यह सब सुना नही जाता। पर वह वैसी ही बैठी है। प्लास्टिक के ववुग्रा को कसकर पकड लेती हैं।)

मेरे साथ जिनकी शादी हुई थी—उन्हे ग्रव वच्चे हो चुके है ग्रौर मेरी पत्नी है कि हिसाव मे ही लगी हुई है। एक वार कुछ था भी तो सव गडवड हो गया। ग्रव मैं क्या कहू—उसे कौन वच्चे चाहिए थे। कम्मो ग्रव तुम ही वताग्रो ?

(मीनाक्षी निढाल बैठी है)

लेकिन ग्रव हमने साला सब कुछ छोड दिया है—हा, साला सव कुछ गडवड है। तत्व ग्रादि की वातें तो उसे ही मुवारक हो—घूमने दो उन पाजी व्यापारियो के साथ—कम्मो वे साले वाजार में मुझ पर हसते रहते हैं—साले मजाक मनाया करते हैं—

दादा (यहा दादा केविन में ही खडे होकर तोखी ग्रावाज में) वरखुरदार—क्या वक रहे हो ?

(जग्गू हडवडा जाता है। दादा केबिन से तेजी से बाहर जाते ह।)

क्या बक रहे हो ? दिमाग तो ठिकाने है न ? हैं दिमाग तो ठिकाने है न तुम्हारा ? हा कहा, तुम ? जानते हो उस ओर कौन बैठा है। शादीशुदा पत्नी के बारे मे इस तरह की बकवास ? जग्गू ऐसी पत्नी फिर मिलेगी नही समझे।

जगन्नाथ अब तो उसे ही वापस करने की इजाजत मिल जाय बस

दादा उस अच्छी-खासी स्त्री के बारे मे इस तरह की बातें कहते हो ? शिव शिव । अरे तुम्हारे पास हौसला नही है—पर तुम्हारी पत्नी के पास है। उसको जरा तो कदर करो बरखुरदार। अभी उम्र ही क्या है बेचारी की पर देखो कैसे कैसे काम कर रही है।

जगन्नाथ हा दादा—वाकई बहुत बडा काम कर ही है। फिर उसको तस्वीर लगा लीजिए न ? अपने गुरु महाराज के साथ उसकी भी तस्वीर टाग दीजिए। औरत के नाम उसे क्यू मेरे गले मढ रहे है। दादा आदमी बोगम धधा करने के लिए कोई औरत नही चाहता—घर बार बसाने के लिए औरत चाहता है। बच्चे होने के लिए औरत लाता है। अपनी बात मानी जाय इसलिए जरूरत होती है। खुद के लिए शादी की जाती है दादा—खुद के लिए—

दादा आज तो तुम लोगो ने बहू के खिलाफ बोलने की बात ठान ली है—हा, इस घर को खुशहाली तुम लोगो से देखी नही जाती न ?

बीरू अच्छा—(तिलमिला जाता है)

दादा मुह बद रखो बीरू—

कम्मो मुह पर राख डालना ही रह गया है। वह भी भाभी की वजह से—उसकी जिद की वजह से—

दादा क्या कहा पगली ? बेकार की जिद ? क्यू ?

बीरू और क्या दादा ?

दादा अच्छा अब तुम भी यही कहने लगे क्यू ? श्रीराम ने चाद के लिए हठ किया था वह क्या बेकार के लिए ? ए ? उसी से तो आज चाद पर पहुचने की जिद की जा रही है—

जगन्नाथ दादा--आप इस तरह की बात अपने भक्तो को ही सुनाते रहिए—सब साले बेकार की बातें हैं। आपका आश्रम और उसका भडार। आपके वैसे बाबा लोग तो उसके इस तरह के लोग—आखिर फर्क क्या है ? आप भी जरा बता दीजिए ? आप के तमाम गडे और पाक मत्र तो उसके अचार मुरब्बे—सब वाहियात हैं और क्या कहे बताइए मतलब क्या है ? साला हम भी हमेशा मूख ही बनते रहे—वह कहती गई और हम उल्लू की तरह करते रहे—आप ही बताइए दादा ? आप कम से कम पैसे तो लाते थे—हम लोगो की फिक्र तो की जाती थी—वह क्या करती है ? क्या लाती है कम्मो ? क्यू बीरू ? सच कम्मो मैंने घर बार चलाया ही नही। बेकार ही उल्लू बनता रहा। और क्या कहू ? अब नही होगा यह सब—अब गैंग ही अपना घर बार होगा—वही अपनी पत्नी और सब कुछ—

(मीनाक्षी के हाथ से बबुआ गिर पडता है।

बाहर के सभी हडबडा जाते है)

जगनाथ (हडबडाकर) कौन है अदर ? (धीमी आवाज मे) दादा अदर ?

दादा तुम्हारी पत्नी—

(जग्गू सन्न रह जाता है।)

जगन्नाथ (धीमी आवाज मे) दादा कम से कम पहले बता तो दिया होता—

दादा उल्लू के पटठे और यहा आकर क्या चिल्ला रहा हू ? अब मैं क्या तुम्हारे मुह मे कपडा ठूस देता ? ए ?

(जग्गू नवस हो गया है। सिगरेट बुझा देता है। केबिन मे मीनाक्षी जैसे होश मे आ जाती है। नीचे पडे बबुआ को उठाती है। उसे कापते हाथो से सीने से लगा लेती है। फिर टेबल पर रख देती है। हाथ मे अजीब कपकपी है। बडे मुश्किल से अपने आपको सभाल सकती है। खडे रहने की कोशिश करनी है। पर फिर बैठ जाती है। फिर खडे रहने की कोशिश करती है। रामपचायत की तस्वीर के पास खिसकती है। उस तस्वीर को पकड लेती है। कुछ धीरज बधता है।)

मीनाक्षी (केबिन मे अगडाई लेकर) हाय मा—कसी नीद

लग गई थी।

(बाहर दादा को छोडकर सबको जैसे राहत मिलती है। मीनाक्षी अब सुस्त सी बाहर आती है। सब खामोश देखते रहते है।)

मीनाक्षी (खुद को सभालने की कोशिश करती हुई।) कितने बज गए ? कब से बेहोश थी मैं ? नीद लग गई थी। लगता था जैसे अजीब हालत हुई जा रही है। नीद की वजह से ही—

(सब देख रहे है। मीनाक्षी पूरी तौर पर होश मे आते हुए जग्गू से)

आप कब आए ? वसूली करने गए थे ? जहा-जहा बताया था गए थे ? क्या हुआ ? कितनी वसूली हुई ?

(जग्गू गुमसुम बैठा है)

मैं पूछती हू कितनी वसूली हुई ?

जगन्नाथ (हडबडाकर फिर जेब से दस का एक नोट निकालते हुए)बस इत्ते ही मिल मिल पाए हैं। ऊपर से सवा रुपया खच हो गया—

(नोट वैसे ही आगे की ओर किए रहता है)

मीनाक्षी (तनकर सामने आती है और मृदु बन जाती है) दादा यह किसका खाता है ? मुझे तो जरा भी

पता नही है—

जगन्नाथ खाता नही है—दाव है दाव—ताश का खेल—जूआ—वही खेला था—उसी मे इतने मिल पाए हैं। इतने दिनो बाद पैसे दीख रहे है ?

मीनाक्षी (लबी सास लेते हुए) मतलब वसूली हुई ही नही ?

जगन्नाथ नही, मैं गया ही नही। और न अब कभी जाऊगा-गेंग मे ही रहूगा—

मीनाक्षी (लबी सास लेकर) क्या कहा ?

जगन्नाथ वसूली के लिए गया ही न था—

मीनाक्षी मतलब ? (आवाज बदलकर) मतलब अभी भी चास है। वसूली के लिए—(जग्गू की ओर देखकर) फिर ?

(वीरू की ओर देखकर)

भैया जहा जहा मैं बताती हू वहा वहा जाकर वसूली कर लो तुम्हारी फीस के पैसे निकल आएगे—

वीरू मैं नही जाऊ गा।

मीनाक्षी (मिन्नतें करने के अदाज मे) मतलब बाद मे जो जी मे आए करते रहिए—

वीरू नही-नही—नही—मैं कभी न जाऊ गा—मै तो चोरी करने की बात सोच रहा हू। नही तो किसी को फसा लूगा—दादा की तरह—और अपनी फीस भर दूगा—

दादा गधे के बच्चे कुछ शर्म लिहाज है नही ?
वीरू शर्म किस बात की दादा ? मेरी फीस मुझे चाहिए—और आप लोगो मे से कोई भी देने के लिए तैयार नही है। इस बात को मैं अच्छी तरह जानता हू।
मीनाक्षी (समझाइश के स्वर मे) बीरू भैया—
वीरू तुम लोगो मे से किसी की भी इच्छा नही है कि मैं पढ़ू। मैं अच्छी तरह जानता हू।
मीनाक्षी (जैसे राह खोज रही हो) कमला जी आप ही हो आइए (कम्मो चुप है) मामा के यहा से सरकारी कर्ज की बात तय हो जए तो शादी हम कर ही देंगे। फिर तो इतने गहने बनवाए गे। ढेर साड़िया खरीदेंगे।
कमला भाभी बस करो—तुम्हारी मीठी बातो से तो अब उबकाई आने लगी है। तुम्हारी सब की सब बातें झूठी होती है। तुम्हे तो अपना धधा दीखता है। वही तुम्हारे लिए सब कुछ है। और हम सब तो मशीन है—बस हम लोगो से काम लेना अच्छी तरह जानती हो—मशीन बद होते ही दूसरा बटन दबा देती हो—भाभी सच कहती हू—अगर यही होता रहा न तो भाग जाऊ गी एक दिन—
मीनाक्षी (खुद को सायास रोकते हुए) अब किसे कहू—
दादा बहू मुझ से कहो—पर साला मेरा क्या उपयोग होगा—हमारा तो तरीका ही और है। और बची है सिर्फ—

(अदर से जमुना आती है)

जमुना मैं तो साफ बताए देती हू—मेरी तो अब ताकत नही रही।

(धम्म से नीचे बैठ जाती है।)

मीनाक्षी। (जबरन अपने आपको सभालते हुए) कौन सी ताकत ?

जमुना सारी की सारी ताकत ही खत्म हो चुकी है। घर तवाह होते देख रही हू—मौत आती नही और मन मानता नही—अजीब हालत हुई जा रही है। सच बहू तुम क्यू मेरे घर से और बच्चो से खिलवाड कर रही हो। इतने दिनो तक मुह बद किए बैठी रही पर अब साफ साफ बताए दे रही हू—तुम सारे घर को तबाह किए जा रही हो—बहू, सत्यानाश किए जा रही हो—

मीनाक्षी (सारी सहनशीलता समेटते हुए) पर—?

जमुना तुम्हारी जिद—बस उसी को पूरा कर लेना चाहती हो—तभी तुम्हे तसल्ली मिलेगी—पर मैं साफ-साफ बताए देती हू—अब मैं तुम लोगो के किसी काम मे शामिल नही हू—मेरी बहन यही रहती है उसी के यहा में चली जाऊगी—कम से-कम आखो के आगे तो घर को तबाही न हो—

मीनाक्षी (क्या करे समझ नही पाती) मतलब आप सब कोई मेरी मदद नही करेगा ?

दादा के अलावा सब नही करेंगे।

(मीनाक्षी निढाल खडी होती है)

मीनाक्षी पर—पर यह सब तो आपकी भलाई के लिए

ही है—

बीरू भलाई के लिए ?

कमला जितनी भलाई हो गई वही काफी है। अब तो जरा बुराई हो वही अच्छा है।

जगन्नाथ बस अब तो जी ऊब गया इन बातो से—

जमुना जो कुछ था वह क्या बुरा था ?

कमला और क्या—

बीरू भाभी के आने के पहले ही सब कुछ ठीक था—

जगन्नाथ हा तब कम-से-कम बाप के ही बकरे थे हम—

(मीनाक्षी मूढ-सी खडी रहती है। आदमो की दीवार ही जैसे उसके आगे खडी है। इस दीवाल को कैसे तोडा जाय नही समझ पाती)

दादा वह इन लोगो की ओर न देखो—सब के सब साले हरामजादे है। बैठ ठाले खाने वाले है। मैं जानता हू कैसे इन सबको सभाला करता था। साला सिर्फ में अकेला जानता हू। सब अपने ही लोग हैं—कहे किससे ? खर छोडो—जाने दो जिधर जाना चाहें—मैं जो हू तुम्हारे साथ। वह तुम अकेली नही हो—मैं तुम्हारे साथ हू—तुम अपनी जिद शौक से पूरी कर लो।

मीनाक्षी (निराश—हसने की कोशिश करती है) दादा—बिना पावो वाला भागते हुए कभी देखा आपने ? देखा है ? कहिए देखा है ? हमने खुद नही देखा। किसी ने नही देखा—किसी ने कभी

नही देखा—

(बाहर से रमई काका की ग्रावाज—मीनाक्षी—मीनू बेटे ! इसी ग्रावाज से मीनाक्षी मे एकदम उत्साह भर जाता है। दादा—दादा—ग्रा गए—जी मेरा काम कर लाए दादा—ग्रब ग्राप सबकी जरूरतें मैं पूरी करू गी—ग्रब सबको जो चाहे सो मिल सकता है—मैं दूगी—दरवाजे मे रमई काका खडे हैं। तन बदन से थके हुए)

दादा ग्राइए ग्राचार्य जी—

काका (दादा ग्रौर दीगर लोगो को ग्रोर न देखकर) बेटी मीनाक्षी ग्रच्छा हुग्रा जो तुम मिल गईं। सोचता था मिलोगी या नही। खास तुम्हारे लिए ही इतने जल्द आने की कोशिश की बेटी। थोडा पानी लाग्रो बेटी—बेहद प्यास लगी है। ग्रब धूप मे चला नही जाता बेटी—चक्कर सा ग्रा जाता है।

(कुर्सी पर निढाल बैठ जाते हैं—मीनाक्षी पानी का लोटा और गिलास जल्दी से ले ग्राती है। काका तेजी से लोटा खाली कर देते है)

वाह पानी तो हमारे लिए ग्रमृत को तरह होता है। बेटी ग्रब कही तसल्ली हो पाई है।

(कुछ पल आखें मूंदकर बैठे रहते हैं।)

मीनाक्षी (हडबडाकर) मामा जी—?

काका (आखें खोलते है—जैसे जाग गए हो)
क्या बात है बेटी ? अच्छा अच्छा जरूरी बात हो रही है। ऐसा करो—अदर चलो—एक बडी जरूरी बात कहनी है। सिफ तुम्हारे लिए—बडी शुभ बात है बेटी—बडी ही शुभ।

(मीनाक्षी काका को केबिन की ओर खीच ले जाती है।) बाहर बैठी कम्मो अब केबिन के करीब आ जाती है। दादा केबिन से व'' सटाकर खडे हो जाते हैं।)

मीनाक्षी (अत्यत उत्सुकता से)
क्या बात है मामा ? कौन सी शुभ बात है मामा ? जल्दी बताइए—बताइए न ?

काका हा-हा बेटी बताता हू—पर मुझे कहने तो दोगी या नही ? अभी बताता हू—

मीनाक्षी जल्दी मामा—

काका हा—पर मुझे सास तो लेने दोगी ? अब बूढा हो गया हू न—

मीनाक्षी अच्छा लीजिए सास—मैं बुत की तरह खडी रहती हू। (फिर से) अब तो बताइए ?

काका बेटी मजा मिलेगा—बिल्कुल मिलने ही वाला है। आज तय करके ही आ रहा हू। ऊपर ही स ता आ रहा हू बेटी। अब शका के लिए जगह ही नहीं है।

मीनाक्षी (किसी चीज का आधार लेते हुए) पिचहत्तर—

काका क्या बेटी पिचहत्तर क्या ?

मीनाक्षी आश्वासन—आपके लगातार दिए जाने वाले आश्वासन काका—आश्वासनो के खाते दिमाग मे तैयार हो रह है—

काका नही बेटी—आश्वासन नही—इस बार तो जैसे कहते हैं न फ्राम द हार्सेस माउथ—ठीक उसी तरह—अब कोई बात बची ही नही है—

मीनाक्षी काका—उस घोडे के पाव थे या नही ? या कि कि वह बिना पाव वाला ही था ?

काका बिल्कुल दो पावो वाला था—उपमत्री—पहले तो बात ही सुनने के लिए तैयार न था। वह अपने ही दौरे और भाषण मे मशगूल था। उसे कमेटी की मीटिंग मे सीधे हाथ पकडकर ही पुछवा लिया मैंने—सुनो मुझे भी तो कुछ समय चाहिए—एक अच्छा सा काम है। बेकार की बाते नही साफ-साफ बता दो—अगर न करने वाले हो तो किसी और को देख लूगा—मुझे क्या जैसे तुम वैसे दूसरे—आखिर उसने अपाइटमेट दे दी। आज की थी —आज यही से तो गया था—दो घटे से उसके केबिन के पास बैठा हुआ था। आखिर मुलाकात हो ही गई। सब कुछ उसके गले उतार दिया—बता दिया कि यह काम भले ही छोटा लगता हो पर सामाजिक दृष्टि से कम महत्व का नही है। फिर तो उसने मेरी बात मान ही ली—डिपाटमेट की ओर से कागजात जल्द मगा लेने वाला है। तुम इस तरह क्यू देख रही हो बेटी ? अरे भाई सरकारी काम इतने जल्द नही हुआ

करते। प्रापर चेनल होता है बेटी—वह मत्री भले ही हो पर कानून के खिलाफ तो नही जा सकता न ? कागजो के आते ही दस्तरत कर देगा बेटी अब तो वह सब कुछ समझ गया है। बस कुछ वक्त की और बात है। उसके दस्तख्त होते ही कागज डिपाटमेट को चले जाएगे और फिर पूछताछ शुरु हो जाएगी।

मीनाक्षी बिना पाव वाला घोडा किम तरह भागता है इसी बात की पूछताछ न मामा जी ?

काका नही बेटी तुम्हारे भडार की पूछताछ—

मीनाक्षी मामा सब बेकार है— (हसने लगती है—फिर एकदम सभल जाती है। (मामा उ हू—कुछ नही मामा—कुछ भी नही मामा—पर मामा पूछताछ हो जाने पर क्या हागा मामा ? क्या हागा ?

काका फिर बेटी ठीक तरह से रिपोट चली जाएगी—इस बात मे दस पद्रह रोज लगेंगे—रिपोट के बाद तो काम नाममात्र का ही रह जाता है। पर उसमे भी सरकारी नियम होते हैं बेटी—हा कम से कम एकाध महीना तो लग ही जाएगा। बस फिर मामला वित्त मत्रालय चला जाएगा—वित्त मत्रालय की मजूरी तो लगती ही है बेटी—

मीनाक्षी उठिए मामा—

काका बेटी ?

मीनाक्षी उठिए मामा—अब आप जाइए मामा—

काका पर बेटी मीनाक्षी—

मीनाक्षी बस अब उस चक्रव्यूह मे ज्यादा देर फसे रहने की जरूरत नही है। उसमे तो मैं बुरी तरह उलझ जाऊंगी—मामा मेरा घोडा मरने वाला है। मरने वाला है—

काका क्या कह रही हो बेटी ?

मीनाक्षी मेरा घोडा मरने वाला है—मरने ही वाला है—

काका पर मै अपनी ओर से तो जी-जान से कोशिश कर रहा हू बेटी—

मीनाक्षी मामा अब कोई जरूरत नही है—मामा अब रहने भी दो—

काका जिंदगी का सब कुछ—सारा त्याग, सारी प्रतिष्ठा, सारी सेवा, मैंने सब कुछ लगा दिया है बेटी—

मीनाक्षी मामा सब बकवास है—एकदम बकवास—

(पागलो की तरह हसने लगती है। केबिन के बाहर बैठा जगन्नाथ केबिन की ओर बढता है—दादा उसे हाथ के इशारे से रोकते है।)

मीनाक्षी (अपने को सभालने की कोशिश करते हुए) कोई जरूरत नही मामा—मामा अब आप जाइए—नही तो आप भी पागल हो जाएगे—मामा मैं कहती हू अब आप चले जाइए—अब मजे स चले जाइए—कुछ भी न हो तब आइए—पर अभी तो चले ही जाइए—(कडी आवाज मे) मामा आप

जाइए—मुझे अब कर्जा नही चाहिए। आप चले जाइए मामा—

काका (फिर भी खडे हा रहते है) मीना बेटी इस तरह दिलासा क्यू छोड रही हो ? बस कुछ ही महीने तो रह गए है अब—

मीनाक्षी (कडी ग्रावाज मे) मामा ग्राप चले जाइए—

(ग्रब काका 'धीरज रखो बेटी, ग्रपने को ठीक रखने की कोशिश करो' कहते कहते केबिन के बाहर आ जाते हैं। उन पर सब की ठडी निगाह पडती है। काका परेशान से बाहर चले जाते है। फिर सबका ध्यान केबिन की ग्रोर लगता है। केबिन मे मीनाक्षी रामपचायत वाली तस्वीर हाथ से पकडे हुए है। फिर तस्वीर अलग हटाती है। पल्लू से मुह पोछती है। खर-खर मुह पोछकर आखो पर पल्लू फेरती है। दो-तीन बार ग्रगडाई लेती है। ग्रौर कधे झुकाए केबिन के बाहर जाती है। सबकी ठडी निगाह अब उसकी ओर हैं।)

मीनाक्षी (सबकी ओर देखकर कोमल ग्रावाज मे) मैं हार गई—मुझे माफ कीजिए—मैंने आप सबका बहुत बहुत नुकसान किया है—मैं बहुत खराब हू—

(कधे झुकाए ही रसोई की ग्रोर जाने

लगती है।)

दादा बहू कहा जा रही हो ? (मीनाक्षी रुक जाती है।) अपनी बातो की परख तो हो जानी चाहिए—वह बेहद जरूरी है। कोई भी प्रयोग अधूरा छोडना ठीक नही बहू—उसे पूरा कर ही छोडना चाहिए—तुम अपना तौर तरीका कैसे छोड सकती हो बहू ? साला उसे कौन छोड सकता है ? अब उस बात को यू ही छोड देना ठीक नही है। बहू—इस तरह काम नही चल सकता—

मीनाक्षी (पीठ किए ही जैसे तैसे) दादा—(जोर से फफक-कर रोने लगती है सारा बदन हिल जाता है। दीन मुद्रा)

दादा बहू रोती क्यू हो ? रोओ मत—रोकर होगा भी क्या—जिद तो आदमी मे होनी ही चाहिए।

(मीनाक्षी की इस तरह की हालत से दादा को छोडकर सभी विचलित हो जाते हैं। जग्गू ज्यादा परेशान हो जाता है। कुछ आगे की ओर भी बढता है। पर ठहर जाता है। गर्दन दूसरी ओर फेर लेता है। पीठ किए मीनाक्षी रोना बद कर देती है। पल्लू से नाक मुह पोछती है। एक बार सबकी ओर देख लेती है। सब अजीब हालत मे हैं।)

दादा बस हो गया बहू—कुछ तो तसल्ली हुई ? रोना साला वही बाकी था। बस वह भी जरूरी ही

होता है। और क्या कहा जाय ? (एक ओर हट-कर बनियान मे से 'वे' कागज बाहर निकालते हैं) मतलब बहू अब अगली बात सोच लेनी चाहिए— उसके बगैर काम नही चलेगा—सब कुछ भूल भालकर अब अगली बातें सोचनी चाहिए साला करना ही पडेगा—

(मीनाक्षी निढाल सी केबिन के बाहर वाली कुर्सी पर बैठ जाती है। सिर टबल पर रखती है।)

बहू तुम्हारे पास कोई नई योजना है ? कुछ नई बाते सोच सकती हो तुम ? इस हालत मे भी इस प्रयोग को आगे बढाने की बात है तुम्हारे दिमाग मे ? कुछ तो होगा ही—
(मीनाक्षी वैसी ही) बहू कुछ तो कहो—हम सब कर लेगे—योजना बनाने मे क्या देर लगने वाली है। (एक ओर हाथ वाले कागज धीरे धीरे घुमाते है)
है कोई ? (मीनाक्षी चुप है। बहू मतलब तुम्हारे पास कुछ है ही नही ? (मीनाक्षी अभी चुप ही ह) मतलब तुम्हारे पास कुछ है ही नही—(दादा के चेहरे पर सतोष झलकने लगता ह) कम से-कम दीखता तो नही हो है ! पर मैंने एक योजना तैयार कर लो है।
क्या ? (कागज खोलते है) मतलब हमारे काम की—हमारे तौर-तरीके वाली—आदमी अपने

तौर तरीके छोड थोडे ही सकता है ? योजना भी ऐसी कि यह देने वाली (हाथ स पैसे को बात करते है।)
उस ही का तो महत्व है दुनिया मे—कोई भी काम साला इस एम विटामिन के बिना होता नही। योजना की बाते बडी महत्वपूण हैं—जो माल अपने पास है—उसी को पापुलर कपनियो के लेबिल लगाकर बेचना- क्या समझी ? सिफ लेवल लगाने का ही खर्चा होगा—देखते देखते सारा माल खप जाएगा—वैसे मैंने कई एजेटो से बात भी कर ली है। उन्हे मेरी योजना बेहद पसद ग्राई है। कइया ने तो ग्राज सुवह ग्राक्र (बनियान से नोटो का बडल निकालते है) यह एडवास तक दे दिया है। बोला दादा साहब *शुभस्य शीघ्रम—रखिए अपने पास। मैं तो मना* किए जा रहा था। पर वह मानता ही न था। जेब मे ही डाल दिए साले ने—(नोटो के बडलो को देखकर कम्मो, बीरू जमुना की मुद्रा खिल जाती है। बाकी लोग भी तैयार ही हैं। बस अब शुरुग्रात भर करना है। योजना की अगली तहो मे ग्रौर भी शानदार बाते है—मतलब अपने इस माल के साथ साथ बडी बडी पेटेंट दवाइया, इजेक्शस, शरबत ग्रौर क्या नाम जो वह ग्रपना माल डिब्बे मे रखते ह वह दूध—कम कीमत मे ग्रच्छा माल कोशिश करें तो मुनाफा तिगुना हो सकता है। सच कहता हू बहू एकदम सच्चा धधा—किसी के मु ह की ग्रोर देखने को

तब जरूरत ही न पडेगी—

(मीनाक्षी कुर्सी पर सिर रखे बच्चे जसी बैठी है।)

बहू मैं इस बारे मे तुम्हारी राय जानना चाहता हू—साफ साफ बोलने मे अब कोई बात ही नही है। (मीनाक्षी अभी खामोश है) बहू अभी तक तो तुम बिल्कुल ठीक थी—पर अब—तुम्हारी मदद मुझे चाहिए—मेरे तौर तरीके से—बहू तुम्हे मेरी योजना मान्य है न ? इस काम के लिए जो घर मैंने तुम्हारे कब्जे मे दिया था उसे मैं वापस अपने कब्जे मे लेता हू —क्या करू अब कोई और चारा ही नही है—(कुछ ठहरकर) बहू अब घर मेरे हिसाब से चलेगा—मतलब जो भी बाते तय होगी उन्हें तुम्ह मानना ही होगा--और सिर्फ मानना ही न होगा बल्कि जो काम मैं बताऊ वह करना भी होगा—बिना आना कानी किए—बेहद उत्साह से—अगुआ भी बनना होगा—मतलब मौका आने पर ही—(ठहरकर देखते है—मीनाक्षी आखें बद किए है) बहू सुन रही हो न तुम ?

(चुपचाप मीनाक्षी की हालत देखते रहते ह—सभी देख रहे है)

दादा (उस स्थिति से खुद को निकालते हुए) तुम लोग इस तरह देख क्या रहे हो ? उसे तो सारी बातो से ही नफरत हो गई है। जग्गू उसे आराम कर

लेने दो—

(जगन्नाथ अब कुछ आगे आता है—'मीनू आती हो न' कहते हुए मीनाक्षी को उठाने की कोशिश करता है—उसकी गदन जग्गू के कधे पर रहती है। आखे बद है। दोनो अपने कमरे की ओर जाने लगते हैं।)

मीनाक्षी (जाते-जाते बद आखो से ही) ए ? कहा जाना है ? कहा चलू मैं ? आऊगी—सुनू गी—अब मैं मर चुकी हू—मैं मर (दोनो कमरे की ओर निकल जाते हैं)

दादा (खुद को पूरी तौर पर सभालकर कुर्सी पर पालथी मारकर बैठ जाते हैं। चेहरा प्रथम अक की तरहही प्रसन्न हो जाता है। (खुशी के स्वर मे) बीरू—गधे के बच्चे ये ले इधर आओ—(नोटो के बडल से कुछ नोट निकालकर उसके हाथ मे थमाते हुए (यह रही तुम्हारी फीस—इसे ले जा कर उस मास्टर के मुह मे ठूस दो—और ज्यादा बकबक करेगा न तो जबडा तोड दूगा—जाओ। कम्मो चलो इधर—सामने आओ—(वह सामने आ खडी होती है।) ये लो तुम्हारी साडियो और सिनेमा के लिए—याद रखना बकवास की तो—आदमी के सस्कार अच्छे होने चाहिए—साला उसी का तो महत्व है—सस्कार—अजी (जमुना से) आइए इधर आइए—(वे आ जाती हैं।) रखो इन्हें। कुछ नोट उन्हें दे देते हैं। घर की भी

व्यवस्था करनी हो तो करो—और भी बाद मे आने वाले हैं—भगवान की कृपा से अब कोई कमी न होगी। पर बेकार की बकबक यहा नही चल पाएगी। हा, बताए देता हू—तुम्हारा सब काम चूल्हे के पास समझी ? जाओ, जाओ अदर—साले घर मे तौर तरीके तो रह ही नही गए हैं। (पास के कमरे से जग्गू आ खडा होता है) आओ जग्गू इधर आ खडे हो। (वह सामने आ खडा होता है) ये तुम रखो—(नोट आगे किए है) और बहू के लिए अच्छी सी चार साडिया ले आओ—समझे ? और किसी लेडी डाक्टर को भी दिखा दो उसे—तबियत कुछ खराब हो गई है उसकी—जग्गू तुम कुछ भी कहो चीज हजारो मे एक हो है तुम्हारो बीवी—कित्तो जिद की थी उसने—कुछ कसर न छोडी थी। हिम्मत से झगडती रही। वह—मैं जो देख रहा था—साली यह दुनिया बडी वाहियात है। नादान—बेसमझ, दगाबाज—अच्छी बातें टिकी रहें तो कसम अच्छी बातें तो किसी को पसद ही नही हैं—यहा तो बस हम जैसे चाहिए—जय शकर भोलेनाथ—हू—

(जग्गू आगे बढकर नीची गर्दन किए नोट ले लेता है। और एक आवेग के साथ उनके मुह पर फेंक देता है। दादा हडबडा जाते है। जग्गू डर सा जाता है। वह भी हडबडा जाता है। कुछ पीछे हटकर बदन सिमटाकर खडा हो जाता है। दादा उसकी ओर जलती

निगाहो से देखते है। जमीन पर बिखरे नोटो को उठाते है। दीन से जग्ग के करीब आते हैं। नोट फिर से उसके हाथो मे थमा देते है।)

लो यह काम तुम्हारा नही है।

(धीरे धीरे रसोई की ओर निकल जाते है। मच पर सिफ जग्गू खडा रहता है। हाथ मे नोट हैं।)

(धीरे धीरे परदा गिरता है।)

●●●